पाप और प्रकाश

: मूल :

लियो टाल्सटॉय

: रूपान्तर :

जैनेन्द्र कुमार

पूर्वोदय प्रकाशन

७, दरियागंज, दिल्ली।

पूर्वोदय प्रकाशन
७ दरियागंज, दिल्ली

मूल्य : दो रुपये आठ आने

गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दिल्ली में मुद्रित और पूर्वोदय प्रकाशन
दिल्ली की ओर से दिलीपकुमार द्वारा प्रकाशित ।

पात्र-परिचय

जोधराम	:	एक सामान्य किसान, अवस्था लगभग बयालीस वर्ष, दूसरी बार विवाहित और अस्वस्थ।
सोना	:	जोधराज की पत्नी, अवस्था बत्तीस वर्ष, कपड़ों की शौक़ीन।
मेमा	:	जोधराज की पहली पत्नी से हुई लड़की, अवस्था सोलह साल, ऊँचा सुनती है, अविकसित मस्तिष्क।
नन्दी	:	जोधराज की दूसरी पत्नी से हुई लड़की, अवस्था दस साल।
चन्दन	:	उनका नौकर, अवस्था पच्चीस साल, कपड़ों का शौक़ीन।
रिसाल	:	चन्दन का पिता, अवस्था पचास वर्ष, सीधा सादा, धर्म-भीरु किसान।
कुलसो	:	रिसाल की पत्नी और चन्दन की माँ, अवस्था पचास वर्ष।
रजनी	:	एक अनाथ बालिका, अवस्था बाईस वर्ष।
देवकी	:	जोधराज की बहन।
मंगल	:	एक बूढ़ा मजदूर, जो पहले सिपाही था।
किसन	:	रजनी का पति।
दूल्हा	:	मेमा का होने वाला पति।

ठाकुर : दूल्हे का बाप।

एक पड़ोसी

पहली लड़की

दूसरी लड़की

पुलिस अफसर

कोचवान

पटवारी

पुरोहित

लम्बरदार

दर्शक, औरतें, लड़कियाँ और भीड़ जो शादी को देखने आती है।

अंक १

[जाड़े का मौसम। एक बड़ा गाँव। जोधराज का खुला मकान, जोधू तख्त पर बैठा घोड़े का हलका सम्हाल रहा है। सोना और मेमा बैठी गीत गुनगुनाती कात रही हैं।]

जोधराम—(खिड़की से बाहर देखकर) यह बैल फिर खुला! ध्यान न किया किसी ने तो जाके फिर अटकेगा बछेरे से। चन्दन, ओ चन्दन! क्या बहरा हो गया है? (आहट लेता है; स्त्रियों से) बन्द करो यह चरखा। उसके मारे कुछ सुन ही नहीं पड़ता।

चन्दन—(बाहर से) क्या है?

जोधराम—बैलों को अन्दर करो।

चन्दन—तो अच्छा, हो जायगा।

जोधराम—(सिर हिलाकर) हो जायगा! बस, ये नौकर! मैं ठीक हो जाऊँ तो एक को न रखूँ। सिवा झंझट बढ़ाने के कुछ उनसे नहीं होता। (उठता है, और फिर बैठ जाता है) चन्दन, ओ···तो मैं ही चिल्लाऊँ? अरी सुनों, जाओ–तुममें से एक जाओ। तू जा मेमा, जानवर अन्दर हाँक आ।

मेमा—क्या बैल?

जोधराम—और नहीं तो सिर?

मेमा—अच्छा। (जाती है)

जोधराम—उँह, यह तो आवारा है, ढींग कहीं का।···न काम का न धाम का। बस चले तो हाथ न हिलाए।

सोना—तुम आप बड़े मुस्तैद हो न ! सब दिन बस उसारे में पड़े रहना। बहुत हुआ तखत पे आ बैठे। बस तुम तो दूसरों से काम लेना जानते हो। और लायकी तो—

जोधराम—अरे, काम न लें तो सिर पे छत न मिले, जो-कुछ समझती हो। ओह, क्या लोग हैं !

सोना—एक पे तो काम पे काम का बोझ लादते जाओ और खुद कुछ करके दो नहीं। उल्टे झींका करो। पड़े-पड़े दूसरे पे हुक्म चढ़ाते रहने में कुछ लगता है ?

जोधराम—(आह भरकर) ओह, यह बीमारी ससुरी न होती तो—उसे एक दिन और न रखता, एक दिन। अपनी कसम।

मेमा—(नेपथ्य से) दुर—होः—होः—ही ह !

[बछेरा रंभाता है, बैलों के खुरों की आवाज होती है और बाँस के फाटक के खुलने-भिड़ने की आहट सुन पड़ती है।]

जोधराम—बस, एक जबान चलाना उसे आता है। जी करता है जवाब दे दूँ।

सोना—(चिढ़ निकालकर) जवाब दे दूँ ! दे देंगे जवाब। पहले अपने को तो सम्हालो, तब ज्यादे बतियाना।

मेमा—(आकर) क्या बताऊँ, जाने कैसे उसे बाड़े में हाँक के आ रही हूँ। यह मखना तो हमेशा······

जोधराम—और चन्दन कहाँ था ?

मेमा—कौन कहाँ था ? चन्दन ? क्यों, वह तो बाहर सड़क पे खड़ा ताकता था।

जोधराम—बाहर खड़ा ? बाहर खड़ा क्या करता था ?

मेमा—बाहर खड़ा क्या करता था ? खड़ा मुँह चलाता था।

जोधराम—बस इससे तो समझ की बात मुश्किल है। अरी, तो वहाँ

खड़ा मुँह किससे चला रहा था ?

मेमा—(सुन नहीं पाती) एँ—क्या ?

[जोधराम हाथ से मानो उसे परे हटने को कहता है। वह बैठकर कातने लगती है।]

नन्दी—(माँ के पास दौड़ी आकर) माँ री, चन्दन के बापू-महतारी आए हैं। सच माँ, चन्दन को लेने आए हैं।

सोना—चल झूठी।

नन्दी—हाँ, हाँ, शरत जो नहीं आए, (हँसती है) मैं चली जाती थी। मिला चन्दन। बोला, नन्दी रानी, राजी रहो। देखना हमारे ब्याह पे आओगी न ? हम तो अब चले जा रहे हैं। कह के चन्दन हँसने लगा। सच माँ।

सोना—(पति से) देखा न ! बड़ी परवाह पड़ी उसे हमारी। लो, वह आप ही हमें छोड़े जा रहा है। जवाब देंगे—आप जवाब देंगे !

जोधराम—जाय तो जाय। जैसे हमें दूसरा तो कोई मिलेगा ही नहीं।

सोना—और रुपया जो हमारा उस पर चढ़ा हुआ है, सो ? (नन्दी दरवाजे पर कुछ देर सुनती है, फिर चली जाती है)

जोधराम—(भवें सिकोड़कर) गरमी तक काम करके वह सब रिन उतार जा सकता है।

सोना—हाँ हाँ, वह चला जाय तो तुम्हें खुशी हो, क्यों ? सोचो, चलो एक पेट कम हुआ। बस मैं हूँ कि सारे जाड़े टट्टू की तरह काम करने को रह जाऊँगी। वह तुम्हारी लाड़ली जी भी काम करने की कोई बहुत शौकीन नहीं है। और तुम्हें तो उसारे में पड़े रहने से कब फ़ुर्सत है। मैं सब जानती हूँ।

जोधराम—अरे, बात न चीत ! कुछ हो भी कि पहले से सिर खपाने लगी ?

सोना—घर सारा डाँगरों से भर लिया है। वह गाय भी नहीं बेची। इतनी सारी भेड़ें जमा कर छोड़ी हैं। उनके दाना-पानी में ही एक आदमी का तो पूरा बखत चाहिए। और आप आदमी को जवाब दिये दे रहे हैं। पर मैं भी सूधे कहे देती हूँ कि मर्द के बूते का काम मेरा नहीं है। मैं भी तुम्हारी तरह उसारे में जाके पड़ रहा करूँगी, बिगड़े-तो-बिगड़े। तुम जानो और तुम्हारा काम—

जोधराम—(मेमा से) जा ज़रा उनके दाने-पानी की खबर ले तो। यह हो गया।

मेमा—क्या—दाना पानी ? अच्छा।

[उठती है और एक रस्सी लेती है।]

सोना—मैं नहीं काम करके रखने की। जाओ, और खुद काम देखो! बहुतेरा भुगता। अब मैं वह नहीं हूँ।

जोधराम—बस, बस, झींक काहे को रही है। नाहक बात बे बात।

सोना—तुम तो हो छूँछ, टेढ़े न सीधे। न काम के न आराम के। पेट भर लिया और पड़ रहे। बस इसी मतलब के हो। हाँ-तो, सूअर की तरह।

जोधराम—(थूकता और कन्धे पर दोहर सम्हालता है) ओह, बचाए कलहन से। जाऊँ देखूँ क्या हाल है ?

सोना—(जाते की पीठ पर) मुआ नास जाय कहीं का !

मेमा—उन्हें कोस क्यों रही हो ?

सोना—बन्द रख तू अपनी कतरनी, बदकार।

मेमा—(दरवाजे की ओर बढ़कर) जानती हूँ क्यों कोस रही हो। बदकार होगी तुम। तू है कुतिया, कुतिया। मैं कोई तुझसे डरती हूँ ?

सोना—क्या कहा, क्या ? (उछलकर उठती है और मारने के लिए चारों तरफ कुछ खोजती है) ठहरी तो रह, अभी जो तेरी मरम्मत न की।

मेमा—(दरवाजा खोलते हुए) कुतिया, चुड़ैल। चुड़ैल, कुतिया। कुतिया चुड़ैल। (भाग जाती है।)

सोना—(सोच में पड़कर) 'मेरे ब्याह पर आओगी न !'—'य' सुनती क्या हूँ ? मामला क्या है ! ब्याह ! हुशियार, चन्दन ! जो कहीं यह तुम्हारे जी में है···तो—मैं फिर सब···नहीं, मैं उसके बिना नहीं रह सकती। मैं न जाने दूँगी।

चन्दन—(प्रवेश करता और चारों तरफ चौकन्ना देखता है। सोना को अकेली देख आगे बढ़ता है। दबी आवाज़ में) अजब मुसीबत में जान है। समझ में नहीं आता, क्या हो। वह मेरा बाप मुझे ले जाना चाहता है। कहता है मैं घर चलूँ, सीधी तरह ब्याह कर लूँ, और वहीं बस रहूँ।

सोना—तो जाओ, कर लो न ब्याह ! मुझसे क्या कहने आते हो !

चन्दन—यह बात है ! लो तुम तो तुनक चलीं। इधर मैं तो सोच रहा हूँ कि कैसे बला सिर से टालूँ, उधर आपका पारा चढ़ा है। आप भी कहती हैं जाऊँ, शादी कर लूँ। अजी मामला क्या है ! (आँख मारकर) मुझे भूल गईं ?

सोना—हाँ, जाओ और करो ब्याह। मुझे मतलब !

चन्दन—अजी ऐसी चढ़ी क्यों हो ? और लो, यह तो पीठ पे हाथ नहीं रखने देतीं। अजी बात क्या है !

सोना—बात ? बात यह कि तुम मुझे धोखा देना चाहते हो। ऐसा है—तो समझ लो मैं भी तुम्हें नहीं चाहती। अब सुन लिया न !

चन्दन—ओ मेरी रानी, क्या तुम समझती हो मैं तुम्हें भूल जाऊँगा ? जान रहते तो नहीं। मैं दगा दूँगा ? हरगिज नहीं। मर्द की एक बात होती है। मैं सोच रहा था कि मान लो कि वह मुझे ले ही गए और शादी कर दी, तो भी वापस तुम्हारे ही पास लौट आऊँगा। एक यही है कि कहीं वहीं

घर पर तो रहने को लाचार न करें।

सोना—शादी होने पे तो तुम्हें बड़ी जरूरत रह गई मेरी !

चन्दन—अरे, तो तुम बिगड़ती हो। भला बाप की मरजी के खिलाफ चला भी कैसे जायगा ?

सोना—हाँ, क्यों चला जायगा ! सारा कसूर बाप के सिर मढ़ दो। पर तुम जानते हो सब करतूत तुम्हारी है। उस कम्बख्त रजनी से मुद्दत से सांठगाँठ चल रही है जो। उसी ने तुम्हें ब्याह के लिए चढ़ाया है। उस दिन वह यहाँ बेकाम तो नहीं आई थी न !

चन्दन—रजनी ! सो क्या ? वह मेरी कौन होती है ? बड़ी उसकी मुझे फिकर होने चली !···ऊँह, बहुतेरे हैं उसके आसपास मँडराने को।

सोना—तो फिर तुम्हारे बाप यहाँ क्यों आए। जो तुमने ही न कहा हो। ओ, तुमने मुझसे कपट किया। मुझे कहीं का नहीं रक्खा (रोती है।)

चन्दन—तुम भगवान् में विश्वास रखती हो या नहीं ? कहता हूँ, मुझे रत्ती पता नहीं था। मुझे कुछ नहीं मालूम। मुझे सपना तक नहीं। सच कहता हूँ, सब उस मेरे बूढ़े बाप के सिर का वहम है।

सोना—तुम खुद न चाहो तो कौन भला जबरदस्ती कर सकता है ? गधे की तरह कोई तुम्हें हाँक तो नहीं सकता न।

चन्दन—हाँ, पर बाप की मरजी के खिलाफ चलना मुश्किल है। पर कहता तो हूँ मेरी मरजी नहीं है।

सोना—तो मत झुको, और बस हो गया।

चन्दन—झुकने की बात कहती हो तो एक था हमारे गाँव का। उसने जिद बाँध ली। मालूम है, क्या हुआ ? गाँव के चौधरी ने उसे ऐसा पिटवाया, ऐसा पिटवाया···जिद का यह फल हो सकता है, सुना ! सो मुझे पिटने की चाह तो है नहीं। कहते हैं कि फिर आदमी की ऐसी ख्वारी···

सोना—बस चुप करो ! बकवास छोड़ो। सुनो चन्दन, जो तुमने रजनी

से ब्याह किया तो मैं नहीं जानती मैं अपना क्या कर डालूँगी—मैं अपने पै हाथ डाल सकती हूँ। मैंने अधरम में पैर रक्खा। मैंने पाप कमाया। लेकिन अब मुड़ नहीं सकती। तुम चले जाओगे तो मैं······

चन्दन—क्यों चला जाऊँगा? जाना चाहता तो कभी का न जा सकता था? अर्से की बात है कि रामचन्द भगत मुझे अपने यहाँ सईस की जगह देते थे। क्या मौज की जिन्दगी रहती! लेकिन मैं नहीं गया। क्योंकि—मेरे अभी दिन हैं, जवानी है, दो को पसन्द भी आ सकता हूँ। हाँ जो अब तुम मुझे प्यार न करती हो तो बात दूसरी है।

सोना—चन्दन, यह याद रखना अपनी बात। मेरे बूढ़े की तो कुछ दिनों में चलाचली है। तब अपना किया हम ओट भी सकते हैं। ब्याह रचा लोगे तो सब वाजबी हो जायगा! तब तुम्हीं यहाँ के मालिक होगे।

चन्दन—आगे की आस से क्या फायदा! मुझे क्या परवाह। काम मैं मुस्तैदी से करता हूँ कि वह मेरा अपना ही है। मालिक मुझे चाहता है। उसकी बीवी मुझे चाहती है। जो और जनी भी मेरे पीछे लगती हैं, तो कसम की बात है, यह भी मेरा कसूर नहीं है!

सोना—और तुम मुझे प्यार करोगे—

चन्दन—(**आलिंगन में लेकर**) ओ, तुम तो हमेशा मेरे दिल में हो रानी।

[**कुसलो आती है और देखकर अनदेखी करती और मुँह-ही-मुँह में शिव-शिव का जाप करती है। चन्दन और सोना अलग हो जाते हैं।**]

कुसलो—जो दीखा मैंने नहीं देखा। सुना मैंने नहीं सुना। कामिनी से खेल—ऊँह, चलता ही है। उमर में सब हँसते-बोलते हैं। जवानी में खेला न खाया तो क्या किया। लेकिन बीरन, बाहर मालिक तुम्हें बुला रहे हैं।

चन्दन—मैं कुल्हाड़ी लेने आया था।

कुसलो—समझी, बीरन समझी। वैसी कुल्हाड़ी कामिनी के पास ही

मिलती है।

चन्दन—(**कुल्हाड़ी नीचे से उठाते हुए**) माँ, तुम लोग मेरे ब्याह की सोच रही हो, यह सच है ? मेरे जान तो वह बिलकुल जरूरी नहीं है। मेरी मरजी भी नहीं है।

कुसलो—हाँ, बीरन, ब्याह क्यों ! चल रहा सो ठीक है। मेरे क्या आँख नहीं है। पर सब जड़ तुम्हारा वह बूढ़ा बाप है। अच्छे भैया, अब तुम जाओ। तुम्हारे पीछे हम दोनों सब ठीक कर लेंगे।

चन्दन—अजब फेर है। एक घड़ी ब्याह को कहते हैं। दूसरी घड़ी नहीं। बात का कुछ पता ही नहीं मिलता। (जाता है)

कुसलो—नहीं, मेरी सोना बहू, ब्याह काहे का ? सब बेबात की बात। असल में यह बूढ़े की ही मत है। पर बिन दुल्हे कोई ब्याह होता है ? घर में ही सब हो तो बाहर कोई क्यों भटके ! है कि नहीं ? खाने को पास है, और बिखेरने को भी। तो भागा भागी क्यों ? (**आँख मारती है**) क्या मैं हवा नहीं पहचानती ?

सोना—माँ जी, अब तुम से परदा क्या है ? तुम सब जानती हो मैं पापन हूँ। तुम्हारे बेटे से मेरा दिल लगा है ?

कुसलो—यह और लो। भली बहू, तुम समझती हो माँ कुसलो जानती नहीं थी। मेरी सोना बहू, कुसलो ने दिन देखे हैं। जग छाना भरमा है। एक बात कहती हूँ रानी बहू, माँ कुसलो पत्थर की दीवार के पार देख सकती है, ईंट की दीवार की क्या बिसात ! मैं क्या जानती नहीं कि जवान बीवियों को नींद की दवा चाहिए ! सो मैं साथ ही लाई हूँ। (**रूमाल की गाँठ खोलती और कागज की पुड़िया निकालती है**) पर जरूरत जितना मैं देखती हूँ, आगे न देखती हूँ, न जानती हूँ। सुना बहू, माँ कुसलो ने भी जवानी देखी है। बूढ़े मरद के साथ दिन निकालने को दो-एक बात जान रखना अच्छा है। सत्तर और सात तरह के उपाव मैं जानती हूँ। तुम्हारा

तो खोखला, नकाम, मट्टी हो गया है। उस जैसे के साथ कोई रहे तो
राम-राम, तिरसूल की नोक से भी मृतक काया में से बूँद लहू न
बसन्त आते तक वह सुरग न पहुँचे तो मुझे चाहे जो नाम धराना।
कोई तो घर में चाहिए। सो मेरा बेटा ताबेदार है। क्या उसमें खोटाई
कोई होगा वैसा जैसा वह है ? तब एक अच्छी-भली लगी जगह से उसे
ले जाऊँ, तुम्हीं बताओ उसमें क्या फायदा है ? ऐसी क्या मैं नादान
कोई अपने बेटे की मैं दुश्मन हूँ ?

सोना—बस, बस ! जो किसी तरह वह रह जाय।

कुसलो—और वह रहेगा ही, कहीं नहीं जायगा, मेरी बहू रानी। सुनी
पर कान न दो। तुम तो मेरे बूढ़े को जानती हो। अकल उनकी चरने
है। कोई बात सिर में ले लेते हैं तो वह कील की तरह वहाँ गड़ जाती
फिर हथोड़े की चोट से हटाओ तो भी वहाँ से वह हटती हिलती ही
।

सोना—तो बात शुरू कैसे हुई ?

कुसलो—शुरू ? रानी बहू, तुम तो जानती हो। लड़का मेरा ऐसा है
औरतें यों ही रीझ जाती है। तिस पर जवान, खूबसूरत। अब क्या कहूँ,
यह बात मेरे कहने की है ! हाँ फिर, तुम तो जानती हो, वह रेलवाई
करता था। वहाँ थी एक लावारस लड़की। खाना-वाना बना दिया
थी। सो वही पीछे लग गई।

सोना—रजनी ?

कुसलो—हाँ, आग पड़े उस नाम पे। अब कुछ हुआ कि नहीं हुआ,
मेरे बूढ़े के कानों पहुँची। जाने पड़ोसी किसी से सुना, या वही कल-
जीभ चलाती वहाँ पहुँच गई......

सोना—ऐसी निडर, बेहया !

कुसलो—अब तुम जानो मेरा बूढ़ा तो एक मूरख ठहरा। सुन के

दिमाग उसका फिर गया। रट लगाने लगा, ब्याह, ब्याह। बोला—हास किया है तो अब ब्याह भी होगा। बोला—बुलाओ लड़के को घर, उसे ब्याह करना होगा। मैंने उनका मन फेरने का पूरा जतन किया। पर नहीं सो नहीं। वह किस की मान कर दें। तो फिर मैंने भी सोचा कि अच्छी बात है। मैं भी दूसरी जुक्ति खेलूँगी। मूरख ऐसे ही बस में आते हैं। तुरत तो पहले उसकी राजी में राजी हो जाय, हाँ, और जब तन्त का वक्त आय तब करे अपने जी की। तुम तो जानती हो, पलक मारते औरत सत्तर विचार विचार सकती है। सो भला उस जैसे की तो बात क्या कि पार पा जाय। यह विचार मैं भी बोली कि अच्छी बात है, ब्याह में क्या बुराई है? पर पहले सब सोच-विचार लेना चाहिए। चलो, चलकर अपने बेटे से भी पहले पूछ देखें। और वहाँ जोधराम की राय भी ले लेंगे कि क्या कहते हैं। इस तरह चल के हम लोग यहाँ आ गए।

सोना—ओ माँ, काम कैसे सधेगा? मान लो कि बाप ने सीधे ब्याह का हुक्म कर दिया!

कुसलो—भला हुकुम कर दिया? हुकुम गया भाड़ में! घबराओ मत। ब्याह वह कभी न होगा। तुम्हारे मरद के पास मैं खुद जाती हूँ। वहाँ बात को ऐसा छानबीन के साफ कर दूँगी, ऐसा साफ कि बीज बाकी न रहे। मैं तो यहाँ देखने आई थी कि रंग क्या है, कैसा गाढ़ा है। भला ऐसे में ब्याह की बात कहीं उठती है! देखती हूँ बेटे की मजे में चल रही है। उसे सब सुख है और आगे भी आस है। सो क्या मैं उसे यहाँ से तोड़ के उस छोकरी के साथ ब्याह देने वाली हूँ? डर न रक्खो, रानी बहू, मैं मैं ऐसी मूरख नहीं हूँ।

सोना—और वह रजनिया—पीछे दुम-सी लगी-लगी यहाँ तक आई! माँ, सच जानो, मैंने सुना कि चन्दन ब्याह कर रहा है तो कलेजे में जैसे किसी ने कटार भोंक दी। मैं जानती थी कि वह उसे प्रेम करता है।

कुसलो—सो क्या तुम उसे ऐसा मूरख समझे हो, बहू रानी, कि घर नहीं, बार नहीं, ऐसी आवारा छोकरी की फिकर सिर बाँधेगा? चन्दन मेरा समझदार है। जानता है प्यार कहाँ करना। सो मन में सोच न लाओ बहू, और रिस छोड़ो। न कोई उसे ले जायगा न ब्याहेगा। नहीं, हम उसे यहीं रहने देंगे। हाँ रकम-वकम की जरूरत होगी वह तुम कर ही दोगी।

सोना—मैं सच कहती हूँ, चन्दन गया कि मुझसे भी फिर रहा नहीं जायगा।

कुसलो—सच तो है बहू। जवान उमर, ऐसे में बिछोह का ताप क्या सहा जाता है! और भरजोबन में तुम्हें कैसे रूखे नामरद को लेके रहना पड़ रहा है, सो क्या मैं जानती नहीं हूँ?

सोना—कुसलो, सच जानो मैं अपने उस बूढ़े खूसट से ऐसी तंग हूँ कि मुँह देखना तक—

कुसलो—बीबी, मैं समझती हूँ। ऐसे मामले मैंने देखे हैं। देखो (**चारों तरफ देखती और फुसफुसाकर बात करती है**) मैं उस सिद्ध-नाथ के पास गई थी। जानती तो होगी। उसने दो तरह की दवाई दी हैं। देखो, यह तो नींद की दवा है। कहा कि एक पुड़िया दोगी तो मरद ऐसी नींद सोएगा कि ऊपर कूदो तो न जगे। और देखो, यह दूसरी है। इसके लिए बोलता था कि यह वह खास तरह की दवा है। एक चुटकी दो कि कोई महक नहीं, स्वाद नहीं, और असर वह तेज कि क्या पूछो। सात खुराक हैं। एक बारी को एक। बोलता था कि सात खुराक अपने मरद को जो खिलादे, उस स्त्री के बंधन खुलने में फिर बहुत देर नहीं लगती।

सोना—ओ-ो-ोः

कुसलो—पकड़ कोई नहीं, निशान कोई नहीं। पूरा एक रुपया उसने लिया। बोलता था, पाई कम नहीं। तुम जानो ऐसी चीज का मिलना आसान थोड़े है। सो बीबी अपने पास से मैंने नकद रुपया दिया। सोचती

थी तू ले लेगी तो तू ले ले। नहीं तो बूढ़े धनपत की वह जग्गो है ही, उसे दे दूँगी।

सोना—दैया री, कहीं उससे कुछ बात न निकले। मुझे डर लगता है।

कुसलो—बात कैसी मेरी भोली बहू ? तुम्हारा मरद तन्दुरुस्त और दिलदार होता तो बात दूसरी थी। पर अब तो वह न मुर्दों में है न जीतों में। इस दुनिया में वह किस काम का है ? ऐसा तो अक्सर होता है।

सोना—उह, मेरा तो सिर घूम रहा है। डरती हूँ कि कहीं उसमें कुछ बुराई न निकले। नहीं, नहीं, यह नहीं—

कुसलो—तेरी जैसी मरजी बहू, मैं वापस कर दूँगी।

सोना—तो यह पुड़िया भी पहली तरह दी जायगी—पानी में ?

कुसलो—बोलता था कि चाय में दो तो और अच्छा। कहा, कुछ पकड़ नहीं, न निशान, न गन्ध, न कुछ। वह सिद्ध आदमी है।

सोना—(**पुड़िया लेकर**) ऊ-ऊर-रे, सिर फटा जा रहा है। जिन्दगी मेरी नरक न बन गई होती तो भला मैं ऐसा सोचती ?

कुसलो—और कीमत एक रुपया है, भला। रुपया जाके देना भी है। वह भी विचारा हाथ का तंग है। सुना ?

सोना—हाँ-आँ(**जाती है और पुड़िया बक्स के अन्दर छिपा देती है**)

कुसलो—अच्छा, तो मेरी हीरा बहू, बात यह अपने तक दबी रखना। झूठे कान किसी को खबर न हो। राम न करे जो कहीं कोई देख ही ले तो कह देना कि चूहों के लिए दवाई है। (**हाथ में रुपया सँभालती है**) चूहों के काम भी आती है यह दवाई (**रुक जाती है**)

[**रिसाल आता है और सामने किसन जी की मूरत टंगी देखकर हाथ जोड़ता है। तभी जोधराम आता है और बैठ जाता है।**]

जोधराम—हाँ, रिसाल चौधरी, कहो कैसा क्या है ?

रिसाल—जोध दादा, क्या नाम, बाजबी बात है, बाजबी। पूछो क्यों ?

सो यह कि, क्या नाम, बदमासी है। लड़के को, क्या नाम, सूधी राह चलना चाहिए, सूधी राह। और क्या नाम बाजबी बात है कि नहीं?

जोधराम—चौधरी, आराम से बैठ जाओ। बैठ के बातें ठीक रहेंगी। (रिसाल बैठता है) हाँ, अब कहो कि पूरा मामला क्या है? चन्दन को ब्याह देना चाहते हो?

कुसलो—ब्याह की बात करते हो तो, जोधराम चौधरी, ऐसी जल्दी काहे की है? तुम तो घर की हालत जानते हो। लड़का शादी करे तो किस बिरते? आप तो खाने जोग मुश्किल से जुड़ता है। ऐसे में ब्याह कैसा?

जोधराम—सोच देखो, जो मुनासब जँचे।

कुसलो—अजी, ऐसी ब्याह की क्या उतावल है? ब्याह कोई पका बेर तो है नहीं, झट तोड़ के खा लो, नहीं तो सूख के गिर जायगा।

जोधराम—ब्याह हो-हुआ जाय तो एक तरह ठीक ही है।

रिसाल—एक तरह, हाँ, ठीक है। क्या नाम, मैं, मुझे···क्या नाम काम मिल गया है। शहर में मुलाजम का काम···

कुसलो—मिल गया है बड़ा काम! वही चौबच्चे धोते फिरो। कल की तो बात है। आये घर तो राम बचाए, बास के मारे नाक दबाते-दबाते मैं तो मर गई। फुह!

रिसाल—सच दादा, पहले-पहल जी, क्या नाम, मतली करता था। वह, क्या नाम, बास बड़ी होती है। तुम जानो, बास। फिर तो क्या नाम आदत हो जाती है। तब न बास, न कुछ। और क्या नाम मजूरी मिलती है। मजूरी, मतलब पैसा। और क्या नाम हम सिवाल को बास? हम उससे बच सकते हैं? बहुत हुआ तो क्या नाम, कपड़े बदल लिए। तो बात यह कि, क्या नाम,···हाँ, चन्दन घर को चले। वहीं रहे। और मैं क्या नाम शहर में दो पैसे—मतलब मजूरी—

जोधराम—लड़के को अपने घर रखना चाहते हो! अच्छा तो है।

लेकिन उसने जो अगाऊ रुपया ले रक्खा है, सो उसका क्या होगा ?

रिसाल—रुपया, क्या नाम, पक्की बात है जोधराम। नौकरी तो क्या नाम नौकरी ठहरी। मतलब कि क्या नाम आदमी मोल बिक जाता है न! है न चौधरी, क्या नाम पक्की बात है। तो क्या नाम चन्दन यहीं रहे। पर ब्याह जरूरी है। मतलब, कुछ रोज की क्या नाम छुट्टी समझो। तुम जानो वह क्या नाम ब्याह की बात है।

जोधराम—हाँ, यह तो हो सकता है।

कुसलो—लेकिन बात यह अभी तय मत समझना, जोधराम। मैं तुमसे सच कहती हूँ, जैसे भगवान् के आगे। मेरे और मेरे इन बूढ़े के बीच तुम्हीं मुन्सफ रहे। इन्हें ब्याह-ब्याह की रट लगी है। पर भला पूछो—ब्याह वह करना किसके साथ चाहते हैं! कोई ठीक तरह की लड़की हो, तो बात भी। लेकिन मैं लड़के की कोई बैरन नहीं। वह छोकरी निकम्मी बदचलन है।

रिसाल—नहीं, कभी नहीं, क्या नाम कभी नहीं। पूछो, क्यों? लड़की क्या नाम—कसूर लड़के का है। मतलब लड़के ने क्या नाम लड़की को भिरष्ट किया है।

जोधराम—भिरष्ट!

रिसाल—हाँ, बिलकुल! लड़की क्या नाम चन्दन के साथ थी। चन्दन क्या नाम तुम जानो—साथ थी।

कुसलो—चुप भी करो। मैं कहती हूँ मेरी जबान सच बोलती है, इससे रुकती नहीं है। जोधू चौधरी, तुम तो जानते हो, यहाँ आने से पहले हमारा चन्दन रेलबाई पे रहता था। वहाँ थी एक लड़की, जो उसके पीछे ही लगी फिरने लगी। ठौर न ठिकाना। जाने कहाँ की आवारा छोकरी। जानते तो हो, वही रजनिया। मरदों को दो रोटी सेक दिया करती थी। वही बेहया आती है और अपने करम चन्दन के सिर डालना चाहती है। कहती है, चन्दन का दोष है।

जोधराम—यह तो अच्छी बात नहीं है।

कुसलो—पर उस छोकरी की बात का भरोसा करते हो चौधरी ? हर किसी के तो पीछे लगी उसे देख लो। बेहया ही जो न हो।

रिसाल—फिर वही ? क्या नाम, क्या, बिलकुल नहीं। नहीं, बिलकुल, क्या नाम, बिलकुल नहीं।···झूठ सब ? क्या कहा ? क्या नाम बिलकुल नहीं···

कुसलो—बस बस, चुप भी करो। बैल की तरह बके जाते हो। कुछ मतलब भी तुम्हारी बकवास का निकलता है ? क्या नाम-क्या नाम, बिल्कुल-बिलकुल ! खुद को पता नहीं कि मुँह क्या कह रहा है। जोधराम, मैं नहीं कहती कि मेरी सुनो। पर खुद जा के चाहे जिससे उस छोकरी की बाबत पूछ लो। देखो सब वही कहते हैं कि नहीं। हरजाई कहीं की, बदज़ात औरत तो वह है ही।

जोधराम—दादा रिसाल, यह बात है तब तो चन्दन को उससे ब्याहने का कोई कारन सचमुच नहीं दीखता। घर की बहू कोई जूती तो है नहीं कि जब चाहे लात से निकाल फेंकी।

रिसाल—(आवेश में) झूठ ! यह औरत क्या नाम, एकदम झूठ। वह लड़की, क्या नाम, सब बात झूठ। पूछो क्यों ? मतलब लड़की भली है, क्या·नाम, बड़ी नेक भली। तुम जानो अच्छी लड़की है। उसके लिए क्या नाम मुझे अफसोस है। मतलब अफसोस—

कुसलो—घर छोड़े बाहर की रोवे। बस इनकी यह मसल है। लड़की का सोग मनायँगे, ·लड़के की फिकर नहीं। गले में डाल के लिए फिरो उस छोकरी को हार की तरह। बस हुआ, और गाल न बजाओ।

रिसाल—नहीं, क्या नाम गाल नहीं—

कुसलो—फिर बकवास ! चुप करो, मुझे कहने दो।

रिसाल—(बीच में रोककर) नहीं, गाल नहीं। तुम क्या नाम

बात जोड़ती हो। लड़की की बाबत क्या नाम झूठ घड़ती हो। तुम क्या नाम मतलब साधने को बात मोड़ के कहती हो। पर भगवान् का मतलब, क्या नाम भगवान् का मतलब—

कुसलो—तुम से तो बात करना झख मारना है।

रिसाल—झख की बात नहीं, क्या नाम लड़की मेहनतन है, और हुशियार। सारा घर क्या नाम सँभाल के रखती है। गरीबी में, क्या नाम, कामिन्दा आदमी काम का होता है। मतलब कामिन्दा! और ब्याह क्या नाम कम खरच में हो जायगा। पक्की बात है कि, क्या नाम, चन्दन की करनी है। लड़की की आबरू ली और वह, क्या नाम, अनाथ और गरीबनी, क्या नाम, उसकी इज्जत···

कुसलो—ऊँह, वैसी बदजात जाने क्या गढ़त नहीं कहती फिरती–

सोना—हम औरतों की बात भी सुननी चाहिए, रिसाल दादा, कुछ बातों में हम ही ज्यादा जानती हैं।

रिसाल—और भगवान्! ऊपर सिर पे, क्या नाम, भगवान् है। और लड़की वह क्या नाम इन्सान नहीं है? और, क्या नाम, भगवान् की आँखों में सब बराबर हैं। हाँ-हाँ, क्या नाम—

कुसलो—देखा? फिर बहक चले!

जोधराम—सच तो है दादा रिसाल, जो लड़कियाँ कह दें वह सभी सच तो नहीं होता। पूछ देखो कि सच क्या है। नरक में जाना तो वह नहीं चाहता होगा। जो हुआ होगा कह देगा। जाओ, कोई उसे बुला के लाओ तो। (सोना उठती है) कहना बापा बुला रहे हैं। (सोना जाती है)

कुसलो—यह मुंसफी की बात हुई। भइया, यह तो तुमने रास्ता ऐसा साफ कर दिया जैसे पानी से धो दिया हो। सही बात है, लड़के को खुद कहने दो। आजकल तुम जानो ब्याह के बारे में किसी पर जोर-जबर तो चलता नहीं। पहले लड़के की हाँ चाहिए। वह चंदन कभी उस छोकरी से

ब्याह करके बेआबरू होने को राजी न होगा। उसे दुनिया में रहना है कि नहीं। भई मेरी राय तो है कि तुम्हारे साथ जैसे रहता है और काम करता है वैसे ही रहे जाय। गरमी के दिनों में भी यहाँ से उसे उठाने की कोई खास जरूरत नहीं है। ऐसा ही होगा तो हमीं मजूर रख लेंगे। बस जो तुम दस रुपये फिलहाल दे दोगे, तो हमारी तरफ से लड़का मजे में यहाँ रहे चला जाय हमें क्या है।

जोधराम—खैर, वह देखा जायगा। पहले एक बात तय कर लो। फिर दूसरी।

रिसाल—देखो जोधराम, मैं कहता हूँ, वह बात क्या नाम यह है। हम अपनी सोचते हैं। क्या नाम, अपना बन्दोबस्त करते हैं। पर ऊपर भगवान् है क्या नाम यह भूल जाते हैं। हम अपनी चलाते हैं, और क्या नाम बात तोड़-मरोड़ते हैं और फिर मुसीबत में पड़ते हैं, क्या नाम मुसीबत में। हम मौजकी आराम की सोचते हैं और क्या नाम नतीजा बुरा निकलता है। यानी क्या नाम बिन भगवान्...

जोधराम—बेशक भगवान् को नहीं भूलना चाहिए।

रिसाल—बिन भगवान्, क्या नाम, फल उलटा होता है। मतलब, रास्ता सूधा है। भगवान् का रास्ता हो तब...क्या नाम खुशी होती है। मतलब, भला होता है। सो मेरी मत है कि लड़के को बुला के, क्या नाम, उससे ब्यांह दो। मतलब वह दोस का फल भुगते और क्या नाम पाप से बचे, फिर क्या नाम बाजबी घर-गिरस्त होके रहे। और मैं, क्या नाम, शहर की नौकरीमें जाऊँ। काम क्या नाम ऐसा बुरा नहीं है। फिर क्या नाम पैसा मिलता है। और भगवान् की आँखों में यह धरम होगा, धरम। क्या नाम, वह बेघर बे-बाप अनाथन है। नहीं? मिसाल, क्या नाम, साल दो-इक की बात है। कुछ लोगों ने मिल के सोचा कि क्या नाम बाड़े से लकड़ी उड़ा लें। सोचा कि चोकीदार को निबट लेंगे। और चोकीदार को क्या नाम

निबट लिया। पर भगवान् को क्या नाम निबटना नहीं होता। भगवान् तुम जानो—

[चंदन और नन्दी आते हैं]

चंदन—क्या मुझे बुलाया था! (बैठ जाता है और बीड़ी निकालता है)

जोधराम—(भर्त्सना की आवाज में) क्यों जी किस ध्यान में हो? तुम्हें शऊर नहीं है? पिता तुम्हारे बुलाते हैं और तुम आके धम् से बैठ जाते हो। और निकाल के बीड़ी पीने लगते हो! न अदब न कुछ, उठो, खड़े हो।

चंदन—(खड़ा होता है, एक पैर को तखत के पाए से टिकाकर हिलाता है और हँसता है)

रिसाल—चंदन, तुम्हारे खिलाफ, क्या नाम, जुरम है। कसूर, क्या नाम, शिकायत।

चंदन—किसने की शिकायत? कैसा जुरम?

रिसाल—किसने—शिकायत? एक गरीब लावारिस लड़की की शिकायत। तुम जानो, क्या नाम, रजनी। उसने की शिकायत।

चंदन—(हँसता है) भली शिकायत! क्या उसने खुद की आकर?

रिसाल—पूछ मैं रहा हूँ, जी। और क्या नाम मुझ को जवाब दो। तुम उससे मिलते—क्या नाम मिलते-मिलाते रहे हो?

चंदन—मैं नहीं समझा। माजरा क्या है?

रिसाल—माजरा, बोलो क्या नाम तुम से कुछ हुआ है? कुछ बेवकूफी, कोई हरकत? क्या नाम, कोई बेजा बात हुई है?

चंदन—ऊँह, हटाओ। कभी कुछ हँसी मजाक किससे नहीं होती। वक्त बहलाने को कुछ हँस बोल लिए तो इसमें क्या बात है? हाँ, हम खेले हैं, साथ रहे-सहे हैं, तो उससे क्या?

जोधराम—इधर-उधर नहीं चलेगी, चंदन! बात का सीधा जवाब

अपने बाप को दो।

रिसाल—(गम्भीरता से) आदमी से छिपा लो, पर क्या नाम भगवान् से नहीं छिपा सकते हो, चंदन! तुम „क्या नाम झूठे न टालना। उसके माँ नहीं है। सो कोई उसकी क्या नाम आबरू नहीं ले सकता है। बिचारी जतीम है। सो तुम क्या नाम सच-सच सब साफ कह दो।

चंदन—मगर कुछ कहने को हो भी। जो था कह दिया। सौ बात की एक बात है कि कुछ नहीं (उत्तेजित हो आता है) वह मेरे बारे में चाहे जो कुछ कहती फिरेगी! जैसे मैं बेजुबान हूँ कि मनचाही तोहमत मुझपे लगाए। कहना है तो वह उस रज्जब के बारे में कुछ क्यों नहीं कहती है? और फिर यह क्या इंसाफ कि उमर के साथ कोई कुछ खेल-वेल भी न सके। और उसकी बात है तो उसके मुँह में जो आए कहे। आजाद ठहरी, कौन जुबान पकड़ने जाता है।

रिसाल—ओ! चंदन, ध्यान करो। झूठ क्या नाम दबता नहीं है। बोलो, तुमसे कुछ दोस हुआ है? क्या नाम, कुछ हुआ हवाया है?

चंदन—(स्वगत) कैसे एक बातपर अड़ गए हैं! अच्छी मुसीबत है।(रिसाल से) कहता तो हूँ कि मैं और कुछ नहीं जानता हूँ। हममें कोई बात हुई हो तो (गुस्से में) भगवान् करे (ऊपर आँख करके मानो हाथ जोड़ता है) मैं, भगवान् देखता है, यहीं गड़ा का गड़ा रह जाऊँ। (सब चुप रहते हैं, अनन्तर चंदन और आवेश में बोलता है) क्या! मुझे उसके साथ ब्याहने का इरादा किया जा रहा है? मतलब इसका क्या है? बड़ी शर्म और तोहमत की बात है। नहीं, मैं नहीं। और आजकल किसी को हक नहीं है कि बेमरजी शादी कर दे। सौ की एक बात मैंने कह दी। और कह दिया कसम से कि बाकी कुछ मुझे नहीं मालूम। मेरा कोई सरोकार नहीं।

कुसलो—(अपने पति से) अब देखो तुम्हीं। बस तुम्हारी तो आँधी

खोपड़ी है कि जो जिसने कहा सच मान लिया। और तुम हो कि वे बात लड़के की सब जगह ख्वारी करते फिरते हो। तो पक्का यही ठहरा कि चदन यहाँ रह रहा है। क्या बुरा है, अपने मालिक के साथ यहीं रहे जाय। और चौधरी हमें जरूरत है सो अभी हाल दसेक रुपये की तो मदद कर ही देंगे। बाकी फिर वक्त आने पर···

जोधराम—हाँ, दादा रिसाल, तो क्या राय रही!

रिसाल—(**बेटे की तरफ देखकर असंतोष के भाव में**) याद रखना चन्दन, कि गरीब की हाय क्या नाम बिरथा नहीं जाती। दुखिया के आँसू, क्या नाम बे-ठौर नहीं गिरते, सदा ठीक पापी के सिर पे गिरते हैं। सो क्या नाम, याद रखना।

चंदन—क्या मैं याद रक्खूं! याद तुम्हीं रखना।

नन्दी—(**अलग**) जाके मैं मां से कहूँ। (**वह जाती है**)

कुसलो—(**जोधू से**) जोधराम भैया, इन हमारे बड़-बड़ बूढ़े का तो सदा का यह हाल है। सिर में ठूंस के एक बात बिठाली कि फिर मजाल है वहाँ से कोई टस-से-मस कर दे। हमने तुम्हें नाहक हैरान किया। जैसे पहले था वैसे अब भी लड़का तुम्हारे पास है, पास रहेगा। वह तुम्हारा है, तुम्हारा नौकर, तुम्हारा चाकर। जैसे चाहे रक्खो।

जोधराम—दादा रिसाल, अच्छा, तुम्हारा भी यही कहना है?

रिसाल—लड़का क्या नाम अपना मालिक है। बस, क्या नाम मेरी मरजी थी··मेरा मतलब··क्या नाम···

कुसलो—कुछ खुद भी पता है कि मुँह से क्या निकल रहा है! क्या नाम—मर्जी, मतलब—मर्जी! खुद लड़के की जाने की मर्जी नहीं है। सुना! और घर पर उसका हमें करना भी क्या है? उसके बिना काम चल ही रहा है।

जोधराम—एक बात है, दादा रिसाल, बुवाई के दिनों में तुम्हारा उसे

ले जाने का इरादा हो तो यहाँ जाड़े के दिनों में उसके लिए मेरे पास काम नहीं है। अगर वह रहे तो पूरे साल भर रहे।

कुसलो—हांजी, पूरे साल-भर रहेगा। पक्की बात है। काम का बहुत कसाला हुआ और जरूरत हुई तो हम एक मजूर रख लेंगे। पर लड़का यहीं रहेगा जी, भरोसा करो। बस फिलहाल दस रुपये—

जोधराम—तो एक साल के लिए पक्का हो गया न।

रिसाल—(आह भर कर) एँ, हाँ, ऐसा है तो क्या नाम ऐसा सही।

कुसलो—हां, पूरा साल। दसहरे से दसहरे तक। उसे जब तनखा दो सो उसकी फिक्र नहीं है। पर इस वक्त दस रुपये हमें चाहिए। तंगी आ पड़ी है सो ही जरूरत है। **(उठती है और जोधराम के आगे झुकती है)**

[नन्दी और सोना आती हैं, सोना एक तरफ बैठ जाती है]

जोधराम—अच्छा, यह तय हुआ तो आओ चलें, चौपाल चलें। आओ दादा रिसाल, कुछ चना-चबेना करलो। और साथ एक घूंट ताड़ी की कैसी रहेगी।

रिसाल—नहीं, भाई, क्या नाम मैं वह नहीं पीता।

जोधराम—तो फिर चाय सही।

रिसाल—चाय? वह दोस क्या नाम कर लेता हूँ। वह सही।

जोधराम—हां-हां, औरतें भी। चलो चलें। और चन्दन, तुम जाके भेड़ों को खोल देना। और भूसा साफ कर रखना।

चंदन—अच्छा। **(चन्दन को छोड़कर सब जाते हैं। चन्दन बीड़ी सुलगाता है। अंधेरा होता जाता है)** देखो न, आदमी को कैसा हैरान करते हैं? चाहते हैं मुँह खोलकर कोई अपने इशक की बातें उन्हें बताए। अब कोई एक की बात तो है नहीं। कोई कहे तो किस-किस की कहे? बूढ़ा कहता है उसे ब्याहना होगा। तो क्या सब को ब्याहना होगा? ऐसे तो बीबियाँ-ही-बीबियाँ हो जायँगी। और ब्याह की मुझे जरूरत क्या

है ? ब्याहा जैसा तो हूँ ही। बहुतेरे मेरी किस्मत पे कुढ़ते हैं। पर ऊपर रामजी को हाथ जोड़ते मुझे जाने कैसा लग आया। मानो ऊपर से विकल के कुछ सिर पे गिर रहा हो। सारा बना-बनाया जैसे एक छन में टूटने को हो गया। कहते हैं झूठी कसम खाने में खतरा है। पर वह सब डराने को है जी, गप्प। साफ़ तो बात है, गप्प।

[मेमा आती है। हाथ में रस्सी है, उसे नीचे रखती है, बाहर के कपड़े उतार कर बराबर की खोली में जाती है।]

मेमा—कोई रोशनी तो कर ली होती।

चंदन—क्या तुम्हें देखने को ? बिना उसके जो झलक तुम्हारी काफी दीख जाती है।

मेमा—ए हटो !

[नन्दी आती है, और चन्दन के कान में कुछ कहती है।]

नन्दी—तुम्हें कोई बाहर बुला रही है, वह—वहाँ—

चन्दन—कौन ?

नन्दी—वह रेलवाई की रजनी। बाहर पिछवाड़े खड़ी हैं।

चन्दन—झूठ।

नन्दी—मेरी कसम।

चन्दन—वह क्या कहती है ?

नन्दी—तुम्हें बाहर बुलाती है। कहती है, चन्दन से बस एक बात कहनी है। मैंने पूछा, क्या ? तो उसने बताया नहीं। पूछने लगी कि 'क्यों जी, यह सच है कि वह तुम्हें छोड़के जा रहे हैं ?' मैं बोली, 'नहीं, बाप चाहते हैं कि ले जायँ और ब्याह कर दें, पर वह तो नहीं जा रहे हैं। एक साल और यहीं रहेंगे।' इस पर वह बोली, 'नन्दी, राम तेरा भला करे, जरा यहाँ भेज दे तो।' बोली—'बहुत जरूरी मिलना है। एक बात उनसे कहनी है।' सो वह वहाँ कितनी देर से खड़ी बाट देख रही है। जाओ,

हो क्यों नहीं आते ?

चन्दन—हटाओ जी, मैं क्या जाके करूँगा ?

नन्दी—बोलती थी कि जो वह नहीं आ सके तो मैं वहीं आकर मिल लूँगी। मेरा राम जाने जो उन्ने यही न कहा हो।

चन्दन—यहाँ वह आयगी ? ऊँह—हटाओ। कुछ देर खड़ी रह के आप चली जायगी।

नन्दी—और कहती थी कि नन्दी, कहीं ऐसा तो नहीं कि वे मेमा से उनका ब्याह करना चाहते हों ? (मेमा आती और हाथ की लकड़ी लेने जाते में चन्दन के पास से गुजरती है।)

मेमा—मेमा से ब्याह ! किसका ?

नन्दी—क्यों ? चन्दन का।

मेमा—बड़ा हुआ ब्याह। कौन कहता है ?

चन्दन—(उसकी तरफ देखता है और हँसता है) मालूम होता है, लोग कहते हैं। तुम मुझसे ब्याह करोगी, मेमा ?

मेमा—कौन, तुमसे ? पहले कर भी लेती, पर अब नहीं।

चन्दन—क्यों ? अब क्यों नहीं ?

मेमा—क्योंकि तुम मुझे प्यार नहीं करोगे।

चन्दन—भला क्यों ?

मेमा—तुम्हें करने जो नहीं दिया जायगा। (हँसती है)

चन्दन—कौन नहीं करने देगा ?

मेमा—सौतेली मेरी माँ, और कौन ? क्या मैं देखती नहीं कि वह सबसे झींकेगी और हरहमेश तुम्हें निढाल आँखों से ताका करेगी।

चन्दन—(हँसकर) लो सुनो, यह तो तुम कटी-कटी सुना चलीं।

मेमा—कौन मैं ? कटूँ मैं ? क्यों, कोई मैं अन्धी हूँ क्या ? देखती नहीं हूँ ? दादा पर दिन-भर वह रिस चढ़ाए रहती है और—औरत है या

छिनाल ? (जाती है)

नन्दी—(खिड़की से बाहर देखकर) चन्दन, देखो वह आ रही है। मेरा नाम बदल देना जो वही न हो। मैं चलूँ। (जाती है)

रजनी—(प्रवेश करते हुए) तुम मेरा क्या किये दे रहे हो ?

चन्दन—किये दे रहा ! क्या, मैं ? कुछ तो नहीं कर रहा हूँ।

रजनी—मुझे छोड़ देना चाहते हो ?

चन्दन—(गुस्से में उठकर) यहाँ तुम जो आ गई हो, सो भला क्या लोग कहेंगे, सोचो तो।

रजनी—ओ, चन्दन !

चन्दन—लो, तुम भी अजीब हो। यहाँ किस वास्ते आई हो ?

रजनी—चन्दन !

चन्दन—हाँ चन्दन, वह मेरा नाम है। लेकिन चन्दन से तुम क्या चाहती हो ? यह भी खूब ! चली जाओ। मैं कहता हूँ, यहां से जाओ।

रजनी—समझी। तुम मुझे तज देना चाहते हो।

चन्दन—यह लो, हमारे बीच वास्ता क्या है ? तुम खुद समझती क्यों नहीं ? वहाँ तुम पिछवाड़े खड़ी थीं और नन्दी को मेरे लिए भेजा, और मैं नहीं आया, तब तुम क्यों नहीं समझी कि तुम्हारी यहाँ जरूरत नहीं है। सीधी तो बात थी। अब समझी ? इससे जाओ—जाओ।

रजनी—जरूरत नहीं है ? सो अब मेरी जरूरत नहीं है ! तुमने कहा कि तुम मेरी मोहब्बत चाहते हो, तो मैंने तुम्हारा भरोसा किया। अब मेरा सब-कुछ ले चुके, तो मेरी जरूरत नहीं है !

चन्दन—ज्यादा बात से क्या फायदा है। अपनी न कहोगी कि जाके मेरे बाप से क्या-क्या लगा आई ? सो अभी हाल यहाँ से चली जाओ, सुना ?

रजनी—तुम तो जानते हो कि तुम्हारे सिवा मैंने किसी को नहीं चाहा।

तुमसे ही मैं रही। ब्याह मुझसे करते या न करते, मैं नाराज होने वाली नहीं थी। मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। पर तुमने प्रीत मेरी क्यों तोड़ दी है? यही मुझे···

चन्दन—चाँद को मुँह लगाने से क्या फायदा? बस तुम चली जाओ। राम राम, क्या मूरख औरत है!

रजनी—ब्याह के बचन के बाद तुम उसे नहीं पालते हो, इसकी मुझे चोट नहीं है। आदमी कभी परबस हो जाता है। दरद तो मुझे इस बात का है कि तुमने मेरी प्रीत भी छोड़ दी है। नहीं, यह भी बात नहीं कि प्रीत छोड़ दी है, बल्कि मेरी जगह दूसरे की प्रीत कर ली है। चोट मुझे इसकी है। और मैं जानती हूँ, वह कौन है।

चन्दन—(**जैसे मारना चाहता हो, इस भाँति उसकी तरफ बढ़ कर आता है**) ऊँह, तुम जैसियों से बात तक क्या की जाय, कि जिन्हें कुछ तो समझ है नहीं। जाओ, हटो, नहीं तो जाने मैं क्या कर बैठूँगा। फिर तुम पछताओगी। चलो, निकलो।

रजनी—क्या मारोगे? लो, मारो। मुड़े क्यों जा रहे हो? ओ चन्दन?

चन्दन—अरी, कोई ऐसे में आ जाय तो बड़ा खराब होगा। सुनती है? और ज्यादा बात से क्या फायदा?

रजनी—सो यह होना था! प्रीत का यह अन्त हुआ! जो था खो गया। अब तुम चाहते हो, मैं भूल भी जाऊँ। अच्छा, चन्दन, सुनो! मैं क्वारी थी और अपनी आबरू आँख के तारे की तरह बचा के रखती थी। तुमने मुझे फुसलाया और नाहक बरबाद करके रख दिया। तुम्हें बिन बाप और बिना माँ की लड़की पर तरस नहीं आता है? (**रोती है**) तुमने मेरा मुँह काला किया। मुझे कहीं का न छोड़ा। मेरी तो मौत ही समझो। लेकिन मैं तुम्हारा बुरा नहीं विचारती। भगवान् तुम्हें माफ करें। कोई मुझ

से अच्छी मिलेगी तो तुम मुझे भूल जाओगे। पर बुरी मिली तो याद करोगे। अच्छा, यही होना है तो हो। लो, मैं चली। ओह, मैंने तुम्हें कितना प्यार किया! खैर, सदा के लिए अब तुमसे विदा होती हूँ।

[पैर छूने की कोशिश में आगे बढ़कर चन्दन के सामने झुकती है।]

चन्दन—(झटके से पैर पीछे खींचकर) मैं तुम-जैसियों से बात भी नहीं कर सकता। तुम नहीं जाती तो मैं चला जाता हूँ। फिर चाहो तो यहाँ अकेली खड़ी रहना।

रजनी—(चीखकर) ओ निर्दयी! (द्वार से निकलती हुई) भगवान् तुम्हें सुख नहीं देगा। (रोती हुई बाहर जाती है)

मेमा—(बराबर के कमरे से बाहर आकर) तुम चंडाल हो, चन्दन!

चन्दन—क्यों-क्यों, क्या हुआ?

मेमा—ओह, कैसे दर्द की उसकी पुकार थी! (खुद रोती है)

चन्दन—क्यों, अरे, हुआ क्या है?

मेमा—क्या हुआ? कैसा सताया है तुमने उसे! ऐसे मुझे भी सताओगे? तुम कुत्ते हो, कुत्ते! (बराबर वाली खोली में जाती है, कुछ काल शान्ति रहती है।)

चन्दन—अजब झमेला है यह। इन औरतों के साथ मैं मीठा रहता हूँ, जैसे मिसरी। पर बात के आगे उनके साथ जरा जो अटके, तब तो मुसीबत ही है, बस मौत ही समझो!

अंक २

[गाँव का एक मोहल्ला। बाईं तरफ जोधराम का मकान। मकान के बाड़े में एक तरफ सोना सन कूट रही है। पहले अंक की घटना से छः महीने गुज़र गए हैं।]

सोना—(रुकती और सुनती है) फिर बड़बड़। उठ के बैठ आया दीखता है।

[मेमा आती है, हाथ में टीन का कनस्तर है।]

सोना—अरी, वह पुकार रहे हैं, जाके देख तो क्या बात है। ऐसा भी क्या कि होहल्ला ही मचा दिया!

मेमा—तो तुम्हीं क्यों नहीं जाती?

सोना—जो भी, मैं कहती हूँ। (मेमा उधर जाती है) नाक में दम कर रक्खा है। मेरी तो मत हार गई। बताता ही नहीं कि रुपया कहाँ है। एक मुसीबत है। कल उधर बरामदे में गया था, लगता है वहीं गाड़गूड़ दिया है। पर गाड़ा है तो जाने कहाँ? चलो, यह अच्छा है कि रुपया उसके हाथ से छूटता नहीं। सो कुछ हो, रहेगा तो घर में। पर किसी तरह जो हाथ लग जाता। कल उसके बदन पे तो था नहीं। जाने कहाँ रक्खा हो, कहाँ नहीं। मेरी तो जान ही उस मनहूस ने सुखा डाली।

[मेमा आती है, ओढ़नी कन्धे पर पड़ी है।]

सोना—क्यों, कहाँ चली?

मेमा—उन्होंने ही देवकी बुआ के जाने को कहा है। कहने लगे मेमा, जा बहन को तो बुला ला। कहियो, मैं मर रहा हूँ। सो आँख मुँदने से पहले एक बात सुन जाय।

सोना—(स्वगत) अपनी बहन को बुलाया है न! हाय मेरी किस्मत! जरूर सब उसे ही देना चाहता है। अब क्या करूँ, ओह! (मेमा से) नहीं, कहाँ चली है?

मेमा—कहा तो, बुआ को बुलाने।

सोना—मत जा वहाँ। तेरे जाने की जरूरत नहीं है, सुना? कह तो रही हूँ, मैं खुद जाऊँगी। ले, तू ये कपड़े जाके तलाब पे से धो ला। जल्दी कर, नहीं तो शाम तक इतने कपड़े निबटेंगे नहीं।

मेमा—पर दादा ने बुआ के जाने को कहा है।

सोना—सुन लिया, सिर न खा। जो कहती हूँ कर। कह तो दिया, देवकी को मैं बुला लाऊँगी। और देख, वह जगत पर से धोती उठा ले।

मेमा—धोती! और जो तुम न गई तो? उन्होंने ताकीद करके कहा है।

सोना—सुनेगी नहीं? मैं भौंक तो रही हूँ कि मैं जाऊँगी, जाऊँगी। नन्दी कहाँ है?

मेमा—नन्दी? गैय्या-बछिया को देख रही है।

सोना—उसे यहाँ भेज जा। हाँ-हाँ, इतने कहीं वह भागे नहीं जाते हैं। **(मेमा कपड़े उठाती और जाती है।)**

सोना—जो कोई देवकी के न गया तो बूढ़ा झींके-झांकेगा। और गया और उसे बुला लाया तो सारा माल वह बहन को ही सौंप देगा। ऐसे सारी मेहनत अकारथ हो जायगी। मेरी तो अकल काम नहीं देती। क्या करूँ? ओ! मेरा सिर फटा जाता है। **(अपना काम जारी रखती है।)**

[कुसलो प्रवेश करती है। हाथ में एक गठरी और लठिया है, जात्री वेश में है।]

कुसलो—भगवान् का सब कुसल-मंगल है न बहू?

सोना—**(मुड़कर देखती हुई काम छोड़ कर उठती और खुशी के**

मारे ताली बजाती है।) बड़े भाग, सच तुम बड़े मुहूरत से आई। विधि की लीला, और क्या ? माँ, भगवान् ने ही समय पे तुम्हें भेजा है।

कुसलो—क्यों, क्या सब ठीक नहीं है ?

सोना—ओह, मेरी तो मत हैरान हो रही है। सूझता ही कुछ नहीं। मुसीबत है।

कुसलो—सुनती हूँ, बूढ़ा अब तक जीए जाता है !

सोना—बस, कुछ न पूछो। न जीता है न मरता है।

कुसलो—लेकिन माल तो किसी को दिया-दिवाया नहीं न ?

सोना—अभी अपनी बहन देवकी को बुला भेजा है। सब उसे ही दे देना चाहता होगा, और क्या ?

कुसलो—और नहीं तो क्या ? लेकिन किसी और को तो नहीं दिया न ?

सोना—न, किसी को नहीं। मैं जो आठों पहर बिज्जू-सी धरना दिये बैठी हूँ !

कुसलो—माल है कहाँ ?

सोना—सो बताता ही नहीं। न किसी जुगत से पता लगता है। कभी यहाँ दुबका देता दीखता है तो कभी वहाँ। और मेमा के सबब मुझे भी ज्यादे नहीं कर मिलता। छोकरी मूरख दीखती है, पर बड़ी घाघ है। भली मानस सब तरफ आँख रखती है। ओह, मेरा तो सिर फटा जाता है। जाने मौत का दुःख इससे क्या ज्यादा होगा। मैं तो ऐसी परेशान हूँ कि बस।

कुसलो—सुनो सितारा बहू, जो कहीं तुमसे दूसरे को रुपया मिल गया तो याद रखना, जब तक साँस रहेगा हाथ ही मलती रहोगी। दम टूटेगा तब तक पछताओगी। तब वे तुम्हें एक दिन घर से भी निकाल देंगे। और दर-दर भटकोगी। अभी इस खूसट के साथ बँधी सारी जिन्दगी जल-जल के काट रही हो, तब बेवा ही होने पर तो घर-घर भीख माँगती फिरोगी।

सोना—सो ही तो कहती हूँ, माँ। मेरे जी से पूछो क्या बीत रही है। पर क्या करूँ ? जरा सलाह ले लूँ ऐसा भी तो पास कोई नहीं है। चन्दन से कहा, वह सुनकर रह गया। बस इतना उन्ने काम करके दिया कि बताया, वह रुपया कमरे में फर्श के नीचे गाड़ रखा है।

कुसलो—तो वहाँ देखा ?

सोना—कहाँ देख सकी ? कमरे में खुद जो बुढ़वा हरदम डटा रहता है। वह सारा रुपया कभी तो अपने बदन से ही बाँधे रखता है, कभी लुका देता है।

कुसलो—देखो, बहू, बात खयाल रखना कि कहीं अब के वह चालाकी चल गया तो फिर किये कुछ न होगा। **(धीमे-धीमे फुसफुसाकर)** और सुन, वह चाय वाली चीज—दी ?

सोना—ओह, (जवाब देना चाहती है, **तभी एक पड़ोसिन दीख पड़ती है, सो रुक जाती है।**)

[पड़ोसिन घर के पास से गुजरती और भीतर से आती हुई पुकार को सुनकर ठिठक रहती है।]

पड़ोसिन—(**सोना से**) सोना, ओ सोना, अरी तेरा मरद अन्दर से तुझे बुला रहा दीखता है।

सोना—ऐसे सदा ही बुलाता है। उसे खाँसी है, खाँसी। सो लगता है कि पुकारता हो। हालत तुम जानो खराब ही है।

पड़ोसिन—(**कुसलो के पास आती है**) रामजी भला करे तुम्हारा, मौसी, तुम कहीं दूर से आई हो ?

कुसलो—हाँ बीबी, सीधे घर से आ रही हूँ अपने बेटे को देखने। यह चीज-वस्त उसी के लिए हैं। तुम जानो पेट से जिसे जनमा है उसका खयाल होता ही है।

पड़ोसिन—सो तो होता ही है। **(सोना से)** और मैंने सोचा, चलूँ,

इतने में कुछ कपड़े-वपड़े ही धो डालूँ। पर देखती हूँ अभी सवेर है। कोई तो घाट पे पहुँचा नहीं होगा।

सोना—हाँ, सो जल्दी काहे की है।

कुसलो—और हाँ बहू, गंगाजली तो दे दी है न?

सोना—दे दी है मौसी, कल पण्डित आया था।

पड़ोसिन—कल मैंने भी उसे देखा था। राम जाने कैसे तन चेतन मिले हैं। कोई और होता तो···उस दिन तो राम राम, ऐसा लगता था कि अभी खाट से नीचे ले लें। रोना-धोना मच गया था और कफन की तैयारी हो चली थी।

सोना—कि फिर सांस आ गई और वह जी आए।

कुसलो—अरी, बहू, कुछ ऐसे में धरम-पुन्न का ध्यान भी धरा है कि नहीं!

सोना—हाँ, मौसी, औरों की भी राय है, कल तक जिये तो बाह्मन जिमा देंगे।

कुसलो—मैं सोचती हूँ, सोना बीबी, इधर या उधर, सच अब तो कुछ फैसला हो जाय तब साँस आए।

पड़ोसिन—सच तो है। साल भर से मराऊ हो रहा है। यह भुगतना मजाक नहीं है। तुम्हारा जीवन तो इस काल ऐसा समझो कि हाथ-पैर बँधे पड़े हों।

कुसलो—पर-बेबा की किस्मत कम कड़वी नहीं होती, बीबी। जवानी के दिन तक तो खैर चल भी जाय, पर देह में कुछ न रहे तब कौन किसे पूछे! बुढ़ापा कोई सुख की तो बात है नहीं, बीबी। यह मुझी को देखो, कोई ऐसी बहुत दूर से चल के नहीं आई हूँ, पर पैर का यह हाल है, और थकान ऐसी कि जाने खड़ी कैसे हूँ। मेरा चन्दन कहाँ है?

सोना—खेत पे हल ले के गए हैं। पर तुम आओ, मौसी, मैं आग

सुलगाती हूँ। चाय से कुछ दम आ जायगा।

कुसलो—(धरती पर बैठ जाकर) हाँ बहू, सच है। मैं तो बिलकुल हार चली हूँ। और धरम-पुन्न ऐसे में भूलना नहीं। कहते हैं उससे पिरेत-आतमा को सुख मिलता है।

सोना—कल बाह्मन बुला लें।

कुसलो—हाँ, जरूर बुला लो। और सुना तेने हमारे गाँव में हाल में अभी एक ब्याह हो के चुका है।

पड़ोसिन—क्या, सुख डूबते में?

कुसलो—अरी बहू, कोई हम सिवार गरीब वह थोड़े था! तुम जानो, गरीब को सब रुत समान है। सब मौसम उसे पतझड़। क्या ब्याह, क्या कुछ। पर वह तो किसनलाला की शादी थी। बड़े आदमी को क्या मुहूरत! उन्ने रजनी से ब्याह किया है।

सोना—लो, उसके तो भाग खुल गए।

पड़ोसिन—वह तो रंडुआ था न! कोई बाल बच्चे भी हैं क्या?

कुसलो—चार हैं, चार। कुलसील वाली तो उसे मिलती क्या? सो उसने रजनी पे ही खैर मानी, और वह खुश भी है। मसल जो है, 'तो कू और न मो कू ठौर।'

पड़ोसिन—रामदई, लोग क्या कहते होंगे! और वह ठहरा खासा मालदार।

कुसलो—अब तक तो दोनों में ठीक निभी जा रही है।

पड़ोसिन—सच्ची बात है। पहले से लचार हों, ऐसे रंडुए को कौन ब्याहे? सो देखो, हमारा रजब ही है। क्या खासा जवान है कि···

(एक किसान की आवाज) ओह, कुन्ती, अरी कहाँ जाके मर गई है? देखती नहीं, वह जाके गाय को भीतर हाँक। (पड़ोसिन जाती है)

कुसलो—(जब तक पड़ोसिन सुन सके, साधारण आवाज में)

चलो बहू, भला है कि उसका ब्याह हो गया। ज्यादा नहीं तो मेरा मूरख मरद तो अब चन्दन के ब्याह की रट नहीं रटेगा। लो (**एकाएक अपनी आवाज को गिराती है**) वह टली। (**फुसफुसाकर धीमे से**) मैंने कहा, वह चायवाली चीज दी ?

सोना—उसकी बात न करो, मौसी। वह अपने-आप ही जो मर रहा है। पर कोई फायदा नहीं और मैंने अपने मन तो पाप का बोझ उठा ही लिया। ओह, मेरा सिर, मेरा सिर। मुझे तुमने वह दवा दी क्यों !

कुसलो—सो क्या, वह नींद वाली दवा ?—बहू, वह पुड़िया दे क्यों नहीं दी ? उससे कोई बिगाड़ थोड़े ही हो सकता है।

सोना—नींद—नींद वाली की बात नहीं। दूसरी वह सफेद वाली—

कुसलो—ओ मेरी सितारा बहू, वही दवा तो चूरन है। बड़ी पक्की चीज है।

सोना—(**आह भरती है**) जानती हूँ, पर कालजे में दहसत लगती है। यों तो उस खूसट के मारे ऐसा मेरे नाक में दम है कि—

कुसलो—तो एकाध पुड़िया दी ?

सोना—दो दीं।

कुसलो—कुछ असर—?

सोना—मैंने खुद वह चाय जीभ पे रख के देखी थी। जरा-जरा कड़वी थी। चाय के साथ सारी पी गया। बोला, अब तो चाय भी मुझे कड़वी लगती है। मैंने कहा—बीमारी में सब कड़वा स्वाद देता है। कहते कह गई, लेकिन राम रे, जी धड़कता था।

कुसलो—ज्यादे सोच-विचार नहीं करते, समझी ? सोचोगी उतना मन बिगड़ेगा।

सोना—काहे को तुमने मौसी पुड़िया दी, और मुझे पाप में घसीटा ? सोचती हूँ तो ऐसा लगता है कोई कलेजा खींचता हो। ओह, तुमने मुझे

वह दी क्यों ?

कुसलो—भली रही बहू, यह कहती क्या हो ! मतलब क्या तुम्हारा ? ए राम, मुझ पे क्यों डालती हो ? सुनो बहू, बीमार की तोहमत अच्छे-भले के सिर मत पटको। सुन रखो, कुछ हुआ तो मैं अपने अलग हूँ ! मैं नहीं जानती। मुझे कुछ नहीं पता। शास्तर की कसम ले लो। मैंने तुम्हें कोई पुड़िया नहीं दी, कुछ किसी तरह का नहीं दिया। न सुना, न देखा। ऐसी कोई दवा होती है यह तक मैं क्या जानूँ ? पर तुम अपना खयाल करो, बहू। कल की तो बात है, तुम्हारी ही चर्चा थी। मैंने कहा कि बिचारी की मुसीबत देखो। विपता सहने की भी हद है। सोतेली बेटी है तो जड़, मूरख मरद है तो मराऊ, पर मरता नहीं है और बिचारी का खून चूसे ही जा रहा है। ऐसी हालत में कोई जो न करे सो थोड़ा।

सोना—झूठ बात नहीं, मौसी। मैं ना नही करती। मेरी जैसी हालत में जाने दूसरा कोई क्या न कर बैठे। बद-से-बद पे वह उतारू हो सकता है। अपना गला घोट के मर जाय या फिर उसी का गला घोट दे—सब सम्भव है। सच, कोई यह जीना है !

कुसलो—यही तो, यही तो बहू। भला यह वखत खोने का है ? मुँह बाये देखने से क्या होगा ? जैसे हो रुपया तो हाथ लेना है। फिर बाद चाय है ही, दे के सदा को निबट जाना।

सोना—ओह मेरा सिर ! सिर मेरा फटा जाता है, मौसी, सूझता नहीं क्या करूँ ! डर लगता है। वह आप ही मर रहा है। मरते मर जायगा, नाहक सिर पाप का बोझ क्यों लूँ ?

कुसलो—(तिखाई से) मरना है तो पैसा क्यों नहीं निकाल देता ! क्या साथ ले जायगा ? आखिर क्या वह किसी को मिलेगा ही नहीं ? यह क्या न्याय है ? राम न करे, इतनी रकम पानी में जाय। यह क्या पाप नहीं है ? वह अब जी के बना क्या रहा है ? क्या वह सोच-फिकर के लायक है ?

सोना—ओ मैं नहीं जानती, मौसी, नहीं जानती। पर सता तो मुझे ऐसा रक्खा है कि इस जीने से मौत भली।

कुसलो—अरी बहू, क्या तुम नहीं जानती ? साफ तो मामला है। अब चूकी तो सदा को गई। फिर बैठी पछताती रहना। वह सब रकम दे जायगा बहन को और तुम कोरी ताका करना।

सोना—ओह मौसी, सच कहती हो, बहन को उन्ने बुला भी भेजा है।—तो अभी मैं जाऊँ ?

कुसलो—अरी, जरा ठहर। पहले चाय तो रख आ। चाय देके फिर दोनों जनी तलाश लेंगी। डर की बात नहीं। रक़म सब मिल जायगी।

सोना—ओ मौसी, कहीं कुछ हो गया तो ?

कुसलो—लो, बोलो ! अरी खाली खखार में क्या रक्खा है ? माल अपना है और आँख के सामने है। तब क्या हाथ आगे से उसे निकल जाने देना चाहिए ? चल, जैसे कहूँ, करती जा।

सोना—अच्छा, जा के चाय रख आऊँ।

कुसलो—हाँ, बहू, जाओ। ऐसा करो कि पीछे पछताना न पड़े। ठीक—(सोना जाने को मुड़ती है, कुसलो वापिस बुलाती है) एक बात और सुन। देख, चन्दन से न कहियो। वह ठहरा मूरख। पुड़ियों की बात राम न करे वह जाने। जान के जाने वह क्या कर बैठे। दिल का वह कच्चा है। जानती हो पहले हाथ में अण्डा लेते उसे डर लगता था। उसे कहिओ मत। ठीक तब रहेगा जब सब होगा और उसे भनक न मिलेगी। (**डर के मारे सन्नाटा देखकर गुमसुम हो जाती है। दरवाजे में से जोधराम दीखता है।**)

जोधराम—(**दीवार पकड़े-पकड़े सरकता आता है और धीमे सुर में पुकारता है**) अरी, सुनती नहीं, कहाँ है ? ओ सोना !··· यह कौन है ? ओह, ओह, यह (**तखत पर धब्ब से गिर पड़ता है।**)

सोना—(कोने के पीछे से कदम बढ़ा के आती है) यहाँ बाहर क्यों आ गए! एक जगह क्यों नहीं रहते?

जोधराम—सोना, मेमा देवकी को बुलाने···ओह मेरा दम···आह, मौत क्यों नहीं आती!

सोना—मेमा को कहाँ वक्त था? अभी उसे तालाब पर कपड़े लेके भेजा है। ठहरो, तैयार होकर मैं ही जाती हूँ।

जोधराम—तो छोटी को भेज दे। है कहाँ? ओह, मेरी हालत खराब है। अब के तो मर के ही छूटना है।

सोना—उसे बुला तो भेजा है।

जोधराम—वह है कहाँ?

सोना—जाने कहाँ गई है, रांड।

जोधराम—ओ सोना, रानी मैं क्या करूँ? अब सहा नहीं जाता। भीतर आग जल रही है, जैसे भट्टी। जैसे कोई फलीता जलाता हो। कुत्ते की तरह मरने को मुझे क्यों छोड़ दिया है, सोना! कोई पानी पूछने को नहीं। ओह, छोटी को बुला दे।

सोना—लो, आई। नन्दी, अरी जा, बापा को देख।

[नन्दी दौड़ी आती है, सोना मकान के पिछवाड़े जाती है।]

जोधराम—सुन नन्दी, जा ओह···देवकी बुआ के जा। कहियो बापा ने बुलाया है। फ़ौरन बुलाया है। अभी आए, अभी।

नन्दी—अच्छा।

जोधराम—अरी, सुना? कहियो, तुरत आय। कहियो, मैं मर रहा हूँ। ओह!

नन्दी—(चद्दर डाल के) मैं अभी गई। (दौड़ जाती है)

कुसलो—(आँख मारकर) देखो, अब है मौका। झपट के जाओ कमरे में, और अँगुल-अँगुल छान देखो। देखना, कोई कोना या कुछ न

बच्चे। समझी ? ऐसी कि क्या बिज्जू हो। उलट-पलट, ऊपर-तले—सब कहीं। इधर मैं उसकी तलाशी लिए लेती हूँ।

सोना—(कुसलो से) तुम पास होती हो तो मुझमें हिम्मत रहती है। है ! (दरवाजे के पास जाकर जोधराम से) अजी, तुम्हें जरा चाय न कर दूँ ! यह माँ कुसलो आई हैं, अपने बेटे को देखने। उनके साथ एक घूँट ले लेते।

जोधराम—अच्छा। कर दो। (सोना घर के अन्दर जाती है ! कुसलो दरवाजे तक आती है।) जयराम, राजी हो ?

कुसलो—(झुककर) दया है। तुम्हारा क्या हाल है, भैया ? ओह बीमारी चले ही जाती है। तुम्हारी मेहरबानी मैं नहीं भूलूँगी। और तुम्हारे लिए मेरे बूढ़े को बड़ा सोच है। उन्होंने कहा, जाओ, देखके आओ, जोधराम चौधरी की कैसी तबीयत है। और तुम्हें जयरामजी की कहा है। (फिर झुकती है)

जोधराम—मेरा तो काल आ गया है।

कुसलो—हाँ भैया, यह मेरी आँखें देख तो रही हैं। काया है, तहाँ काल भी है भैया। सूख-सूख कर कैसे हो गए हो ! अब क्या रहा है, भैया। सच रोग ने एकदम खोखला कर डाला है।

जोधराम—मेरी आखिरी घड़ी आ गई है।

कुसलो—तुम जानो जोधराम, भगवान का किया होता है। उसका ही एक नाम है। तुमने गंगाजली तो ली है न ! और ऐसे में धरम-पुन्न हो जाय वही साथ रहता है। रामनाम का परताप, जो हो जाय थोड़ा। पर फिकर न पालना। स्त्री तुम्हारी समझदार है। क्रिया-करम सब भली भाँति होगा। और तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिए कुछ बाकी नहीं रखा जायगा। हैसियत के साथ सब होगा, भैया, फिकर मत रखना। स्त्री पीछे तुम्हारे सब देखभाल लेगी और नेक नाम चलायगी।

जोधराम—ओह, कैसी नेकनामी ! भगवान् जाने, सोना की मत चंचल है। अभी वह नादान है। मैं सब जानता हूँ। मेमा मूरख है और उमर की सयानी है। मैंने तो गिरस्ती जोड़-जाड़ के रखी। वह कौन संभालेगा, यही सोच है। (झींकता है)

कुसलो—रुपये पैसे की बात है न ? सो तुम कह-सुन जासकते हो।

जोधराम—(घर के अन्दर सोना को पुकार कर) अरी, नन्दी गई ?

कुसलो—(स्वगत) वह देखो, याद किया तो बहन को !

सोना—(अन्दर से) वह तभी गई। तुम अन्दर आओ न। सुना, मैं सहारा देके लिए चलती हूँ।

जोधराम—अरी, जरा तो मुझे यहाँ बैठ लेने दो। आखिरी बार है। अन्दर घोट लगती है। जाने क्या हो रहा है, कलेजे में आग जल रही है, आग—अंगारे···ओह, जो मौत आ जाती !

कुसलो—भैया, भगवान् जब उठाता है तब उठना होता है। जिन्दगी और मौत भगवान् के हाथ है। भैया जोधराम, मौत का भी विशवास नहीं कर सकते। क्या जाने तुम अब भी उठ खड़े हो जाओ। हमारे गाँव में एक आदमी था, बस यही हालत थी। मरता-मरता हो रहा था···

जोधराम—नहीं। मैं जानता हूँ, आज मेरा मरन है। जानता हूँ, अन्दर जानता हूँ। (पीछे कमर गिरा के लेटता है और आँख मूँदता है)।

सोना—(आती है) अच्छा, तो तुम अन्दर चल रहे हो कि नहीं ? एक जन तो तुम्हारे लिए खड़ा है और तुम—अरे सुनते नहीं—अजी, ओ जी !

कुसलो—(अलग जाकर ऊँगली के इशारे से सोना को बुलाती है) क्या रहा ?

सोना—(उतरकर दरवाजे के पास आती है) नहीं मिला।

कुसलो—सब जगह देखा ? फर्श के नीचे ?

सोना—हाँ, वहाँ भी नहीं। तिदरी में शायद हो। कल मैंने उसे वहाँ जाते देखा था।

कुसलो—तो जा, जा, देख। अंगुल अंगुल देख, कोना-कोना। सब जगह ऐसी कर डाल कि जुबान से चाटी हो। आज का दिन वह पार नहीं करेगा। मेरे भी आँखें हैं। नह पीले पड़ गए हैं और रंग राख हो रहा है—पक्की बात है—आज-आज में खत्म हो लेगा। चाय हुई?

सोना—पानी उबाल पे आ गया है।

चन्दन—(दूसरी तरफ से दरवाजे तक आ जाता है, और जोधराम को नहीं देखता है, कुसलो से) ओ माँ, क्या हालचाल है? घर पे सब राजी खुशी?

कुसलो—भगवान् की दया है बेटा, वहाँ सब राजी हैं और कोई कष्ट नहीं है।

चन्दन—अच्छा, और मालिक का क्या हाल है?

कुसलो—शिश्-शिश्! वह बैठे हैं। (दरवाजे की तरफ उंगली दिखाती है।)

चन्दन—तो बैठा रहने दो, मुझे क्या?

जोधराम—(आँखें खोलता है) चन्दन है! ओ चन्दन, यहाँ आओ।

[चन्दन आता है, सोना और कुसलो फुसफुसाकर बातें करती हैं।]

जोधराम—ऐसी जल्दी लौट आए?

चन्दन—जुताई हो गई।

जोधराम—पुल पार का वह टुकड़ा कर दिया?

चन्दन—वह तो दूर बहुत पड़ता है।

जोधराम—दूर! और घर से पास पड़ जायगा? अभी हाल जाओ, उसे पूरा करो। चाहते तो लगे हाथ दोनों कर सकते थे।

[सोना, अप्रगट पास एक तरफ खड़ी सुनती है।]

कुसलो—(पास आकर) बीरन मेरे, मालिक का काम मुस्तैदी से करना चाहिए। वह बीमार हैं, तुम्हारा ही उन्हें भरोसा है। तुम्हें ऐसे उनकी सेवा करनी चाहिए जैसे बाप की। मैं हमेशा समझती रही हूँ कि उनके काम में तुम कुछ बाकी उठा नहीं रखते होंगे।

जोधराम—हाँ···ओह···बीज के आलू निकाल लेना। औरतें जाके उन्हें छाँट देंगी।

सोना—(अलग) डरो नहीं, मैं नहीं चली जाने वाली हूँ। सब समझती हूँ। वह सब किसी को फिर बाहर भेजे दे रहा है। जरूर रकम इस वक्त उसके पास है, और कहीं छिपाने के इरादे में हैं।

जोधराम—नहीं तो···ओह···बोने के वक्त सब सड़ जायँगे, तो क्या होगा?···नहीं, नहीं। (उठता है)

कुसलो—(दौड़कर जोधराम को सँभालती है) अन्दर चलोगे? लो, ले चलूँ?

जोधराम—हाँ! (रुकता है)

चन्दन—(गुस्से में) तो?

जोधराम—फिर मैं न मिलूँगा, भैया···आज ही मेरी मट्टी लग जायगी। चन्दन, भगवान् के नाम पे मुझे माफ कर देना। सब कसूर मेरे माफ़ करना। मैंने कुछ कहा हो···मन···बचन···काया···के जाने क्या कसूर मुझसे बने होंगे···सब माफ करना भाई···

चन्दन—माफ! मैं खुद अधर्मी हूँ।

कुसलो—देखो, ऐसे समय कुछ दया-भाव रखना चाहिए, मेरे बीरन!

जोधराम—चन्दन, भगवान् के लिए मुझे माफ कर देना (रोता है।)

चन्दन—(भीगकर) भगवान् की तुम्हें माफी है, दादा। मुझे कुछ नहीं है, कोई शिकायत नहीं है। मेरा तुमने सदा भला चेता, कोई बुराई नहीं की। माफी तो मैं तुमसे मांगू। कसूर मैंने ही तुम्हारे ज्यादे किये

होंगे। (रोता है)

[जोधराम रोता-सुबकता अन्दर जाता है, कुसलो सहारा देती है।]

सोना—ओह, मेरा सिर! नाहक तो बहन को उसने बुलाया नहीं है। (चन्दन के पास आती है) तुम कहते थे रकम फर्श के नीचे है। वहाँ तो नहीं है।

चन्दन—(जवाब नहीं देता, बल्कि रोता है) मेरा उन्होंने कभी बुरा नहीं चेता। भलाई के सिवा कुछ नहीं किया। और मैंने बदले में क्या करके रक्खा?

सोना—बस हुआ। रकम कहाँ है?

चन्दन—(गुस्से में) मुझे क्या मालूम? तुम जानो तुम्हारा काम।

सोना—ओहो, दिल ऐसा नरम कब से हो गया है?

चन्दन—उन्हें देख के बड़ा दुःख होता है कि...ओह, कैसे वह रोने लगे। ओ राम!

सोना—और सुनो, इनको तरस आ रहा है! आखिर तरस खाने को कोई तो मिला। एक ही रही, वह तो इन्हें कुत्ते की तरह दुतकारा किये। और अभी जो घर से निकाल बाहर किये दे रहे थे। यह नहीं कि जरा मुझ पर ही तरस लाते।

चन्दन—तुम पर तरस! किस लिये?

सोना—वह मर गया और रकम दबी रह गई, तो?

चन्दन—डरो नहीं, दबी नहीं रह जायगी।

सोना—ओ चन्दन, उन्ने देवकी को बुला भेजा है। सब उसे ही दे जायगा। हमारी फिर दुर्गत ही है। सब उसके हाथों गया तो हम किस पे जियेंगे। वह फिर हमें घर से निकाल बाहर न करेगी! अरे, अभी कोशिश करके कुछ कर-धर लो। तुम कहते थे, कल रात वह तिदरी में गया था!

चन्दन—हां-हां, वहां से आते मैंने देखा था। पर रकम कहां धरी है

सो कौन जाने ?

सोना—ओह, मेरा सिर। जाओ, वहाँ देखो।

[चन्दन एक ओर हटता है]

कुसलो—(घर से बाहर दरवाजे की सीढ़ियों पर सोना चन्दन के पास आती है) जाओ नहीं कहीं। रकम उसके तन पे ही है। गले में एक डोरे से लटका रक्खी है।

सोना—ओह, मेरा सिर! मेरा सिर!

कुसलो—अभी जो चौकस न रहीं तो बहू, फिर हवा ही खाना। कहीं बहन आगई तो बस, सब चौपट ही है।

सोना—सचमुच, वह आई तो यह सब उसे ही दे मरेगा। करूँ क्या ? ओह, मेरा सिर!

कुसलो—करे क्या ? क्यों! जाके देख, पानी उबल आया होगा। बनाई चाय, प्याले में डाली और फिर (कान में फुसफुसाती है) ऊपर से पुड़िया बुरक दी। चाय पीकर चुका नहीं कि हमने अपना काम किया। डर मत। कुछ कहने को वह रही न जायगा।

सोना—ओः मुझे डर लगता है!

कुसलो—डर का वक्त नहीं है, न बात का। जीवट का वक्त है। ले, जा। आई तो मैं इतने देवकी को रोक रक्खूंगी। समझ गई न! भूलना नहीं। कबजे की रकम फिर यहाँ ले आना। चन्दन उसे छिपा देगा।

सोना—ओह, मेरा सिर! मेरा सिर, कैसे मैं···मैं कैसे···

कुसलो—बोल नहीं। न सोच में वक्त गँवा। जो कहा, कर। चन्दन—

चन्दन—क्या है ?

कुसलो—तुम यहीं रहो। बैठ जाओ। जाने क्या जरूरत पड़े।

चन्दन—(हाथ हिलाता है) ओह, ये औरतें जो न करें! आदमी को यों घुमाती हैं जैसे पेंच। नास जाय उनका। मैं तो सच जाके अपने बीज

के आलू ढोता हूँ।

कुसलो—(उसे बांह से पकड़ती है) कहां जाते हो! यहीं रहो। [नन्दी आती है।]

सोना—हां, तो ?

नन्दी—बुआ अपनी बेटी की बगिया में थीं। कहा, आती हूँ।

सोना—आती है!···फिर कैसे होगा ?

कुसलो—मेरा कहना करोगी तो अब भी वक्त है।

सोना—क्या करूँ! पत्थर करूँ ? मेरी तो समझ नहीं आता। सिर चक्कर खा रहा है। नन्दी बेटी, जाओ, गाय-बछिया को देखना कि छूट के भागें नहीं। सुना ?···ओ राम, मुझ में तो हिम्मत नहीं है।

कुसलो—जा, पानी तो देख कि उबला ?

सोना—ओह, मेरा सिर, मेरा सिर। (जाती है)

कुसलो—(चन्दन के पास आकर) अच्छा बीरन, (उसके बराबर ही बैठ जाती है) अब तुम्हारी बाबत भी सोचना चाहिए। है न! कहीं—

चन्दन—मेरी बाबत!

कुसलो—हाँ भैया, तुम्हारी। कुछ सोच है कि तुम्हारी जिन्दगी कैसे चलेगी ?

चन्दन—जिन्दगी कैसे चलेगी ? क्यों ? दूसरे रहते हैं, मैं भी रहूँगा।

कुसलो—तुम्हारा बूढ़ा तो, दीखे है, आज मर लेगा।

चन्दन—मर जायँगे तो भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें। उससे मुझे क्या ?

कुसलो—(बोलते समय दरवाजे की तरफ देखती जाती है।) अरे, मेरे बीरन् भैया, यों नहीं! जो जीते हैं उन्हें जीने के बारे में सोचना होता है। भैया, इन बातों में गाँठ की अकल चाहती है, अकल! क्या सोचते हो ? तुम्हारी फिकर में मैं सब कहीं घूमी हूँ। पैरों की चिन्ता मैंने

नहीं रखी, तेरी चिन्ता रक्खी है। वक्त आए पर मुझे भूलना नहीं, भला ?

चन्दन—तुम आखिर इतनी हैरान क्यों होती हो ?

कुसलो—क्यों ? तेरे मामले के लिए, भैया, तेरी भलाई के लिये। वक्त पर न चेतो तो आगे कुछ नहीं मिलता। बिरधीलाला को तो जानते हो ! उनसे भी मैं मिली। उसी रोज़ की तो बात है। एक और भी काम था। सो मैंने बैठके बातें कीं और फिर असल पर आई। बोली—हाँ, बिरधी चाचा, यह तो बताओ कि ऐसे मामले को कैसे पार डाला जाय ! मैंने कहा—समझो, एक साहूकार है। उसने दूसरा ब्याह किया। और समझो ले-दे के दो उसकी लड़कियाँ हैं। एक पहली बीवी से, एक दूसरी से। तब बताओ कि अगर किसान मर जाय और कोई दूसरा उसकी बेवा से ब्याह करले तो सब घरबार और जायदाद उसकी होगी कि नहीं ? मैंने पूछा कि बिरधी चाचा, बताओ, फिर दोनों लड़कियों को ब्याह देने के बाद वह घर का मालिक बन के रह सकता है कि नहीं ? बिरधी चाचा ने कहा—हाँ, हो सकता है। पर कहा कि खासी दिक्कत-कोशिश का काम है। पर पैसा हो तो बात बन सकती है। और जो पैसा नहीं तो बात यों भी फिज़ूल है।

चन्दन—**(हँसता है)** यह तो पक्की बात है कि पैसा है तो सब है। कौन पैसे का नहीं है ?

कुसलो—उसके बाद सब बात, बीरन, मैंने सूधे-साफ उसे बता दी। उस पर बिरधी पटवारी ने कहा कि पहली बात तो यह कि गाँव की खतौनी में तुम्हारे बेटे का नाम दरज होगा। उसमें कुछ खर्चा आयगा। चौधरियों को खुश किया जायगा। वे लोग दस्तखत जो करेंगे। कहा कि सब काम कायदे से होता है, बेक़ायदे थोड़ा ही। यह देखो, **(रुमाल खोलती है और एक कागज निकालती है)** पटवारी ने यह कागज लिख दिया है। पढ़ के देखो, तुम तो इलमदार हो। **(चन्दन पढ़ता है।)**

चन्दन—यह तो पक्का दस्तावेज़ है। सीधी तो चीज़ है। चौधरी के

दस्तखत करने की बात है। उसमें कौन बहुत अकल चाहिए।

कुसलो – लेकिन चौधरी ने एक बात खास कही है। कहा कि पहली मूल की बात यह कि रुपया औरत हाथ से न जाने दे। कब्जा पहले ही नहीं कर लिया तो पीछे कुछ न चलेगा। असल कानून कब्जा है। सो बीरन, अपने को चौकस हो के चलना चाहिए। बात अब तन्त पर है।

चन्दन—तो मुझे क्या! पैसा उसका है—वह चौकस रहे।

कुसलो—ओह, कैसे मूरख हो तुम भैया! भला औरत मुकदमों-मामलों की बात क्या जाने? रकम हाथ लग गई तो आगे बन्दोबस्त उससे होगा? औरत की बिसात कितनी? तुम ठहरे मरद। तुम उसे दबा सकते हो, सब काम कर सकते हो। देखो, कुछ हुआ तो उसका तिया-पाँचा कर सकते हो।

चन्दन—ओह, तुम औरतों की अकल है कि जाल है!

कुसलो—जाल की क्या बात है? माल मुट्ठी में रहा तो औरत फिर मुट्ठी से बाहर न होगी। उसने जो कभी इधर-उधर किया तो रास हाथ में रहेगी। जरा खींचने की देर है कि—

चन्दन—ओह, हटाओ—मैं जाता हूँ।

सोना—(**चेहरा बिलकुल पीला है, घर से निकलकर, पिछवाड़े से कुसलो के पास आती है**) सब वहीं मिला, बदन पर। साथ लेती आई हूँ, यह रहा। (**दिखाती है कि ओढ़नी के भीतर हाथों में थमा है वही है।**)

कुसलो—झट चन्दन को दे दे। वह छिपा देगा। चन्दन, यह ले तो लो, और कहीं छिपा आओ।

चन्दन—अच्छा, लाओ, दो।

सोना—ओह, मेरा सिर! एँ-हाँ, मैं आप ही लुकाए देती हूँ। (**दरवाजे की तरफ जाती है।**)

कुसलो—(**उसे बाँह से पकड़ कर**) कहाँ जाती है? अरी, यहाँ

पीछे मुझे पूछेंगे। और देवकी आती होगी। दे दे चंदन को जल्दी। वह ठीक रख देगा। वह जानता है क्या करना है। सुना, ओ गधी की बच्ची—

सोना—(अनिश्चय में रुकती है) ओह, मेरा सिर, मेरा सिर !

चंदन—लाओ, दो भी। मैं छिपा-छिपू दूँ।

सोना—क्यों—कहाँ ?

चंदन—(हँसकर) डरती हो ?

सोना—(मेमा आती दीखती है) ओह मेरा सिर ! (घबराई-सी पोटली थमा देती है) चंदन, देखना कहीं—

चंदन—डर क्या है ? ऐसा छिपा दूँगा कि मुझे भी न मिले। (जाता है)

सोना—(भयभीत) ओह, मौसी, जो कहीं बात···

कुसलो—अच्छा, वह—खतम हो गया न ?

सोना—यही लगता है। मैंने जब रुपया बदन पे से खोला तो वह हिले तक नहीं।

कुसलो—अन्दर जाओ, वह मेमा आई है।

सोना—लो, पाप मैंने भरा और माल दूसरे के हाथ···

कुसलो—बस, हुआ। जाओ। वह देवकी आ रही है।

सोना—ओ, मैंने उसका इतबार किया है। जाने आगे क्या होगा ? (जाती है)

[देवकी दूसरी तरफ से प्रवेश करती और मेमा को मिलती है।]

देवकी—(मेमा से) मैं यहाँ पहले ही आ जाती, पर क्या बताऊँ, अपनी बेटी के यहाँ गई थी। अच्छा अब हाल क्या है ? क्या एकदम अन्त काल है ?

मेमा—(कपड़े नीचे रखती है।) मालूम नहीं, मैं तो कपड़े लेके ताल गई थी।

देवकी—(कुसलो की तरफ इशारा करके) वह कौन है ?

कुसलो—मैं मीरपुर की हूँ, बीबी। वहाँ का चंदन है न, उसकी माँ हूँ। राम भला करे, वह बिचारे तुम्हारे भाई तो छीन हुए जा रहे हैं। ऐसे छीन कि···अभी-अभी आप से बाहर उठ आए थे। बोले—मेरी बहन को बुला दो, देवकी को बुलाओ, कारन मैं···लेकिन बीबी, लगता है अब बाकी नहीं रहे।

सोना—(चीख देकर बाहर भागी हुई आती है और एक खम्भे से चिपटकर खड़ी, जोर-जोर से रोती है।) हायरे, मुझे किस पर छोड़ गए···हाय···मैं अब कहीं की नहीं रह गई, हाय···मुझे उजाड़ गए रे··· कम्बखत रांड़ मैं अब कहाँ रहूँगी, हाय आँखें तुमने क्यों मींच ली, कहाँ सिधार गए तुम , हाय···

[पड़ोसिन आती है। कुसलो और पड़ोसिन हाथ देकर सोना को सँभालती हैं। मेमा और देवकी घर के अन्दर जाती हैं। एक भीड़ जमा हो जाती है।]

भीड़ में से एक आवाज—औरतों से कहो कि मुर्दे को नीचे लें।

कुसलो—(कुर्ते की बाँह चढ़ा कर) थोड़ा कहीं यहाँ पानी है ? चूल्हे पे पानी गरम दीखता है। चलूँ, मैं भी कुछ मदद सहारा दूँ।

[पर्दा गिरता है।]

अंक ३

[पहले अंक वाला ही दृश्य। सरदी की ऋतु। पिछली घटना को नौ महीने गुजर गये हैं। सोना सादे कपड़ों में बैठी चरखा कात रही है। नन्दी अलाव के पास बैठी है।]

मंगल—(आता है और आराम के साथ अपने बाहर के कपड़े उतारता है।) ओ भगवान्, मालिक क्या अभी घर नहीं आये ?

सोना—क्या ?

मंगल—मैंने पूछा, बाबू, हमारे मालिक शहर से अभी लौट के नहीं आये ?

सोना—नहीं।

मंगल—मौज उड़ रही होगी, और क्या ? ओ भगवान् !

सोना—काम हो गया ? बाड़े के पिछवाड़े सब ठीक कर दिया ?

मंगल—नहीं तो क्या ? एकदम ठीक दुरुस्त। भूसा सब एक तरफ रख दिया। काम मैं अधूरा पसन्द नहीं करता, तुम जानो। हे भगवान्, हे दयालू। (हाथ पर से दो-एक भुस के तिनके चुनता है।) वक्त हो गया। उन्हें आना चाहिए।

सोना—उन्हें जल्दी है आने की ? गाँठ में पैसा है सो उड़ाते होंगे रंग में।

मंगल—सच है बहन, पैसा हो तो क्यों न रंग उड़े। अच्छा, मेमा भी तो गई है बस्ती में। वह किस वास्ते ?

सोना—उसी से न पूछो। मेरी जूती जाने कि कलमुँही क्यों गई शहर ?

मंगल—शहर ? अरी बहन, पास गरमाई हो तो शहर में भला क्या चीज नहीं मिल सकती ? ओ, भगवान्!

नन्दी—अम्मा, मैंने अपने कानों सुना। कहा, मैं एक शाल दूँगा। सच, कहा। देख लेना जो न कहा हो। फिर कहा, 'अच्छा चलो, तुम्हीं मन-पसन्द छाँट लेना।' और वह नए कपड़े पहन के तैयार हो गई। गोट की ओढ़नी आढ़े ली, और वह मखमल की कुर्ती। सच मान, माँ।

सोना—हाँ जी, वैसी लड़की की लाज क्या, द्वार तक। देहरी लांघी कि शरम हया सब दूर, बेहया कहीं की!

मंगल—अरी, बहन, शरम का क्या उठता है ? पैसा है तब तक चैन कर लो, फिर—ओ भगवान्। अभी तो ऐसी अबेर नहीं है। (सोना जवाब नहीं देती) मैं इतने जरा गरमा लूँ। (अलाब के पास जाकर तापता है।) ओ भगवान्, दयानिधान।

पड़ोसिन—(आती है) तुम्हारा मरद अभी वापिस नहीं आया ?

सोना—नहीं।

पड़ोसिन—अब तो देर हो गई। वक्त शहर का गया। कहीं रास्ते में कलवार के यहाँ तो नहीं रह गया ? वह मेरी बहन चन्दी कहती थी कि कलवार की दुकान के आगे शहर से लौटती बहुत सी गाड़ियाँ खड़ी थीं।

सोना—नन्दी, ओ नन्दी, सुना नहीं ?

नन्दी—हाँ।

सोना—जा तो, दौड़ के जा। देख कहीं वहीं तो दारु पीता नहीं रह गया ?

नन्दी—(जाने को कपड़े पहन कर तैयार होती है।) अच्छा।

पड़ोसिन—और मेमा भी साथ गई है ?

सोना—नहीं तो क्या इकला जाता ? उसी के खातिर तो शहर में उसे बहुत काम निकल आया है। क्यों नहीं, तहसील में रुपया जमा करना है और दाखिल खारिज है। सब यह उस कुलच्छनी की करतूत है।

पड़ोसिन—(सिर हिलाती है) यह तो कुढंग है।

[कुछ देर शान्ति रहती है।]

नन्दी—और जो वहाँ हुए तो क्या कहूँ ?

सोना—बस देख आ कि हैं कि नहीं, जल्दी।

नन्दी—अच्छा पलक मारते आई। (काफी देर सब चुप रहते हैं।)

मंगल—(दहाड़ के से स्वर में) ओ भगवान्, दयानिधान।

पड़ोसिन—(चौंक कर) ए राम, मैं तो डर गई ! ये कौन हैं ?

सोना—मंगल है, अपना मंगल।

पड़ोसिन—राम रे, कैसा डरा दिया ! मैं तो भूल ही गई थी। अच्छा सोना, सुनती हूँ, कहीं मेमा के रिश्ते की बातचीत चल रही है। ठीक है ?

सोना—(चरखा छोड़कर पीढ़े पर आ बैठती है) हाँ, मीरपुर वालों ने बात तो उठाई। पर मालूम होता है वहाँ भी यहाँ की हवा उड़कर पहुँच गई है। बात शुरू हुई कि एकाएक रुक गई। तब से खतम। तुम जानो, बीबी, ऐसे में कोई कैसे—

पड़ोसिन—और हरी के नगरा के भी तो आए थे न कोई ?

सोना—बात उन्होंने भी छेड़ी। फिर मामला आगे नहीं बढ़ा। वे तो अब यहाँ का जिकर तक सुनने को तैयार नहीं हैं। लड़की का मुँह देखना अब उन्हें नहीं गवारा है।

पड़ोसिन—उमर हो गई बीबी, ब्याह अब टलना नहीं चाहिए।

सोना—उमर कहो कि सवा उमर। बीबी, मैं तो एक अधीर हूँ कि कैसे कहीं उसे दूँ और हाथ धोऊँ। घर से तो टले। पर मामला बैठता ही नहीं। न वह चाहे, न लड़की चाहे। तुम जानो, अभी उसका जी मेमा के जोबन

से भरा कहाँ है ?

पड़ोसिन—दइया रे, क्या-क्या आदमी में गुण होते हैं ? भला, सोचो तो, सौतेला सही, पर वह है तो बाप ?

सोना—ऐ बीबी, क्या पूछती हो ? मुझे तो अब कोई गिनती में ही कौन लेता है ? मेरी तो ऐसी गत कर दी है कि क्या कहूँ ? मैं भी मूरख निकली। आँख खोली नहीं, देखा नहीं, पहचाना नहीं और उसे ब्याह बैठी। मुझे तो गुमान न था, पर दोनों में तभी साठ-गाँठ चल रही थी।

पड़ोसिन—ए राम, सच ?

सोना—नहीं तो क्या झूठ ? सो गाँठ गँठती गई। बात बढ़ से बढ़ती ही गई। देखा, दोनों मुझसे आँख बचाने लगे हैं। ओह, बीबी, अब क्या कहूँ ? मेरा जनम तो भार हो गया है। यह नहीं कि मैं उसे प्यार नहीं करती—

पड़ोसिन—सो तो है ही।

सोना—पर ऐसा कपट, ऐसा बरताव भला कैसे सहन हो जाय ? ओ, अपना घाव मैं ही जानती हूँ।

पड़ोसिन—ठीक तो है, बीबी। और सुनती हूँ, हाथ भी वह तुम पर बहुत छोड़ने लगा है।

सोना—हाँ, बहन कुछ पूछो मत। वक्त था दो-एक घूँट वह चढ़ा तो लेता था, पर मुझसे मीठा बोलता था। मार तो पहले भी बैठता था, पर मुझे जी से चाहता था। पर अब तो यह हाल है बीबी, कि जरा में गुस्सा हो आता है। और आया गुस्सा कि फिर जो हाथ लगा—कुछ बाकी नहीं छोड़ता है। उसी रोज की तो बात है कि दोनों हाथों से मेरे बाल उसने ऐसे कसके पकड़े कि छुटाना मुश्किल हो गया। बाबा रे बाबा। और वह लड़की है कि एकदम साँपन। इस धरती पर ऐसी जहरीली भी नागिन है, मैं न जानती थी।

पड़ोसिन—देखती हूँ, बीबी तुम बड़ी विपता में हो। इतना सहारना कोई खेल नहीं है। देखो न कहाँ दो कौड़ी के भिखारी को तुमने सरन दी, और वही तुम्हें अब ऐसा नाच नचाए वक्त पर ही ! भला तुमने रास क्यों नहीं खींच ली ?

सोना—ओह, जो मैं, बीबी, इस दिल के फेर में न पड़ जाती। वह पहला मरद, सख़्त वह भी था। पर मन चाहे वैसे मैं उसे झुका लेती थी। पर इससे तो मेरी पार बस नहीं जाती। इसे देखती हूँ कि मेरा रोस बैठ जाता है। इसके आगे मुझे इतनी भी हिम्मत नहीं रहती, भीगी बिल्ली बन जाती हूँ। और फिर तुम—

पड़ोसिन—तुम पे तो, बीबी, जादू किया दीखता है। सुना, कुसलो जादू-टोना किया करती है, उसीकी करतूत मालूम होती है।

सोना—हाँ, बहन, मैं भी कभी ऐसा ही सोचने लगती हूँ। क्या बताऊँ बहन, कभी मन कैसा होता है। कभी तो यह होता है कि उसे चीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ। पर सामने आता है, और आँख उसपे जाती है, तब फिर दिल जवाब दे जाता है।

पड़ोसिन—यह तो सचमुच तुम पे टोना-जादू खेला है किसी ने। वैसे किसी को सुखाने में देर तो भी लगती है। देखो न, अपने तन को देखो, सूख के पहले से आधी भी नहीं रही।

सोना—क्या पूछती हो, बहन, कोई जीने में जीना है ? और उस बेहया मेमा को देखो, कैसी मैली, कुढब, कुरूप लड़की थी। और अब वाह तेरे नखरे। वह ठाट कि क्या कहना। यह सब आया कहाँ से ? उसी ने तो भर-भर के दिया। कैसी सुरख और फूल के कुप्पा हो गई है कि उफनी आती हो। और यों मूरख है तो क्या अपने को मालकन गिनती है। कहती है, मैं हूँ सब कुछ, "घर मेरा, माल मेरा, जमीन मेरी। बाप मुझे ही तो उससे ब्याहना चाहते थे। और उसकी जीभ है कि बिस का तीर। राम-राम, गुस्सा

जब चढ़ता है तो साक्षात् चण्डी का रूप हो जाती है कि जाने क्या न विध्वंस कर डालेगी।

पड़ोसिन—अब देखती हूँ बहन, कि तुम्हारी जिन्दगी भी क्या है। पर लोग हैं जो डाह करते हैं। कहते हैं तुम अमीर लोग हो। लेकिन अमीरी से आँसू तो नहीं रुकते हैं।

सोना—डाह को यहाँ क्या रहा जाता है, बहन। धन की बात करती हो तो वह जरा देर में उड़न-छू हुआ जाता है। देखती तो हो, क्या खुले हाथ रुपया उड़ाया जा रहा है!

पड़ोसिन—लेकिन बीबी, रुपया तो सब तुम्हारा था। तुम ऐसी भोली क्यों बन गईं कि सब दे डाला?

सोना—असल भेद तुम नहीं जानतीं, बहन, बात यह है कि मुझसे एक बड़ी भूल हो गई, बड़ी भूल।

पड़ोसिन—मैं तुम्हारी जगह होती तो सूधी अदालत जाती। जाकर दावा ठोंक देती। पैसा तुम्हारा, वह कौन उड़ाने वाला होता है। ऐसा कोई हक नहीं है।

सोना—हक की आजकल कौन सुनता है, बहन?

पड़ोसिन—देखती हूँ, बीबी, कि तुम तो बड़ी निबल हो गई हो। मन तक में जोर नहीं रहा।

सोना—सच है, बिलकुल निबल हो गई हूँ। उसने तो मुझे फन्दे में ले लिया है। मैं तो मुट्ठी में हो गई हूँ कि खुद कुछ भी नहीं सूझता है! ओह, यह मेरा सिर!

पड़ोसिन—(सुनती है) कोई आता दीखता है।

[दरवाजा खुलता है और रिसाल प्रवेश करता है]

रिसाल—(सामने कृष्ण की तस्वीर देखकर प्रणाम करता है, पैर की धूल झाड़ता है, और चादर उतारकर कन्धे पर लेता है) सब कुसल

मंगल ? क्या हाल है ? कुसल हो बेटी ?

सोना—कब आये, बापा ? सीधे घर से आ रहे हो ?

रिसाल—हाँ, कब से सोचता था कि क्या नाम चलूँ। चलकर बेटे और क्या नाम बहू को देख आऊँ। नहीं-नहीं, क्या नाम ऐसी बहुत सबेर में नहीं चला। खा-पी के चला। पर क्या नाम रस्ता खराब है। सो चलते-चलते क्या नाम अबेर हो गई। और चन्दन, क्या नाम, घर पे नहीं है ? नहीं है ? चन्दन, क्या नाम, यहाँ नहीं है ?

सोना—नहीं, शहर गये हैं।

रिसाल—(तख़्त पर बैठता है) मुझे उससे काम है। क्या नाम उस दिन मैंने कहा था, क्या नाम, क्या कहा था ? हाँ कि घोड़ा, क्या नाम, अब काम का नहीं रहा है। सो दूसरा घोड़ा चाहिए, क्या नाम, कोई दूसरा घोड़ा। समझी ? उस वास्ते सोचा क्या नाम चलो मिल आऊँ।

सोना—हाँ, मुझे बताते तो थे। वापिस आ जायँ तो बात कर लेना। (चौके की तरफ जाती है) इतने बैठो, कुछ खा-पी लो। वह जल्दी आते होंगे। मंगल, ओ मंगल, आओ, तुम भी कुछ खा-पी के निबटो।

मंगल—ओ भगवान्, दया-निधान !

सोना—सुना ? खाने आओ।

पड़ोसिन—अच्छा, मैं अब चलूँ। जयरामजी की (जाती है)

मंगल—(उठकर आता है) लो, मुझे ऊँघ ही आ गई। जाने कब आ गई। ओ भगवान् दया-निधान। एँ दादा रिसाल हैं क्या ? कहो राजी खुशी ?

रिसाल—ओह, मंगल ! क्या नाम तुम यहाँ कहाँ ?

मंगल—मैं यहाँ तुम्हारे बेटे चन्दन के यहाँ काम पे नौकर हूँ।

रिसाल—क्या कहा ? क्या नाम, नौकर ! मेरे बेटे के काम पे नौकर ? क्या नाम, क्या मतलब ?

मंगल—मैं बस्ती में एक सुदागर के मुलाजिम था। वहाँ जो जोड़ा, सब शुरू में फूँक दिया। सो फिर अपने पुराने काम में आ गया हूँ। घर न बार। मैं आजाद आदमी। सो आके फिर नौकरी कर ली। (मुँह बाये देखता है) ओह भगवान्, दया नि···

रिसाल—तो क्या नाम, चन्दन, वह क्या करता है? ऐसा कितना काम है कि, क्या नाम, मजूर रखता है? मजूर, क्या नाम, काहे को मजूर?

सोना—हुआ उन्हें काम? पहले ऊपर की देखभाल कर भी लेते थे। पर अब और बातों में जो मन है। सो पैसे से एक कामवाला रख लिया है।

मंगल—पैसा है तो कोई क्यों न रक्खे मजूर?

रिसाल—नहीं, क्या नाम, यह गलत है। बिलकुल गलत। क्या नाम, यह बिगाड़ की बात है। बिगाड़ना क्या नाम अपने को बिगाड़ना है।

सोना—बिगाड़ की कहते हो? उसमें कसर क्या है? बिगाड़ तो इतना हो गया है, इतना कि बेहद।

रिसाल—क्या नाम, वही मसल है। सोचो अच्छा के होवे बुरा। पैसा क्या नाम, आदमी को बिगाड़ता है। क्या नाम, हराम पन···

मंगल—भली कही, दादा। फूल के तो कुत्ता भी मस्ता आता है। आदमी की फिर क्या बात? पैसा हो तो कोई क्यों न बिगड़े? मिसाल को मैं खड़ा हूँ। अण्टी गरम थी तो मुझे क्या रंग नहीं सूझा? लगातार दिन के दिन पूरे तीन हफ्ते वह दारू पी कि एक दिन होश नहीं पकड़ा। बंडी बेच दारू पी डाली। पास कुछ न रहा तो आप सब छूट गया। अब मैंने कसम खाली है। ऊँह, नास जाय इस सत्यानासिन का।

रिसाल—ओ मंगल, वह बुढ़िया, क्या नाम, उसका क्या हुआ?

मंगल—क्या हुआ? खूब पूछा। वह अपनी जगह पहुँची, और क्या हुआ? शहर में शराबखानों पर चक्कर लगाती डोलती फिरती है। वाह,

वह क्या कम है ! एक आँख गायब, दूसरी चोट से काली, और मुँह तिर्छा। पर रहती एक बनठन के है। कभी जो होश में मिले। सदा चढ़ाये हुए, मदमस्त।

रिसाल—ऐसा सो क्यों ?

मंगल—सिपाही की बीबी का नहीं तो क्या कुछ और बनेगा ? आखिर वह अपने ठीक मुकाम पे पहुँच गई। (चुप हो जाता है)

रिसाल—(सोना से) हाँ, चन्दन, शहर कुछ क्या नाम भर-भरा के ले गया है ? कुछ क्या नाम, माल बेचने-लेने ?

सोना—(खाना परोसने की तैयारी में) नहीं, कुछ नही। डाकखाने से रुपये निकालने गये हैं।

रिसाल—(खाने को बैठता है) क्या ? पैसे का क्या नाम कुछ काम है ? कुछ काम, क्या नाम, धन्धा—?

सोना—नहीं तो। मुझे तो पैसा छूने को नहीं मिलता। बल्कि बीस-तीस हम पर उधार ही चढ़े हैं। वही बंक से लेने गये हैं।

रिसाल—लेने ? क्या नाम, क्यों लेने हैं ? आज कुछ निकाले, कल कुछ निकाल लिए, क्या नाम, ऐसे तुम जानो, सब निकल जायगा।

सोना—नहीं, यह तो ऊपर का अलग ब्याज आता है, मूल तो सब जमा रहता है।

रिसाल—मूल जमा ? क्या नाम, कैसा मूल जमा ? लेते जाओ, और क्या नाम, कहो मूल जमा है ? क्या मतलब ? नाज का एक ढेर रख दो, क्या नाम एक ढेर। एक बड़ा ढेर और क्या नाम रोज निकाल के उसमें से खाते जाओ तो, क्या नाम नाज वहाँ रहेगा ? क्या नाम जमा रहेगा ? सो यह धोखा है, साफ धोखा। क्या नाम, धोखा। नहीं तो क्या, और निकालके-नित लेते जाओ, और मूल जमा ! क्या नाम, यह धोखा है।

सोना—मैं नहीं जानती। बिरधी पटवारी ने उस वक्त तरकीब बताई

थी। कहा—पैसा बंक में रख दो, मूल का मूल रहेगा। सूद मिलेगा सो अलग। पटवारी ने यह कहा था।

मंगल—(खाने से निपट कर) ठीक तो है। मैं एक लाला के रह चुका हूँ। सब ऐसे ही करते हैं। रुपया बंक में रख देते हैं, फिर मौज करते हैं। आमदनी उसी में से होती रहती है।

रिसाल—क्या नाम, अजब बात कहते हो। मतलब, क्या नाम, रुपया कहाँ से आता है? हाँ, क्या नाम, आमदनी वह किधर से होती है?

सोना—क्यों, बंक से सूद मिलता रहता है।

मंगल—अजी तुम ठहरो। औरतों के समझने की बात नहीं है। देखो मैं सब साफ़-साफ बताता हूँ। समझने की बात है। सुन के मगज में लेना, समझे? देखो, इस तरह। तुम हो और मैं हूँ। तुम्हारे पास रुपया है और धरती मुझ पे खाली है, तुम्हारे पास रुपया भी खाली है। अब मानो मेरे पास बीज नहीं है और धरती का लगान सो देना ही है। तिस पर दिन बोआई के हैं। सो मैं क्या करता हूँ कि आता हूँ तुम्हारे पास। कहता हूँ, ओ रिसाल दादा, एक दस रुपये तो इस वक्त मुझे दे देना। फसल के बाद मैं लौटा दूँगा और तुम्हारी दया मानूँगा। इस अहसान के बदले तुम्हारा जो वह खेत पड़ा है, उसकी दोनों एकड़ जमीन पे हल चलाने की मेहनत भी कर दूँगा। अब तुम जो हो, सो जाँचते हो कि मैं खोखल तो नहीं हूँ। मान लो मेरे पास कुछ है—बैल हैं या मकान है, या कि जमीन मेरी अपनी है। यह देख के तुम कहते हो कि लो दस रुपये तो लो, पर इसके बदले तुम्हारी मेहनत मुझे नहीं चाहिए, दो-तीन रुपये मूल के अलावा और दे देना, बस ज्यादा नहीं। मैं जरूरत से लाचार ठहरा। बिना उधार मेरा चल नहीं सकता। सो मैं झुक के सलाम करता हूँ और कहता हूँ, 'आपकी दया है' और दस रुपये का नोट ले जाता हूँ। फसल हो गई और गल्ला तैयार हो गया, उस वक्त मैं उधार चुकाने आता हूँ और तब तुम ऊपर के तीन

रुपये भी धरा लेते हो।

रिसाल—हाँ, है तो। पर यह, क्या नाम, भगवान् से उलटी बात है। भगवान् को क्या नाम भुला के ऐसा करते हैं। इसमें क्या नाम ईमान नहीं है। नहीं, इमानदारी बिल्कुल नहीं।

मंगल—ठहरो तो। वही तो मैं कहता हूँ। आखिर एक ही बात है और याद रखने की है कि वैसे मुनाफे के तीन रुपये बन गये। यह समझो कि जैसे यह सोनाबाई हैं। उनके पास पैसा फालतू है और समझ नहीं आता कि उसका क्या बनायें। औरत जात, कहाँ लगाये, कहाँ नहीं। वह आती हैं तुम्हारे पास, कहती हैं, यह मेरा पैसा किसी काम में लगा दे सकते हो? तुम कहते हो, क्यों नहीं, और तुम वह ले लेते हो। अगली बोआई के समय मैं फिर तुम्हारे यहाँ आता हूँ। कहता हूँ एक दस रुपये तो और दो, दादा, मेहरबानी होगी। तुम पड़तालते हो कि मैं खोखल तो नहीं हो गया हूँ न! देखते हो कि अभी मेरे पास से निकलने को कुछ है, तो सोना की रकम में से दे देते हो। और जो मैं खाली हूँ और तुम देखो कि इन तिलों में तेल अब नहीं है, तो तुम कहोगे, 'ना भाई, जाओ अपनी राह नापो।' तब दूसरे किसी की घात में रहोगे, जिसे तुम अपना और सोना का रुपया उधार दे के उससे नफा खींच सको, समझे?—इसी का नाम बंक है। वह चक्कर एक बार चला कि चलता ही जाता है। दादा, बड़े सयानेपन की यह बात है, तुम जानो।

रिसाल—(उत्तेजित होकर) राम राम, यह क्या नाम चाल है चाल। चाल नहीं जाल है। यह क्या नाम खोटी खराब बात है। देहात में भी ऐसा करते हैं, पर क्या नाम जानते हैं कि यह पाप है। यह ढब, क्या नाम, ठीक नहीं है। जघन्न, निकरिस्ट है। लोग जो समझदार हैं, क्या नाम, सयाने हैं, वे···

मंगल—दादा, समझदार ही ज्यादा काटते हैं। बड़े फरफन्द की बात है,

दादा। और जो अनसमझ हैं, या औरत-बानी जिनके पल्ले रुपया है पर जानती नहीं कहाँ लगावें, वे ले जाते हैं बंक। वहाँ बस सयाने हुशियार लोग वह सब रकम ले लेते हैं। उससे फिर दुकान चलाते हैं और मोटे होते जाते हैं। दादा, बड़ी हुशियारी की ये बातें हैं।

रिसाल—(आह भरकर) हाँ, मंगल। पर बिन पैसे भी क्या नाम ठीक नहीं रहता। और पैसे से क्या नाम फिर बुराई होती ही है। यह फेर क्या है? भगवान् ने क्या नाम पैदा किया मेहनत को, लेकिन आदमी बंक में पूँजी डाल के क्या नाम तान चादर सोता है, और वह पूँजी आमदनी देती है। वह सोया करे, और पूँजी क्या नाम पेट भरा करे। मैं कहूँ, यह हरामखानी है। तुम जानो, यह न्याय नहीं है, क्या नाम, और हराम की कमाई है।

मंगल—न्याय नहीं है? वाह दादा, न्याय की आजकल कौन परवाह करता है? और कैसी साफ लूट है, दादा, कि चोट का दाग नहीं। तारीफ की बात है कि नहीं?

रिसाल—(आह के साथ) हाँ भाई, पर क्या नाम, वखत आ रहा है। घड़ा भर रहा है। शहर में क्या नाम, पैखाने देखो कि क्या गजब है, सब कहीं, क्या नाम खूबसूरत चीनी की टायल ही टायल। ऐसा खूबसूरत कि क्या मन्दर होगा। क्यों, काहे के वास्ते। क्या फायदा? ओ भैया, दुनिया क्या नाम भगवान् को भूल रही है? भगवान को क्या नाम वे भूल गये हैं। ऐसे भूल गये हैं कि बिल्कुल··ना-ना, बहू, बस बहुत हो गया। मैं छक गया। (उठता है)

मंगल—(तख़्त पर आ जाता है)

सोना—(खाना खाये बरतन समेटती जाती है) बाप होके बेटी के साथ—! मुझे तो कहते शरम आती है?

रिसाल—क्या नाम क्या कहा?

सोना—नहीं, कुछ नहीं।

[नन्दी आती है]

रिसाल—यह है, देखो रानी बेटी कि क्या नाम हमेशा काम में रहती है। सरदी तो नहीं लग रही बिटिया ?

नन्दी—सरदी, हाँ, लग तो बहुत रही है बाबा। तुम कब आए !

सोना—हाँ, वहाँ है ?

नन्दी—नहीं, लेकिन हरधियान वहाँ मिला था। वह भी साथ इनके शहर गया था। कहता था कि दोनों वे शहर में शराब की दुकान पे दीखे थे। कहा, बापा तो ऐसे पिये थे कि मदहोश।

सोना—कुछ खायगी ? ले, यह ले।

नन्दी—(अलाव के पास जाती है) अरे, यह तो ठण्डा पड़ा है। मेरे तो हाथ ठिरे जाते हैं। (रिसाल पैर की पट्टी खोलता है और मोज़ा बूट भी उतारता है, सोना बरतन धोती है।)

सोना—बापा !

रिसाल—हाँ—

सोना—रजनी अच्छी तरह है ?

रिसाल—हाँ, बिल्कुल अच्छी तरह। लड़की कामिन्दर है और क्या नाम हुशियार। अपने आनन्द से है खूब अच्छी तरह। क्या नाम, वह नेक है, भली लड़की, मेहनतन, और क्या नाम आँख नीचे रखके रहती है। सो बड़े आनन्द मौज से है।

सोना—और रजनी के आदमी के किसी नातेदार से हमारी मेमा के रिश्ते की बात चल रही है। तुम्हारे गाँव का तो मामला है। तुमने नहीं सुना ?

रिसाल—ओ हो, गोविन्दा ! हाँ, औरतें क्या नाम कुछ कहती-सुनती तो थीं। मैंने ध्यान नहीं किया। क्या नाम, इन बातों का मैं पता नहीं लेता। बिअरबानी कुछ आपस में बतलाती थीं। पर मेरी याददास्त अच्छी

नहीं है, क्या नाम कमजोर है। पर गोविन्दा का घर अच्छा-भला, क्या नाम, खाता-पीता घराना है।

सोना—मैं तो मेमा को कहीं ठीक-टाक करने को उतावली हो रही हूँ।

रिसाल—भला क्यों?

नन्दी—(सुनती है) अम्माँ, वह आ गये।

सोना—सुन, उन्हे छेड़ना-वेड़ना मत। (बिना सिर मोड़े चमचे-करछी धोती रहती है।)

[चन्दन आता है।]

सोना—कौन! (सोना ऊपर देखती है, देखकर चुपचाप मुँह मोड़ लेती है।)

चन्दन—(सख्ती से) कौन! क्यों, भूल गई?

सोना—ऊल-जलूल न बको! अन्दर आओ।

चन्दन—(और धमकी के सुर में) नहीं, देख के बोलो, कौन तशरीफ़ लाए हैं?

सोना—(चलकर बाँह से पकड़कर उसे थामती है) अच्छा तो लो, स्वामी आये हैं। बस, अब तो आओ।

चन्दन—(पीछे अटककर) हाँ, अब कहा, देवी के स्वामी आये हैं। अच्छा, स्वामी का नाम क्या है? बोलो, ठीक बोलो।

सोना—चं-द···चलो हटो। आओ।

चन्दन—नहीं, सब काम कायदे से। अदब अदब है। पूरा नाम बोलो।

सोना—ठाकुर चं-द-न-सिंह···। चलो, अब तो सही!

चन्दन—(अब भी देहली पर ही अटका है) हाँ यह बेहतर है, उससे आगे?

सोना—(हँसती है और बाँह पकड़कर खींचती है) लो—'परमार', 'परमार'। वाह क्या कहना है!

चन्दन—हुई न बात ! यह कायदा है ! (दरवाजे की चौखट पकड़ रहता है) पर नहीं, पहले बताओ कि ठाकुर चन्दनसिंह परमार साहब पहले कौनसा पैर आगे रखते हैं ! बोलो, दायाँ या बायाँ ?

सोना—बस-बस, हुआ। देखते नहीं दरवाजे से ठण्डी आती है ! हटो—

चन्दन—बताओ, किस पैर से पहले साहब कदम रखते हैं। बताओ जी, बताना पड़ेगा।

सोना—(स्वगत) नहीं तो मुझे सतायगा। (चन्दन से) अच्छा तो बायाँ। लो, अब आओ।

चन्दन—हाँ, यह बात। इसका नाम कायदा है।

सोना—देखते हो घर में कौन आए हुए हैं ?

चन्दन—ओह, फ़ादर ! तो क्या, मैं बाप की शरम थोड़े ही करता हूँ। मैं बाप की इज्जत करता हूँ। कहो चाचा, क्या हाल है ! राजी-खुशी ! (झुकता है और अपना हाथ जोड़ता है) नमस्ते।

रिसाल—(जवाब नहीं देता) शराब, क्या नाम, शराब ! बदकार—

चन्दन—शराब—हाँ, मैंने पी है। तो इसमें कसूर ? पी है यह खरी बात है। क्या मैं दोस्त का साथ न देता ! सो एक गिलास चढ़ा ली, आख़िर दोस्त की खातिर। इसमें क्या गुनाह हुआ ?

सोना—आओ, थोड़ा लेट लो।

चन्दन—मेरी प्यारी, कहो तो मैं कहाँ खड़ा हूँ ?

सोना—हाँ-हाँ, ठीक खड़े हो। लो, अब लेट जाओ।

चन्दन—नहीं-नहीं, सब कायदे से। पहले हम फ़ादर के साथ एक प्याला चाय लेंगे। जाओ, रक्खो पानी। मेमा, सुनो, यहाँ आओ। (मेमा आती है। उमदा कपड़े हैं, और बाजार से लाये सामान के बण्डल साथ हैं।)

मेमा—यह क्या तुमने सब सामान तितर-बितर कर डाला ! ऊन की लच्छी कहाँ है ?

चन्दन—ऊन ! लच्छी ! होगी यहीं कहीं, देखो। ओह, मंगल—कहाँ है मंगल ? सो गया ? अभी से सो गया ? जाके घोड़ा खोले।

रिसाल—**(मेमा को नहीं देखता और मानो अपने लड़के पर आँख गाड़े रहता है।)** राम-राम, यह बक क्या रहा है ? मंगल तो, क्या नाम बूढ़ा, हारा-थका, मेहनत में तन तोड़के चुका है। और एक इसे देखो कि क्या नाम सीधा हुकम चढ़ाता आता है—'चलो, घोड़ा खोलो।' है न क्या नाम हरामपना ! बदशऊर, बदकार—

मंगल—**(उठता है और जूते पहनता है।)** ओ भगवान्, दया-निधान ! घोड़े की गत बना दी होगी, और क्या ! देखो कि क्या बोतल-पे-बोतल चढ़ा के आये हैं, गले तक ठसाठस ! ओ भगवान् दयानिधान ! **(कपड़ा ओढ़कर बाहर जाता है।)**

चन्दन—**(बैठकर)** बापा, मुझे माफ करना। सच है मैंने पी है। पर थोड़ी पी ही ली तो क्या बात हुई ? घूँट दो-एक पी ही लेते हैं। तरी रहती है। है न ? सो माफ करना। और मंगल की भली सोची। वह सब कर लेता है।

सोना—चाय चढ़ाऊँ ?

चन्दन—जरूर ! कब से तो बापा आये हैं। प्याले के साथ बात होती जायँगी **(मेमा से)** बंडल सब ले आई न सब ?

मेमा—सब क्यों लाती ? अपने ले आई हूँ। बाकी गाड़ी में हैं। ऊँह, यह लो, यह मेरा नहीं है **(एक बंडल तखत पर फेंकती है, बाकी अपने बकस में रखती है। रखते वक्त नन्दी लालसा से उधर देखती है। रिसाल किधर भी नहीं देखता, और पट्टी और फौजी बूट उतार के चौंतरे पर रखता है।)**

सोना—(अँगीठी बाहर ले जाते हुए) वक्त पहले ही कम नहीं डटा है, ऊपर से यह सब और भर लाई।

चन्दन—(रोष में दीखने की कोशिश करता है) मुझ से नाराज मत होना, बापा। सोचते हो मैंने पी है और मैं होश में नहीं हूँ। पर मैं होश में हूँ, कतई होश में हूँ। यह देखो, हूँ कि नहीं हूँ ? कहते हैं, पीओ पर होश न खोओ। मैं कभी नहीं खोता होश। मैं इस वक्त किसी तरह की बात हो, कर सकता हूँ। कोई काम हो, सलाह दे सकता हूँ। वह पैसे की बाबत तुमने कहा था और कि घोड़ा बेकाम हो गया है और···हाँ, बन्दोबस्त हो सकता है। अपने हाथ की बात है। रकम अगर कुछ बड़ी चाहिए तब तो ठहरना होगा। लेकिन यह तो जरा सी बात है। वह मैं सब कर सकता हूँ। कुल किस्सा यही न !

रिसाल—(पाँव की पट्टीके सिरों को उसके हाथ खोलते रहते हैं।) चन्दन, पानी सूखा हो तो क्या नाम नाव नहीं चलती।

चन्दन—क्या मतलब ? जो पीये हो उससे बात नहीं बनती ? ओ, छोड़ो-छोड़ो, चाय आने दो। मैं इस वक्त हर काम के लायक हूँ। सब काम दुरुस्त, बिल्कुल दुरुस्त।

रिसाल—(सिर हिलाता है) हाँ-आँ।

चन्दन—रुपया चाहिए ? लो, यह रहा। (जेब में हाथ डालता है और एक नोटबुक निकालता है। वहाँ नोटों की गड्डी में से एक दस रुपये का नोट निकालता है।) यह लो घोड़े का काम चलाओ। मैं माँ-बाप को भला भूल सकता हूँ। कभी नहीं, न कभी छोड़ सकता हूँ। मेरा कौल है कौल कि बाप मेरा बाप है। यह लो। सच कहता हूँ, मुझे पैसे का कतई खयाल नहीं। (उठता और नोट रिसाल की तरफ बढ़ाता है। रिसाल लेता ही नहीं। चन्दन बाप का हाथ पकड़ता है।) लो, लो न। पैसे को मैं क्या समझता हूँ।

रिसाल—मैं क्या नाम नहीं ले सकता। और तुमसे मुझे क्या नाम बात नहीं करनी। कारण, तुम क्या नाम तुम नहीं हो अपने आपे में नहीं हो।

चन्दन—मैं जाने नहीं दूँगा, लो भी। (रिसाल के हाथ में नोट रख देता है।)

सोना—(प्रवेश करती, आती और रुकती है) ले भी लो, बापा। नहीं तो ये मुझे चैन नहीं लेने देंगे।

रिसाल—(नोट ले लेता है और सिर हिलाता है) ओह, शराब है, क्या नाम आदमी नहीं है।

चन्दन—यह ठीक है। लौटाना ही चाहो लौटा देना, नहीं तो कोई बात नहीं। देखा मुझे! (मेमा को देखकर) मेमा, अपनी चीजें खोल के दिखाओ तो।

मेमा—क्या?

चन्दन—अपना सामान दिखाओ।

मेमा—दिखा के क्या होगा? मैंने तो रख भी दिया।

चन्दन—ले आओ। सुनती हो, ले के आओ। नन्दी का देखने का जी होगा। खोलो, साल उतार दो। लाओ, यहाँ रख दो।

रिसाल—ओह, हया-शर्म क्या नाम सब डुबो दी! (अलग जाता है।)

मेमा—(सामान के बंडल निकालकर तखत पर फैला देती है।) यह रहा सब-का-सब। लो, देखो। देख के जाने क्या होगा?

नन्दी—ओह, कैसा प्यारा है यह शाल! बिलकुल हेमा बुआ के यहाँ का-सा है।

मेमा—हेमा? हेमा का क्या होगा इसके आगे? (खुशी से चमककर बंडल खोलती है।) चीज, देखो चीज पहचान की बात है। खास विला-

यत का है, फिरांस का।

नन्दी—बेल कैसी बढ़िया है! गोदावरी की भी साड़ी पे ऐसी ही बेल थी। पर कपड़ा उसका हल्का था, यह उम्दा है।

चंदन—हाँ, यह कहो।

सोना—(**गुस्से में बराबर के छोटे कमरे में जाती, चाय का सामान लेकर लौटती और तैयार करती है।**) हटाओ इसे—सारा तखत घेर लिया हाँ-तो।

चंदन—अरी, देख तो।

सोना—क्या देखूँ? कभी हमने देखा नहीं है न? हटाओ यहाँ से (**बाँह से तखत को साफ करने में शाल को धरती पर गिरा देती है।**)

मेमा—चीजों को नीचे क्यों फेंके दे रही है? अपनी तो न फेंकी होगी? (**शाल उठाती है**)

चंदन—सोना देखो, यह देखो।

सोना—क्या है? क्या देखूँ?

चंदन—समझती हो, तुम्हारी याद मैं भूल गया हूँगा। ऐसा कहीं हो सकता है? (**बंडल दिखाता और उसे अपने नीचे डालकर बैठ जाता है।**) यह तुम्हारे लिये है। लेकिन यूं नहीं, मेहनत से पाओगी। अच्छा बताओ तो सोना, मैं काहे पे बैठा हूँ?

सोना—बहुत हुआ खेल। बक-बक बन्द करो! मैं कोई डरती नहीं हूँ। जा-जाके यह किसके पैसे से मौज-मजा उड़ता है! और किससे सब ऐश की चीजें ले के दी जाती हैं, अपनी चहेतिन को! किसका पैसा?—मेरा, मेरा।

मेमा—आया तुम्हारा। किसी खयाल में न रहना। तुम ने तो चुराना चाहा था, पर बात जो न बनी। चल हट, अलग हो रास्ते से। (**उसे धकिया कर अलग करके जाना चाहती है।**)

सोना—क्या धकियाती है? अभी सब बताती हूँ, धकियाना।

मेमा—तू धकिआयगी ? आ, देख धकिआ के (सोना से जाकर भिड़ती और धक्का देती है ।)

चंदन—अरी, यह क्या करती हो ? चलो छोड़ो भी ? (दोनों के बीच में आ जाता है ।)

मेमा—खुद तो बीच में आके पड़ती है ।—बस जबान बन्द कर । याद कर अपनी करनी । समझती होगी कोई दूसरा जानता ही नहीं है ।

सोना—क्या जानती है तू ? कह न डाल जो जानती है । क्यों मन की रखती है ?

मेमा—कहे रखती हूँ, मैं सब जानती हूँ ? जो-कुछ और समझती हो ।

सोना—दूसरे के मरद के साथ लगी फिरती है, छिनाल न हो तो ।

मेमा—और तेने तो अपने मरद को जहर दे के मार डाला ।

सोना—(मेमा पर झपट कर) क्या बकती है, मुँह झौसी ?

चंदन—(उसको पकड़कर) सोना होश लाओ ।

सोना—मुझे डराना चाहती है ? तुझ से मैं कोई डरती नहीं ।

चंदन—(पकड़कर उसका मुँह फेर देता है और बाहर धकिया देता है) जा निकल ।

सोना—निकल के कहाँ जाऊँ ? अपने घर से मैं तो नहीं जाती ।

चंदन—कहता हूँ, दूर हो, चली जा । अब फिर मुँह न दिखाना ।

सोना—नहीं जाती, नहीं जाऊँगी ।

[चन्दन उसे धक्का देता है । सोना रोती-चीखती है और चौखट पकड़े रहती है ।]

सोना—क्या मेरे घर से मुझे ही ऐसे धक्के देकर निकालेगा ? तेरी बिसात क्या है ? पाजी, समझता है कानून तेरे लिये है । नहीं ! आगे जरा देखता जा ।

चंदन—क्या कहा ?

सोना—मैं दरोगा के पास जाती हूँ। थाने में रपट करूँगी।

चंदन—जा, जा, निकल। (धक्का दे कर बाहर कर देता है।)

सोना—(किवाड़ के पीछे से) मैं अभी गले में फाँसी लगाये लेती हूँ।

चंदन—यहाँ डरता कौन है ! जा लगा।

नन्दी—ओ, माँ ! अम्मा मेरी अम्मा री ! (रोती है)

चंदन—मैं, और उससे डरूँ ? मेरी डरे जूती। तू क्यों रोती है ? वह यहीं आयगी, जायगी कहाँ ? घबरा नहीं। चूल्हा-चूला देख। [नन्दी जाती है]

मेमा—(सोगात की चीजों को तहाती और बटोरती है) बेशरम, कुतिया। कैसा गड़बड़ करके रख गई ? पर ठहरो ज़रा। बच्ची को क्या दिन दिखाती हूँ। समझेगी कि मैं भी हूँ।

चंदन—अब मैंने उसे निकाल तो दिया। और तू क्या चाहती है ?

मेमा—मेरा दुशाला बिगाड़ के रख गई, कुतिया। चली न गई होती तो आँखें उसकी निकाल लेती, जो कुछ समझती है।

चंदन—बस, बस, नाराज क्यों होती है ! मैं जो उसे प्यार करता···

मेमा—प्यार करते ? उसे प्यार करते शक्ल की चुडैल ही जो न हो। तुम उसे छोड़ भी देते तो क्या होता ? कुछ न होता, मोरी का कीड़ा मोरी में पड़ता। और जो कहो तो मकान वह मेरा था, पैसा मेरा था। जो समझते हो कि वह प्यारी है, तो अपने मालिक के साथ कैसी प्यारी बन के रही वह ? हत्यारिन है, हत्यारिन।

चंदन—राम राम, औरत की जुबान को भी कौन रोके ? बड़-बड़, बड़-बड़ ! तुम्हें खुद पता है कि क्या बके जा रही हो ?

मेमा—हाँ पता है, मुझे पता है। मैं उसे साथ नहीं रहने दूंगी। घर से उसे निकाल के रहूँगी। घर में मेरे साथ वह नहीं रह सकती। आई बड़ी चहेती बनकर। कौन रखता है उसे, कौन चाहता है ? उसके लिये

जगह जेलखाने में है।

चंदन—बस हुआ। उससे तुझे सरोकार क्या, काम क्या? उसकी फिकर छोड़, मुझे देख। मालिक मैं हूँ। जैसे मेरा मन, मैं करता हूँ। उसे चाहना छोड़ दिया है, अब तुझे चाहता हूँ। मन चाहे मैं जिसको चाहूँगा। मर्जी मेरी, काम मेरा। वह मेरे इनके बस है। (**अपने पैरों के तलों की तरफ इशारा करता है।**) ओः जूतों के तले मैं उसे रखता हूँ।:··ओ, कोई साज-बाज नहीं है? (**गाता है**)

[**मंगल आता है। बाहर के कपड़े उतारता और चौतरे पर जाकर बैठ जाता है।**]

मंगल—औरतों की कलह मची दीखती है। जूड़ा पकड़-पकड़ के खींचातान हुई होगी, और क्या! ओ भगवान्, दयानिधान!

रिसाल—(**चौतरे के किनारे बैठकर जूता पैर में डालता और पाँव में पट्टी बाँधने लगता है।**) आओ, मंगल, इधर पीछे आ जाओ।

मंगल—दोनों में घड़ी-भर को नहीं बनती दीखती।

चन्दन—शराब निकालो जी। चाय के साथ कुछ वह भी सही।

नन्दी—(**मेमा से**) बहन, पानी उबल आया?

चन्दन—तेरी माँ कहाँ है?

नन्दी—वहाँ तिदरी में खड़ी रो रही हैं।

चन्दन—ओ, ऐसा? बुलाओ तो, कहो चाय-वाय रक्खे। और तुम मेमा सामान तैयार करो।

मेमा—सामान? अच्छा (**चीज़ें एक-एककर लाती है।**)

चन्दन—(**शराब की बोतल, बिस्कुट, मेवा वगैरह लिफाफों में से खोलकर निकालता है।**) यह मेरे लिये है। ऊन की लच्छी सोना के लिये। बाकी—खैर बाहर सही। कुल कितना? देखूँ—अच्छा ठहरो। (**हिसाब को लिये कौड़ियाँ ले लेता है।**) जोड़ता चलूँ। (**जोड़ता है**) खाना

होटल साढ़े-बारह रुपये···शराब···कपड़ा···पिता को दिये दस रुपया···बापा आओ, चाय आ गई है।

[कुछ देर सब चुपचाप रहते हैं। रिसाल चौतरे पर बैठा टाँगों पर पट्टी लपेटता है। सोना चाय लेकर आती है।]

सोना—कहाँ रक्खूँ ?

चन्दन—यहाँ तख्त पर रख दो। कहो, हो आई दरोगा के ? लिख गई रपट ? पहले तो जो हुआ मुँह से उगल दिया, उसी को फिर निगल लिया ? अच्छा-अच्छा, बिगड़ो नहीं। बैठो, बैठो। और लो, यह लो। (शराब का गिलास भरकर देता है।) और यह तुम्हारी सौगात है। (जिस पर बैठा था वह पेकेट निकाल कर देता है। सोना चुपचाप उसे ले लेती है, और सिर हिलाती है, जैसे राजी नहीं है। रिसाल चौतरे से उतरता है और चादर कन्धे पर सम्हालता है, फिर तख्त के पास आकर दस रुपये का नोट वहाँ रख देता है।)

रिसाल—यह रहा तुम्हारा रुपया। तुम्हीं रखो।

चन्दन—(रुपये को नहीं देखता है।) अभी यह चादर क्यों सम्हाल ली ? क्या तैयारी है ?

रिसाल—मैं क्या नाम वापस जाता हूँ। भगवान् के नाम पर मुझे माफ करना। (साफा सिर पर ठीक करता है।)

चन्दन—राम भला करे, बापा, रात को इस वक्त कहाँ जाओगे !

रिसाल—इस घर में क्या नाम मैं नहीं रह सकता। माफ करो, मुझे क्या नाम जाना है।

चन्दन—लेकिन चाय-वाय बिना कुछ लिये चले जाओगे ?

रिसाल—(चादर को ठीक से ओढ़ लेता है) हाँ, इस घर में क्या नाम धरम नहीं है। यहाँ रुकना अधरम है। चन्दन, जिन्दगी तुम्हारी क्या नाम काली है। पाप की जिन्दगी है। मैं जाऊँगा।

चन्दन—क्या बात है बापा ? खैर, बात पीछे होगी। पहले बैठो, चाय तो पीओ।

सोना—ऐसा न कहो, बापू। पड़ोसियों के आगे हमें शर्मिन्दा क्यों करते हो ? ऐसी क्या नाराजी।

रिसाल—नहीं, नाराजी क्या नाम नहीं। मतलब है कि चन्दन, क्यों नाम बरबादी की राह तुमने पकड़ी है। बुरी राह, क्या नाम. गुनाह की राह। खोटी राह तुम लगे हो। समझे, क्या नाम—

चन्दन—बरबादी, गुनाह ! क्या बरबादी ? मालूम तो हो।

रिसाल—क्या नाम एकदम बरबादी। तुम शैतान के फेर में क्या नाम चंगुल में हो। मैंने तब क्या कहा था ?

चन्दन—बहुत तरह का बहुत कुछ कहा था। क्या मतलब ?

रिसाल—उस लावारस लड़की का क्या नाम, तुमने शील लिया। उस बिचारी क्या नाम रजनी को बेआबरू किया। कुकर्म किया।

चन्दन—यह लो, फिर पुरानी सनक। मुर्दों को गड़े रक्खो न···वह तो सब बीत चुका।

रिसाल—(उत्तेजित अवस्था में) क्या नाम, बीत चुका नहीं, लड़के, नहीं बीत चुका। एक पाप क्या नाम दूसरा पाप करता है। फिर तीसरा, फिर···। एक पर-एक, क्या नाम, पाप-पर-पाप, खिंचता चला आता है। सो चन्दन तुम क्या नाम पाप में उतर रहे हो। पाप के गढ़े में गहरे गड़ रहे हो। डूब रहे हो, क्या नाम पाप में डूब रहे हो।

चन्दन—बैठो-बैठो, चाय पीओ, और पाप-पुण्य अब खतम करो।

रिसाल—नहीं, चाय क्या नाम मैं नहीं पी सकता। सब मैला क्या नाम जघन्न आचार है। देख के जी बिगड़ता है। चाय क्या नाम मैं नहीं लूँगा।

चन्दन—फिर वही झक। ओंह, छोड़ो भी, आओ बैठो।

रिसाल—तुम क्या नाम दौलत के नशे में हो, जैसे जाल में। नशा क्या नाम पाप का जाल है। ओ चन्दन, भगवान् क्या नाम माया नहीं मन चाहता है, मन। चन्दन, भगवान् क्या नाम अन्दर देखता है।

चन्दन—यह तो हद है। मेरे घर में मुझे ही डाँटते हो—ऐसा तुम्हें हक़ क्या है ? मुझ पर चढ़े क्यों आते हो ? मैं कोई बच्चा हूँ कि यूँ ही कान खींचने लगोगे ? अब पुरानी बातें नहीं चल सकतीं।

रिसाल—ठीक है क्या नाम, सच है। सुनता हूँ कि आजकल बेटे क्या नाम बाप के कान खींचते हैं। बाप को···हाँ, क्या नाम यह बरबादी है, उल्टा रास्ता है, क्या नाम पाप है।

चन्दन—(गुस्से से) हम तो तुमसे कुछ माँगने नहीं जाते। अपने घर में जैसे बनता है, रहते हैं। तुम्हीं अपनी जरूरत लेकर हाथ फैलाते आते हो।

रिसाल—ओह, क्या नाम पैसा ! हाँ, मैं भीख माँग लूँ, क्या नाम भीख माँगता फिरूँ। पर तुम्हारा क्या नाम पैसा नहीं लूँगा।

चन्दन—अँह, हुआ। छोड़ो हटाओ। गुस्सा न होओ। सब मजा बिगड़ा जाता है। **(बाँह से उसे पकड़ता है)**

रिसाल—**(चिल्ला कर)** छोड़ो, क्या नाम नहीं रहूँगा। कहीं किसी पेड़ के नीचे क्या नाम पड़ रहना अच्छा, तुम्हारे पाप का आराम बुरा। शिव-शिव ! भगवान् दया करना। (जाता है।)

चन्दन—यह खूब।

रिसाल—**(फिर दरवाजा खोलता है।)** चन्दन, क्या नाम होश करो। भगवान् मन चाहता है, क्या नाम माया नहीं।

मेमा—**(चाय के प्याले लेती है)** तो चाय मैं फेंक दूँ ? **(एक प्याला उठाती है। सब चुप रहते हैं।)**

मंगल—**(दहाड़ के से स्वर में)** ओ भगवान्, पापी पर दया कर

दयानिधान ! (सब चौंकते हैं।)

चन्दन—(तख़्त पर लेटता है।) ओह, सब फिज़ूल, सब बेकार। (मेमा से) बाजा कहाँ है ?

मेमा—बाजा ? भली याद आई। सुधरवाने तुम्हीं तो ले गये थे। लो, मैंने चाय कर दी। पी लो।

चन्दन—हटाओ, मुझे नहीं चाहिए। रोशनी गुल कर दो···ओह, सब बेकार, सब फिज़ूल। (हाथ में मुँह लेकर सुबकता है।)

अंक ४

[जाड़े बीतने को हैं। साँझ ढल रही है। चाँद चमक रहा है। मकान का पिछवाड़ा दीखता है। एक तरफ बगल में छप्पर पड़ा है। वहाँ से नशेबाजों की आवाज़ें, चीख-चिल्लाहटें सुनाई देती है। मकान में से दूसरी पड़ोसिन निकलती है, और पहली को इशारा करती है।]

दूसरी पड़ोसिन—क्या बात है जी, मेमा इधर नहीं दीखी।

पहली पड़ोसिन—क्यों नहीं दीखी! दीखने को वह तो भूखी रहती है। पर बीमार है, तुम जानो। लड़के की तरफ के लोग आये हैं और लड़की को देखना चाहते हैं। और लाड़ो जी अलग मकान में पड़ी हैं, बीमार, कि निकल नहीं सकती हैं।

दूसरी—लेकिन बात क्या है?

पहली—सुना है, नजर लग गई है। किसी ने जादू-टोना छोड़ा सुनती हूँ। पेट में दर्द है, बड़ा सख्त दर्द।

दूसरी—अजी जाओ।

पहली—तुम जानो, सच। नहीं भी क्या? (धीमे से बात करती है।)

दूसरी—अरी, सच कहियो, यह बात है! दूल्हे के यहाँ से जो आये हैं उन्हें भी तब तो पता लगेगा ही।

पहली—लगेगा पता? अरी, शराब में सब अलमस्त पड़े हैं। फिर तुम जानो, उन्हें तो दहेज से काम है। पता है, कैसा भरके दहेज लड़की के साथ देंगे? चालीस जोड़ी तिअल, बरतन, सामान, जेवर, फर्नीचर, ऊपर से रुपया अलग। सुनती हूँ, पाँच सौ नगद।

दूसरी—यह तो ठीक है। पर बहन बदनामी भी कोई चीज है। उसके आगे रुपये में क्या सुख है ?

पहली—हिश्,...(दूल्हे का बाप आता है।) वह दूल्हे का बाप ही तो नहीं आ रहा है ?

[बोलना बन्द करती हैं और घर के अन्दर हो जाती हैं। दूल्हे का बाप खाँसता-खँखारता छप्पर वाले घर से बाहर आता है।]

बाप—ओह, पसीना, पसीना, कैसी गरमी है ? बाहर यहाँ जरा ठण्डी साँस मिली। (खड़े होकर हाँपता है।) भगवान जाने. क्या...कहीं कुछ भेद मालूम होता है। मन खुल नहीं रहा। सब उस बुढ़िया का बनाया मामला है !

कुसलो—(अन्दर से निकलती है) लो, मैं ढूँढती थी कि समधी कहाँ है। सब तरफ देखती फिरी। आप हो यहाँ...देखो, ठाकुर, भाग की बात है। भगवान् की किरपा कहो, और क्या ? सब मामला ऐसा चौकस कि क्या बात ! रिश्ते में तुम जानो, बात बढ़कर नहीं करनी चाहिए। और मैं बढ़ा-चढ़ा के कहती भी कही नहीं। बीच के लोग हैं जो यहाँ-वहाँ की हाँकते हैं, पर तंत की बात पर आओ तो सच कहती हूँ ठाकुर, भगवान् का तुम सारे जनम जस मानोगे। बहू ऐसी है कि एक हीरा। सौ में एक नहीं। दूर पास जिले-भर में तो वैसी मिले नहीं।

बाप—वह तो सही है। पर पैसे की बात कहो।

कुसलो—उसकी बात क्या कहनी है ? वह तो साफ है ही। बाप ने जो छोड़ा सब लड़की के साथ जायगा ही। और ठाकुर उतनी रकम इस जमाने में कहाँ सहल रक्खी है ! इकट्ठी तीन पचासी।

बाप—हमें तो कुछ नहीं, तुम जानो। जो दोगे अपनी बेटी को दोगे। सो तुम्हारी बेटी के हित जितना हम लें थोड़ा।

कुसलो—मैं सूधी कहती हूँ, ठाकुर। मैं न होती तो तुम्हें उस

जैसी लड़की जनम-जनम नहीं हाथ आती। बिशनपुर के जमींदार के यहाँ बात चली थी, लेकिन वह तो मैं अड़ गई। मैंने कहा नहीं, और रुपये की जो बात है तो मैं लो सच्च ही कहती हूँ। लड़की का बाप, भगवान् उसकी आतमा को सान्ती दे, मर रहा था तो उन्ने कहा कि मेरी बेटा सोना तो घर में चन्दन को कर ले। तुम जानो, सच्ची बात खुद बेटे के मुँह सुनी करती हूँ। और रुपया-पैसा सारा लड़की मेमा के नाम कर दिया। ऐसे में कोई दूसरा जाने क्या करता। पर चन्दन ने अपना खयाल किया? जरा इधर-उधर नहीं किया। पाई-पाई सब लड़की की तरफ कर दिया। यह छोटी बात न जानना ठाकुर। और रकम भी कितनी कि—

बाप—लोग कहते हैं कि रुपया बाप ने उससे बढ़ती छोड़ा था और चन्दन ने हुशियारी चली है।

कुसलो—ओह, मेरा राम जाने। ठाकुर, दूसरे की थाली का कौर बड़ा ही लगता है। जो था वह सब मिलेगा। कहती तो हूँ। सक-सन्देह दूर फेंको, और पक्का परमान जानो। और लड़की क्या है कि दीपक। ऐसी गुलाबी और ताजी और सुन्दर कि क्या खिली कली होगी!

बाप—होगी। पर हमने तो किसी ने लड़की देखी नहीं। वह बाहर नहीं आती। राम जाने क्या हो। सोच होता है कि क्या जाने रोगन ही न हो।

कुसलो—क्या कहा ठाकुर, वह लड़की रोगिन! खूब कही। दूर-दूर से कोई दूसरी तो ला दो जो मुकाबले ठहरे। लड़की हिष्ट-पुष्ट तन्दुरुस्त ऐसी है कि देखते रह जाओ। तुम से तो वह दबे नहीं। और क्यों, उस दिन देखा नहीं था। और काम की पूछो, तो घर के सब काम में एक हुशियार है। जरा ऊँचा सुनती है यह सही है। पर दाग तो तुम जानो चाँद में क्या नहीं है? और बाहर आने की जो कहते हो सो नज़र लगने की बात है। किसी ने टोना-टोटका कर दिया है। मैं नाम तलक भी जानती हूँ, जिसने यह किया है। सगाई की सुनी और पेट में सैतानी सूझी। यही शितानपन

है। पर मैं भी काट का वह मन्तर जानती हूँ कि कल ही लड़की उठ खड़ी होगी। अजी, लड़की की फ़िकर न करो।

बाप—हाँ, सो बात तो पक्की ही है।

कुसलो—बस, पक्की रक्खो। कौल मोड़ना नहीं। और देखना, ठाकुर, समय पे भूलना नहीं कि मैंने कैसी मेहनत उठाई है। जो कहीं भूल जाओ······

[अन्दर से एक स्त्री की आवाज आती है]

आवाज़—अब चलना है तो चलो ना नानक, एँ कहाँ गये? नानकराम, सुनते हो? चलो, चलना है।

बाप—आया! (बाहर जाता है) रास्ते में मेहमान लोग जमा होते हैं और चलने को तैयार होते हैं।

नन्दी—(दौड़ी आती और सोना को पुकारती है)—माँ, माँ!

सोना—(अन्दर से) क्या है?

नन्दी—माँ, यहाँ आओ यहाँ। नहीं कोई सुन लेंगे।

[सोना आती है और दोनों छप्पर वाले घर की तरफ जाती हैं]

सोना—हाँ, क्या है? मेमा कहाँ है?

नन्दी—ओटे में है। ओ माँ, जाने क्या कर रही है। राम रे, मुझे डर लगता है। कहती है मुझ से नहीं सहा जाता। मैं चिल्ला पड़ूँगी। मैं चिल्लाती हूँ! दरद के मारे मुझसे नहीं रहा जाता, मैं तो चीखती हूँ। सच कहती हूँ, कसम जो उनने यह नहीं कहा।

सोना—तो क्या करूँ? पहले मेहमानों को तो निबटाऊँ। तब तक और क्या, पड़ी रहे अकेली।

नन्दी—दरद के मारे बुरा हाल है। और खूब गुस्से हो रही है। कहती थी, मरी कि जियी मेरा ब्याह न होगा। मैं मर रही हूँ। माँ, सच जो वह मर गई! ओ माँ, मुझे डर लगता है।

सोना—डर नहीं, वह नहीं मरेगी। पर तू पास न जइओ। आ चल। (सोना और नन्दी जाती हैं)

मंगल—(दरवाजे पर आता और फैली घास बटोरता है) ओ भगवान्, दयानिधान, कैसी ढेर शराब यहाँ औंधाई है ? कैसी बास फैल रही है ! बाहर तक गन्धा रहा है। नहीं, मुझे नहीं। दूर फेंको। भलेमानसों ने यह घास कैसी फैला दी है ? खाई नहीं तो पैर से ही रोंद डाली। जो, पास-पास से चीज निकल गई। अरे, महक भी कैसी—कि शराब नाक के ही नीचे हो। अँह, हाँ ओजी, (अँगड़ाई लेता है) सोने का वक्त हुआ मैं नहीं जाता अन्दर। नाक के आगे कमबख्त तैरती सी लगती है—क्या महक है। ससुरी दूर तक रस देती है। (मेहमान लोगों के जाने की आवाज़ सुन पड़ती है।) आखिर गये ! ओ भगवान्, दयानिधान ! लो, पेट भर के और बाकी साथ बाँध के आखिर चल दिये। उनकी मौज है जी, मौज।

[चन्दन आता है]

चन्दन—मंगल, जाओ, सोओ। यह मैं ठीक कर दूँगा।

मंगल—अच्छा, सब यह भेड़ों के आगे डाल देना, खा लेंगी। हाँ, वे सब गये।

चन्दन—गये। पर बात है गड़बड़। समझ नहीं आता, क्या करूँ।

मंगल—गाँठ है, गुरुगाँठ, और क्या ? पर वह होते हैं न असपताल, और अनाथालय। चाहे जिसे वहाँ दे आओ सब ले लेते हैं। जितने चाहे वहाँ कर दो। न पूछ न ताछ। कोई सवाल नहीं। बलके माँ जो वहाँ धाय बनके रह जाय तो ऊपर से पैसा देते हैं। आजकल इस काम में क्या मुश्किल है।

चन्दन—पर देखना मंगल, जुबान न चलाते फिरना।

मंगल—रामराम, मुझे क्या पड़ी जो मुँह खोलूँ। तुम जानो, जैसे

ढको ढक लो। वाप रे! दारू कैसी तुम में से महक रही है! मैं जाता हूँ। श्री भगवान् दयानि···[जंभाई लेता जाता है]

[चन्दन काफी देर चुप रहता है फिर एक गाड़ी के सिरे पर बैठता है]

चन्दन—अजब झमेला है। [सोना आती है]

सोना—यहाँ क्या कर रहे हो।

चन्दन—क्यों?

सोना—क्यो क्या? बना क्या रहे हो? वक्त खोने को नहीं है। फौरन होना चाहिए।

चन्दन—क्या—आ?

सोना—मैं बताऊँगी, क्या-आ? मैं बताऊँ जैसा करते जाना।

चन्दन—मैं जानूँ अनाथालय वगैरह कहीं भेज दें कुछ हो तो।

सोना—भेज दें। ले न जाना तुम्हीं। गुलछर्रे उड़ाते बखत तो बहादुर थे, अब अडी पे सिट्टी गुम हुई जा रही है। उठो न—

चन्दन—उठ के क्या करूँ?

सोना—उस नीचे वाली कोठरी में जाओ, सुना? जाके गड्ढा खोदो।

चन्दन—कोई कुछ और नहीं हो सकता है?

सोना—(नकल निकालते हुए) कुछ और नहीं हो सकता है? नहीं कुछ नहीं हो सकता। साल पहले नहीं सोचा गया और अब सूझता है कुछ और। चलो, कहता हूँ, सो करो।

चन्दन—ओ राम, क्या आफत है?

[नन्दी आती है]

नन्दी—माँ, दादी बुलाती है। मैं जानूँ बहन को कुछ हुआ है। कसम जो मैंने चिचियाने की आवाज न सुनी हो।

सोना—क्या बकती फिरती है, दुर पगली। बिल्ली के बच्चे की आवाज होगी। जा घर, सो। नहीं तो पिटेगी, सुना?

नन्दी—अम्माँ, सच कहूँ, कसम से।

सोना—(हाथ उठाकर जैसे मारेगी) चल नहीं तो अभी बताती हूँ। जा, निकल। और अब इधर मुँह तेरा न देखूँ।

(नन्दी भागकर अन्दर जाती है, चन्दन से) सुना? कहूँ सों करना होगा। (जाती है)

चन्दन—(अकेला रहता है और काफी देर तक चुप) ऊँह, क्या बखेड़ा है? ये औरतें एक बला हैं। कहती हैं, साल पहले न सोचा। बोलो भला, सोचे कोई कब? कब सोचे? पार साल यह सोना ही मेरे पीछे लगी थी। मैं क्या करता? मैं कोई तपसी हूँ? सन्त हूँ? कौन हूँ? मालिक मरा तो, बाकायदा ब्याह कर-कराके बात सब ढक ली। मेरा उसमें कसूर! ऐसा हर कहीं होता है। और वह दवा की पुड़िया, सो क्या मैंने उसके लिए शह दी? जो मैं जानता भी कि वह कुतिया यह इरादा रखती है तो क्या मैं उसकी वहीं जान न ले लेता। क्या उसे छोड़ देता? नहीं, कभी नहीं। उन्ने अब मुझे भी तो पाप में सान लिया। चुड़ैल जो न हो। उस दिन से शक्ल से उसकी मुझे घिन आती है। जब से माँ ने भेद दिया, उसकी शक्ल से नफरत होती है, देखते जी खराब होता है। तब भला निभाव की बात क्या? फिर यह मामला...यह लड़की पीछे लग पड़ी। बोलो मैं करता तो? मैं न मिलता, किसी दूसरे को फँसाती। और आज दिन हैं कि...इसमें मेरा क्या कसूर! ऊँह, हटाओ जी, पचड़ा। अजब बला हैं ये। (बैठकर सोचता है) इन औरतों का भी कलेजा तो देखो। क्या-क्या सोचती हैं। पर मैं नहीं हाथ सानता।

[कुसलो आती है, हाथ में लालटेन लिए हुए है। हाँप रही है!]

कुसलो—यहाँ भीगे सियार से बैठे क्या कर रहे हो? कहा सो करते

क्यों नहीं ? चलो चटपट निपटा डालो।

चन्दन—क्या सोचा है ? क्या करोगी ?

कुसलो—वह हमारा काम है। तू अपना काम कर।

चन्दन – मुझे किस फन्दे में डाल रही हो ?

कुसलो—क्या इस वक्त निकल जाने की सोचते हो, क्यों ? बात यहाँ तक आ गई, और तुम निकल जाओगे ?

चन्दन—सोचो तो माँ, कैसे होगा ? एक जीतो जान···

कुसलो—कैसी जीती-जान ! अरे, जैसी जीती वैसी मरी। जान भी कुछ है ? फिर कोई क्या करे ? जा के अनाथालय में दोगे ! वहाँ कौन जान रह जायगी ? और बात फैलेगी ? सो अलग। तब लोग दस तरह की दस कहेंगे और लड़की का ब्यान होगा, और वह सदा को सिर पे धरी रहेगी।

चन्दन—और जो बात फूट गई, तो—

कुसलो—फूट क्यों गई ? घर के अन्दर की बात घर में रहेगी, क्यों ? ऐसा करेंगे कि किसी को कानोंकान खबर न होगी। पर जैसा कहें तुम करते जाओ। हम औरतें बिना एक मरद के सब पार नहीं डाल सकतीं। यह लो फावड़ा और करो शुरू—मैं लालटेन थामती हूँ।

चन्दन—क्या करने कहती हो ? क्या करूँ ?

कुसलो—(हौली आवाज में) गड्ढा खोदो, फिर हम उसे ले आयँगे और मट्टी देकर किस्सा खतम करना। यह लो; मुझे वह बुला रही है ! ~~लो तुम~~, चलो, करो। मैं उधर हो आऊँ।

चन्दन—तो बच्चा मरा हुआ है ?

कुसलो—नहीं तो क्या ? झटपट करो, जल्दी। जो कहीं लोगों को सुध पड़ जाय ? कोई देख लेगा, नहीं तो सुन ही लेगा। तुम जानो, सब सूँघ में रहते हैं। सब तरफ टोह टटोला करते हैं। चौकीदार शाम को ही टला है। सो समझा, झट कर डालो (फावड़ा हाथ में देती है) उस कच्ची

कोठरी में जाओ और दाँये कोने में खोद डालो। मिट्टी ढीली है, जल्दी हो जायगा। फिर उसे बराबर कर देना। धरती माता कुछ बोलती थोड़ी ही हैं। सब अपने में रखे रहती हैं। तो जाओ, बीरन!

सोना—(दरवाजे में से) खुद गया?

कुसलो—तू क्यों चली आई? उसका क्या किया?

सोना—लत्ते से ढाँप-ढूँप के रख आई हूँ। आवाज किसी को न पड़ेगी। गड्ढा खुद गया?

कुसलो—यह तो हाथ नहीं हिला के देता है।

सोना—(गुस्से में झपट के आती है।) क्या, हाथ नहीं हिलाता? तो जेलखाने में सड़ना चाहता है? लो मैं जाती हूँ। सीधी सब बात थाने में कहे आती हूँ। मरना ही ठहरा तो किसकी हया-लिहाज? अभी जाती हूँ, सब रपट लिखा के आती हूँ।

चन्दन—(घबरा कर) क्या कहेगी?

सोना—क्या! सब-कुछ। माल किसने लिया! तुमने, (चन्दन चुप है) जहर किसने दिया? हाँ दिया मैंने, पर तुम्हारी जान में दिया। तुम्हें पता था, तुम्हारी सम्मत थी। सबकी मिली सलाह थी।

कुसलो—अरी, चुपकर, बस! चन्दन बेटा, जिद क्यों पकड़े हो? अब और हो क्या सकता है? कुछ तो करना ही होगा? बढ़ो, बीरन!

सोना—देखो इन्हें, अब भलेमानस बनते हैं! आपको डर लग रहा है।···बड़े मुझ पे सवारी गाँठते रहे हो। मुझे पैरों तले रौंदा है; अब मेरी बारी समझ लो। चलो, करो। नहीं तो मैं चली थाने। जाकर···हाँ, ऐसे ही। उठा लिया फावड़ा? अब आगे चलो।

चन्दन—नाश जाय तुम्हारा, पिण्ड न छोड़ के दोगी? (फावड़ा उठाता लेकिन ठिठकता है।) न चाहूँ तो मैं नहीं भी जाऊँ।

सोना—नहीं जाओ! (चिल्लाने लगती है) ए पड़ोसी लोगो,

सुनना,—

कुसलो—(मुँह बन्द करती है) अरी, करती क्या है ? पागल तो नहीं हुई ! वह जा तो रहा है।···चल भैया, चल मेरे बीरन।

सोना—मैं चिल्लाती हूँ।···पड़ोसी लोगो, खून···

चन्दन—चुप भी कर। यह औरत जात भी क्या है। अच्छा तो लो यही सही।···मरना ही है तो क्या सुरग क्या नरक ! (कोठरी की तरफ जाती है।)

कुसलो—हाँ, बीरन, ऐसे ही। आनन्द जो लेता है मुसीबत भी उसे लेना आना चाहिए।

सोना—(अब भी उत्तेजित है) बड़े मुझपे चढ़-चढ़के आते थे,··· दोनों-के-दोनों यह और उसकी वह। पर अब पता पड़ेगा। मैं पाप में अकेली चलने वाली नहीं हूँ। मैं हूँ तो यह भी हत्यारा बनेगा। तब पता चलेगा हत्या का, पाप क्या होता है !

कुसलो—अरी, री, ऐसी भड़क क्यों रही है ? गुस्से की बात नहीं है, बहू। सान्ती से, धीरे-धीरे काम करना होता है। बहू, तू जा, मेमा के पास चल। इतने चन्दन सब करके रखता है। (चन्दन के पीछे लालटेन लेकर कोठरी की तरफ जाती है। चन्दन कोठरी में उतरता है।)

सोना—उसके अपने हाथों उस लोथड़े की जान न कुचलवाई तो मैं मैं नहीं। (अब भी उत्तेजित है।) पाप की मारी अकेली घुल-घुल के मैं मरी जाती थी। पति की मौत मन में विष बनके बैठ गई थी। अब इसे भी उस पाप का स्वाद मिले। मैं तो नरक में पड़ी ही हूँ। अब अपने को क्या बचाऊँ ? और वह भी नहीं बचेगा।

चन्दन—(कोठरी में से) रोशनी तो दिखाओ।

कुसलो—(लालटेन ऊँची करके पकड़ती है। सोना से) वह खोद रहा है, जाके तू उसे ले आ।

सोना—तुम यहीं खड़ी रहना, जो कहीं नासपीटा भाग जाय। मैं आके उसे लिये आती हूँ।

कुसलो—देखना, दो बूँद गंगाजल उसके मुँह में डाल देना। या नहीं तो ले आ, यहीं भगवान् का नाम कान में सुना दूँगी।

सोना—मैं जानती हूँ। डाल दूँगी गंगाजल। (जाती है)

कुसलो—देखो औरत को। कैसे सारे में उसके सेही के से काँटे उठ आए हैं ? पर सच है, सताई भी कम नहीं गई है। पर चलो, भगवान् की दया से यह काम् ढकढका जाय, फिर तो सब निपटारा है। लड़की के हाथ पीले हुए कि फिर कोई बात नहीं। बाद में मेरा बेटा आराम से अपने रहेगा। भगवान् की दया से घर भरा-पूरा है, सब आराम है। मुझे भी ऐसे में वह याद करेगा। उसकी यह माँ न होती तो क्या ठिकाना लगना था! भला दूसरा कोई बात पार डाल सकता था! (कोठरी में नीचे झाँककर) हो गया सब, बीरन ?

चंदन—(बाहर सिर निकालता है) यह कर तुम क्या रही हो ? जल्दी करो, जल्दी। काहे की वहाँ देर लगा रक्खी है। जो होना है होके निपटे, हाँ तो।

कुसलो—(घर के दरवाजे की तरफ जाती है। वहीं सोना मिलती है, सोना बच्चे को लिए बाहर आती है। बच्चा बन्डल में लिपटा हुआ है।) हाँ, गंगाजली दी न !

सोना—देती क्यों नहीं। वह तो लाने नहीं दे रही थी। जैसे तैसे करके मैं लाई हूँ। (बढ़कर आती और बच्चे को चन्दन के हाथों में देती है।)

चंदन—[लेता नहीं है] तुम्हीं ले आओ।

सोना—लो, मैं कहती हूँ लो, (बच्चे को उसके हाथों में फेंक देती है)

चंदन—(उसे ऊपर लेकर) यह तो जीता है! राम राम, हाथ-पाँव

हिला रहा हैं। यह तो जी रहा है, हाय, क्या करूँ !

सोना—(बच्चे को उसके हाथों में से झपट लेती है और गड्ढे में पटक देती है।) अब जल्दी करो, जल्दी कुचल दो उसे, फिर न रहेगा जीता हुआ। (चन्दन को नीचे धकेलती है) तुमने किया, तुम ही अब मरो।

कुसलो—(देहली की चौखट पर बैठ जाती है) मन उसका ढीला है री, बिचारे पे बुरी बीत रही होगी। पर किया क्या जाय ? करनी उसकी तो भरनी भी उसकी।

सोना—(कोठरी के बराबर खड़ी है।)

कुसलो—(बैठी नीचे चन्दन को देखती जाती और बतलाती जाती है।) ओह, कैसा काँप रहा है! पर काँपने से क्या होता है। मुश्किल है तो क्या, करना है सो करना है। और उपाय जो नहीं है। ले जाकर उसे रखते तो कहाँ ? और देखो बहू, कितने भगवान् से मनाते हैं कि हमें औलाद दो; पर नहीं, भगवान् उन्हें नहीं देता। बच्चा होता है भी तो मरा हुआ। वह उन लाला का ही घर लो,···और जहाँ नहीं चाहिए वहाँ होता है और जीता है। (कोठरी को तरफ देखती है) मैं जानूँ, उसने कर-करा दिया खतम (सोना से) क्यों ?

सोना—(कोठरी में झाँकती हुई) ऊपर तखता रख दिया है। तखते पे खुद भी बैठ गया है। जरूर खतम हो-हुआ लिया होगा।

कुसलो—राम राम, शिव शिव। कौन अपन-बस कुछ करता है। पर किया क्या जाय ?

चंदन—(कोठरी से बाहर आता है, सारी देह कांप रही है) अब भी वह जीता है ! मैं नहीं···मैं नहीं···अब भी जीता है।

सोना—जीता है ! तो तुम भागे कहाँ जाते हो ? (उसे रोकने की कोशिश करती है।)

चंदन—(उसकी तरफ झपटकर) हट जा सामने से, नहीं जान तो तेरी

घोंट दूँगा। (**उसको बांह से पकड़ता है, वह छूटकर भाग निकलती है। चन्दन फावड़ा लिए उनका पीछा करता है। कुसलो दौड़ के आती और रोकती है। सोना भाग के घर के दरवाजे के आगे आ जाती है। कुसलो चन्दन के हाथ से फावड़ा छीनने की कोशिश करती है।—अपनी माँ से**] तुझे भी मार डालूँगा। तेरी जान ले लूँगा—निकल तो बाहर, [**कुसलो भाग कर सोना के पास दरवाजे पर जा मिलती है। चन्दन रुक जाता है।**] मैं खून करूँगा, खून। किसी को जीता न छोड़ूँगा।

कुसलो—बड़ा हौल उसके मन में बैठ गया है। डर गया दीखता है। खैर, सब ठीक हो जायगा।

चंदन—मेरे हाथों यह क्या करा डाला? ओह उन्होंने यह, क्या रच दिया? कैसा कुनमुन-कुलबुल कर रहा था।···और तख्ते के नीचे···करर-करर करके उसकी हड्डियाँ···करर-करर ओह, मेरा यह क्या बन गया?····सचमुच वह जी रहा है, अब भी जीता है। (**चुप होकर सुनता है।**) वह कुनमुना रहा है!···वह कुनमुन-कुलबुल!···(**कोठरी की तरफ भागता है**)

कुसलो—(**सोना से**) वह जा रहा है। लगता है, जाके उसे गाड़ देना चाहता है। चन्दन, ओ, यह लालटेन तो लेता जा।

चन्दन—(**कुछ सुध नहीं करता, और कोठरी की चौखट पर कान लगाकर सुनता है।**) सुनाई नहीं देता। मेरे मन का खयाल ही न हो। (**मुड़कर लौटता है, फिर रुक जाता है।**) नन्ही-नन्ही हड्डियाँ पसलियाँ कैसी मेरे नीचे करर्र्—करर्र्······ओह, मुझसे क्या करा डाला। (**फिर सुनता है।**) वह कुनमुना रहा है! कीं—कीं—कीं—कीं! सच, कुनमुन, कुल-बुल कर रहा है। नहीं तो फिर यह क्या है? ओ माँ! (**माँ के पास जाता है।**)

कुसलो—क्या है, बीरन?

चन्दन—माँ, ओ माँ! मुझसे आगे नहीं होगा। मैं कुछ और नहीं

कर सकता। माँ, अब मुझ पे तरस खाओ।

कुसलो—ओह बेटे, तुम डर गये हो? आओ बीरन, आओ। यह दो घूँट ले लो, तबियत लौट आयगी।

चन्दन—माँ, लगता है मेरा वक्त आ गया है। मेरा यह तुमने क्या बना डाला? वह कुनमुन-कुलबुल, और हड्डियाँ मेरे नीचे करर्र्-करर्र्। माँ मेरी, मेरा तुमने यह क्या बना डाला? **(एक तरफ होकर गाड़ी के सिरे पर बैठ जाता है।)**

कुसलो—आओ, बीरन, छोड़ो। चलो, दो-एक घूँट ले डालो। रात के वक्त यों ही डर लग आता है। रात काली भयावनी है। पर कोई बात नहीं। कल दिन निकलेगा, और एक के बाद दूसरा दिन आता और बीतता जायगा, धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा। आज का सब कुछ बीता होकर भूल जायगा। जरा भर की बात है। लड़की के हाथ पीले हुए, भाँवर फिरीं कि फिर आज की क्या सुध-बुध रह जायगी? सब बिसर जायगा। चलो कहती हूँ दो घूँट चढ़ा लो। पी के फिर हरे हो आओगे। कोठरी में बाकी सब मैं कर-करा देती हूँ।

चन्दन—**(मानो, नई आशा से अपने को उठाता है।)** है क्या कुछ बचा हुआ? लाओ तो मैं सब खतम कर दूँ। **(जाता है।)**

(सोना, जो इस सारे वक्त दरवाजे पर खड़ी थी, चुपचाप उसके लिये रास्ता छोड़ देती है।)

कुसलो—जा बीरन, जा। बाकी मैं किये देती हूँ। खुद जा के खोद-खाद और गाड़-गूड़ के निपटाए देती हूँ। फावड़ा कहाँ फेंक दिया है? **(फावड़ा देखकर उठाती है और कोठरी में उतरने को जाती है)** सोना, यहाँ आ के लालटेन को जरा थामे तो रख।

सोना—और वह?

कुसलो—उसमें डर बैठ गया है। तुमने भी बिचारे पे बड़ी सख्ती

की। उसे रहने दे, भगवान् दया करे। धीरे-धीरे आपे में आ जायगा। मैं खुद बाकी किये डालती हूँ। लालटेन यहाँ पकड़ रख, इस जगह। हाँ, अब दीखता है। **(कुसलो कोठरी में घुसती और ओझल हो जाती है।)**

सोना—(जिधर से चन्दन घर के अन्दर गया उस दरवाजे की तरफ देखकर) अब तो मन भरा! बड़ी रंगरेली सूझती थी। बड़े झूमे और फूले फिरते थे। अब पता चलेगा कि कलेजे पे कैसी बीतती है। अब मस्ती उतरेगी कुछ।

चन्दन—(घर से निकलकर उसी कोठरी की तरफ भाग के आता है।) माँ, माँ, सुनो—

कुसलो—(बाहर सिर निकालती है) क्या है बेटा?

चन्दन—(सुनकर) गाड़ो मत उसे। वह जीता है। सुनती नहीं? वह जीता है। वह सुनो—कुनमुन, कुलबुल! सुना नहीं?—सुनो-सुनो, साफ़ तो सुनता है!

कुसलो—भैया, अब वह कुलबुलाने को है कहाँ? तुम ऊपर तख्ता रखके बैठे तो वह पिचकर पापड़ हो गया है। सिर कुचलकर बन गया है भुरता!

चन्दन—तो फिर यह बोलता क्या है? **(कान को उँगली से रोकता है)** वह तो कुनमुना रहा है! मैं तो हाय डूब गया, मिट गया। अरे, मेरा यह क्या बना डाला। अब मैं कहाँ जाऊँ? **(वहीं चौखट पर बैठ जाता है।)**

पाठान्तर

चौथे अंक के अन्त में जहाँ प्रसंग आता है "सोना—मैं जानती हूँ। डाल दूँगी गंगाजली में। (जाती है)" वहाँ यह पाठ भेद भी हो सकता है।

दृश्य २

[मकान का वही भाग। नन्दी तखत पर पड़ी है, एक दुलाई ओढ़े है। मंगल हुक्का लिए चौतरे पर बैठा है।]

मंगल—रामराम, क्या महक फैला रक्खी है? बदकार नहीं तो। ये शराब को खंडाते फिरते हैं। तमाकू भी तो नहीं काम आता। बास बनी-की-बनी है। नाक में चढ़ी जाती है। क्या कोई करे। ओ भगवान्, दयानिधान, ऊँह चलो, सोओ जी। (लालटेन के पास जाता है कि बुझा दे।)

नन्दी—(उछलकर पड़ती है और उठके बैठ रहती है) ओ, मंगल दादा, बुझाना नहीं।

मंगल—बुझाना नहीं! क्यों?

नन्दी—वहाँ का शोर सुनो तो? कैसा हल्ला है? (सुनती है) और वह कोठे में—वहाँ फिर कुछ हो रहा है सुनते नहीं हो?

मंगल—तुम्हें उससे क्या? किसी ने तुम्हें कहा कि सब कहीं की फिकर रक्खो! चुप लेटी रहो और सो जाओ। लालटेन मैं बुझाए देता हूँ। (बत्ती धीमी करता है।)

नन्दी—दादा, ओ दादा, एकदम बुझाना नहीं। थोड़ी जलती रहने दो। थोड़ी; बिलकुल जरा जुगनू जैसी। नहीं तो मुझे बड़ा डर लगता है।

मंगल—(**हँसता है**) अच्छा, ले। (**आकर उसके पास बैठता है**) ऐसा भला डर काहे का ?

नन्दी—कोई कैसे न डरे, दादा ! बहन की हालत—ओह, खाट की पटिया से सिर दे-दे मार रही है (**हौली आवाज में**) तुम जानो, मैं जानती हूँ।···एक छोटा-सा भैया हमारा होगा···मैं जानूँ, हो गया है।

मंगल—ऊँह, बातून की दादी नहीं तो। जाने सिर में क्या-क्या भर लिया है। तू तो सब-कुछ जानकर धरेगी। पड़, सो। जा, पड़, सो। (**नन्दी लेट जाती है**) हाँ ठीक, ऐसे ही। (**उसको ठीक से चारों तरफ ढांपके ओढ़ा देता है।**) बस ऐसी ही। और देखो, सिर में बहुत बातें भरोगी तो जल्दी बूढ़ी हो जाओगी।

नन्दी—तुम चौतरे पे सोओगे, दादा ?

मंगल—नहीं तो भला पूछो, और कहाँ। कैसी भोली मूरख है, अभी सब जान गई। (**फिर उसे चारों तरफ ओढ़कर समेटता है।**) बस, अब बिलकुल चुपचाप सोती रहना। (**चौतरे के पास आता है।**)

नन्दी—बस एक बार चिचियाया। फिर—फिर तो आवाज़ नहीं आई।

मंगल—ओ भगवान्, दयानिधान ! क्या कहा ? किस की आवाज़ नहीं आई ?

नन्दी—भैया की।

मंगल—भैया ! बावली है क्या ? हो कुछ तो आवाज आए।

नन्दी—मैंने सुनी जो थी। कसम जो नहीं सुनी। ऐसी नन्ही बारीक आवाज़ !

मंगल—सुनी थी ! बड़ी सुनी थी ! अच्छा, सुनी भी तो क्या हुआ ?

तेरी जैसी एक छोटी-सी बिन्नो थी, वही रोई होगी। सो, आया हौआ और उठा के ले गया।

नन्दी—कौन हौआ ?

मंगल—अरी, हौआ। कौन क्या ? (**चौतरे पर चढ़ता है।**) अलाव की गरमाई यहाँ तक आती है। ओ भगवान्, दयानिधान! क्या रात है ? उन्हें भी कैसी जगह मिली। ओ भगवान्, दयानिधान!

नन्दी—तुम सो रहे हो ?

मंगल—लो, पूछो भला। अरी, तो क्या गाना गाऊँ ? (**शान्ति रहती है।**)

नन्दी—दादा, ओ दादा। मैं कहती हूँ, कोई खोद रहा है। तुम्हें नहीं सुनता ? कसम जो नहीं खोद रहा हो। वे खोद रहे हैं।

मंगल—सपना देख रही है क्या ? खोद रहे हैं, रात में खोद रहे हैं! कौन खोद रहा है ? अरी, यह तो गाय दीवार से सिर खुजा रही है। पूछो तो भला, बड़ी आई खोदने वाली। चुप, चल, सो। नहीं तो बत्ती किए देता हूँ।

नन्दी—नहीं दादा, नहीं, बुझाओ नहीं। मैं नहीं···सच मैं जब··· ओ, कैसा डर लगता है ?

मंगल—डर ? डरो नहीं तो डर नहीं लगेगा। देखो, भोली को। पहले डरती है, फिर कहती है डर लगता है। अरे डरोगी, तो रात डरावनी नहीं तो कुछ और होगी ? उँह, कैसी मूरख नादान छोकरी है ? (**शान्ति रहती है। कोई नहीं बोलता है, बस, झींगुर की आवाज सुनाई देती है।**)

नन्दी—(**हौली आवाज में**) दादा, ओ मंगल दादा, सो गये!

मंगल—अरी, यह फिर! क्या है ?

नन्दी—हौआ कैसा होता है ?

मंगल—कैसा होता है ? देख, ऐसा होता है कि—जब तेरी-सी कोई लड़की हो न कि जो बोलती जाय और सोये नहीं, तो वह झोला लेके आता है और लड़की को उठा के उसमें डाल लेता है। फिर सब-का-सब आप उसमें उतर जाता है। और लड़की के कपड़े उतार के उसमें ऐसी मार लगाता है, ऐसी मार—

नन्दी—काहे से मारता है ?

मंगल—अरे, एक उसके पास काँटों की झाड़ू होती है, समझी ? उससे।

नन्दी—झोले के अन्दर होके उसे दीखता फिर कैसे है ?

मंगल—सो फिकर न करो। वह सब देख लेता है।

नन्दी—मैं उसे काट खाऊँगी।

मंगल—ना बीबी, उसे कोई काट-बाट नहीं सकता।

नन्दी—दादा, कोई आ तो नहीं रहा है ? कोई है। ओ मैया री !

मंगल—आता है तो आने दे। तुझे हुआ क्या है। मैं जानूँ तेरी माँ है। **(सोना आती है।)**

सोना—नन्दी ! **(नन्दी सो जाने का बहाना करती है।)**

मंगल—क्या है ?

सोना—यह लालटेन क्यों जल रही ? हम लोग उधर ही सो जायँगे, सुना ?

मंगल—अच्छी बात, अभी फैला के टाँग सीधी की थी कि लो, बत्ती किए देता हूँ।

सोना—**(अपने बकस में सामान टटोलती-खखोलती है। झींकती भी जाती है।)** बस कोई चीज चाहिए तो कमबख्त मिल के नहीं देती !

मंगल—क्यों, क्या ढूँढती हो ? क्या चाहिए ?

सोना—गंगाजल की एक शीशी थी। जो बिना गंगाजल मर गया

तो, तुम जानो, पाप न लगेगा ?

मंगल—जरूर पाप लगेगा। धरम-मर्जादा के साथ काम होना चाहिए। है कि नहीं ? मिली ?

सोना—हाँ, मिल गई। (जाती है।)

मंगल—यह ठीक रहा नहीं तो मैं अपने पास का गंगाजल ही दिये दे रहा था। श्रो भगवान्, दयानिधान !

नन्दी—(काँपती हुई उछल के उठ बैठती है) दादा, श्रो दादा ! सोश्रो नहीं, कसम देती हूँ, सोना नहीं। श्रो, कैसा भयावना लगता है ?

मंगल—क्या भयावना ?

नन्दी—श्रो, मर जायगा। हमारा नन्ना भैया मर जायगा। राधा काकी ने गंगाजल दिया था, तभी उनका मुन्ना मरा था।

मंगल—चुप कर। मर जायगा तो गाड़गूड़ देंगे, चुप।

नन्दी—पर जो बच जाय ? लेकिन हमारी दादी वहाँ है। मैंने क्या सुना नहीं। मैंने सुना, दादी कहती थी। मैंने कानों सुना। कसम जो नहीं सुना।

मंगल—क्या सुना ? चल, आई सुनने वाली ? कहता हूँ, पड़ के सो। सिर से ढाँप के सो जा। कुछ खुला न रहे। खतम हुई बात।

नन्दी—जीता रहा, दादा, तो मैं उसे पालूँगी।

मंगल—(दहाड़ की आवाज में) श्रो भगवान्, दयानिधान।

नन्दी—उसे कहाँ रखेंगे, क्यों दादा ?

मंगल—ठीक जगह रखेंगे, और कहाँ ? तुझे क्या मतलब है ? कहता हूँ, तू पड़ के सो। नहीं तो दादी आयगी तो वह खबर लेगी कि······ (शान्ति रहती है।)

नन्दी—दादा, श्रो दादा, वह लड़की—तुम सुनाते थे न ? उसे मारा तो नहीं था ?

मंगल—कौन ! वह लड़की ? ए-हाँ, वह ? वह तो बच गई थी और फिर बड़ी हो गई थी ।

नन्दी—कैसे दादा ? कहते थे, तुम्हे मिल गई थी ?

मंगल—हाँ, मिल ही तो गई थी ।

नन्दी—कहाँ मिल गई थी ? बताओ, बताओ, दादा ?

मंगल—कहाँ क्या ? अपने घर मिल गई थी, और कहाँ ? हम पहुँचे एक गाँव । घर में घुस के कोना-कोना छानने लगे । देखते क्या हैं कि वही लड़की धरती पे पड़ी है । पड़ी पेट के बल मजे में खेल रही है । उसके सिर पर एक सिपाही बूट की ठोकर देने वाला था कि मेरे मन में दया आ गई । उठा के मैंने उसे ऊपर लिया । यह-लो, फिर तो वह मुझे छोड़कर न दे । ऐसी हो गई, ऐसी भारी कि मन से भारी । और अपने नन्हें हाथों से, जहाँ पड़ा, ऐसे कस के जोर से पकड़ लिया कि फिर छोड़ के न दे । सो मैं उसका सिर थपकने लगा । सिर के बाल ऐसे हो रहे थे कि काँटे । खैर, थपकते थपकते आखिर चुप हो के वह सो गई । और चुस-चुस अंगूठा चूसने लगी । हम उसे कहाँ डालते ? सो हम उसे ले के पालने लगे । वह भी फिर हमारी ऐसी आदी हो गई कि हम लड़ाई पे जाते तो वह भी साथ जाती । फिर तो वह बड़ी होकर ऐसी खूबसूरत हुई कि—

नन्दी—उसका गंगाजल तो नहीं हुआ था न ?

मंगल—कौन जाने ? हाँ, नहीं ही हुआ क्योंकि वह लोग कोई हमारे जैसे थोड़े ही थे ?

नन्दी—अंगरेज वाले थे ?

मंगल—यह खूब, अंगरेज वाले ! न, गोरे नहीं, देसी थे, पर दूसरे मुलक के । लड़की का नाम हमने रखा, नन्नी । बड़ी अच्छी लड़की थी, वह नन्नी । देखो मैं अपना पिछला सब-कुछ भूल गया हूँ । लेकिन वह नन्नी कम-बख्त अब भी मेरी आँखों के आगे रहती है । फौज की नौकरी में मैं कितने ही

बरस रहा। एक बार मुझे ऐसी मार लगी, ऐसे बेंत लगे, ऐसे कि—एक तो वह याद है। दूसरी याद मुझे नन्नी की है। बस और मुझे कुछ याद नहीं है। हम चलते तो वह हमारे गले में हाथ डाल के ऐसी लटक जाती कि हमें फिर उसे गोद में ले के चलना होता। वैसी लड़की भी मैं कहूँ जहान में ढूँढो तो न मिले। फिर पीछे हमने उसे दे दिया। कप्तान साहब की बीबी ने ले लिया कि हम बेटे की तरह रखेंगे, सो फिर वह खूब हुशियार हो गई। हम सब सिपाही उसे दे के फिर बड़ा दुःख मानते रहे।

नन्दी—इससे, दादा, मुझे एक याद आती है। बापा मर रहे थे। तुम तब हमारे यहाँ नहीं थे। उन्होंने बुलाया, बोले, चन्दन, मुझे माफ करना। कह के बापा रोने लगे। ऐसे रोने लगे! (आह भरती है।) तब मैं भी बड़ी दुःखी हुई थी।

मंगल—अँ-हाँ, सो ही तो। तुम जानो—

नन्दी—दादा, ओ दादा, कोठरी में कुछ हो रहा है। सुनाई नहीं देता? ओ मैया, ओ भगवान्! दादा, वे कुछ करके उसे मार देंगे। उसकी नन्ही-मुन्नी-सी जान होगी। ओह, (सिर ढककर सुबकने लगती है।)

मंगल—(सुनता है) सच, दुष्ट कुछ कर तो रहे हैं। गाज उन पे नहीं पड़ती! हाँ तो, ओः ये औरतें हैं कि साँपन, चुड़ैल! यूँ तो मरद कौन कम है, पर औरतें···क्या जंगली बिल्ली होगी कि...कुछ उनसे परे नहीं।

नन्दी—(उठकर) दादा, ओ दादा!

मंगल—ये फिर क्या?

नन्दी—उस दिन आया था न मुसाफर। कहानी में कहता था कि बच्चा मरता है तो आत्मा सीधी सुरग को जाती है। क्यों, सच है दादा?

मंगल—कौन जाने सच्ची होने की। लो और सुनो।

नन्दी—तो अच्छा है, मैं भी मर जाऊँ। (रोती है)

मंगल—तब तुम्हारा नाम खारज हो जायगा।

नन्दी—दस बरस तक के तो बच्चे ही होते हैं न? सो तब तक मरने से आत्मा भगवान के पास जाती है। नहीं तो पीछे कुगत होती है।

मंगल—ठीक बात है। कुगत पक्की है। तुम जैसों की गत बुरी न हो तो क्या हो? कौन तुम्हें सिखाता है? क्या तुम देखती और सुनती हो! सब गन्दी बातें, कुटेव, बुराई। मुझे ही देखो। मुझे किसी ने कुछ सिखाया नहीं, तो भी दो-एक बात जानता हूँ। देहाती की तरह नहीं हूँ। देहात की औरत क्या है, कीच, मट्टी और क्या? ऐसी इस हिन्दुस्तान में लाखों पड़ी हैं, करोड़ों। सब हिये की अन्धी, काला अक्षर उन्हें भैंस है। टोने-टोटके बस सब तरह के करवा लो। हैजा हो, प्लेग हो, सब को झाड़-फूँक के जोर से दूर करा लो। और बच्चों की हारी-बीमारी में माता-बराई पुजवा लो। ये सब वेद वे खूब जानती हैं।

नन्दी—हाँ, माँ भी ऐसा करती है।

मंगल—वही तो, वही तो। लाखों-करोड़ों औरतें और लड़कियाँ हैं; जैसे जंगल की भैंस। पैदा हुईं, वैसी मर गईं। न आँख से कुछ देखना न कान से सुनना। देहात का मरद तो भी कुछ सीख-साख लेता है। खेत-खलिहान में, या फौज में, नहीं तो फिर जेल में ही जाके कुछ जान-पढ़ लेता है। मिसाल में मुझे ही देखो। पर औरत—और बात तो दूर रही, वह तो इतना भी नहीं जानती कि आज दिन क्या है। मुँह से सुन लो बिरस्पत, शुक्कर। पर पूछो कि बिरस्पत क्या होता है, और शुक्कर, तो मुँह पे हवाई देख लो। अन्धी भैंस हैं, अन्धी भैंस। मटराती फिरती है यहाँ-वहाँ। और हर जगह जाके मुँह डालती है। जब देखो नाक कचरे में। वही तेरी-मेरी चुगली-बुराई।...और जानने को जानती हैं गन्दे-भद्दे गीत। गायँगी ओ-ओ-ओ-ओ। पर पूछो कि ओ-ओ-ओ से क्या मतलब, तो कुछ नहीं।

नन्दी—दादा, मुझे आधे से ज्यादा हनुमान-चालीसा याद है।

मंगल—बड़ा याद है, पर तेरा क्या क़सूर ? तुझसे आस कोई क्या रखे? कौन तुझे सिखाता है? सिखाता भी होगा तो जाने कहाँ का एक गँवार बदसऊर। सो भी कमची की मार से। यह विद्या तुम्हें मिलती है। मैं नहीं जानता कौन तुम्हारे लिए जवाबदार है? रंगरूट के लिए सार्जन्ट या हवालदार जवाबदार है, पर तुम-जैसियों के लिए जवाब देने वाला कोई नहीं। जैसे चौपाए बिन रखवाले आवारा होकर बिगड़ जाते हैं, सो ही तुम औरतों का हाल है। तुमसे जड़ और जाहिल दूसरा कौन होगा? सबसे मूरख है तो तुम्हारी जात।

नन्दी—तो कोई क्या करे?

मंगल—क्या करे? करे यह कि···बस, बस हुआ। मुँह ढाँप के चल, सो। (**सब शान्ति होती है, झींगुर की आवाज सुनने को रह जाती है।**)

नन्दी—(**फिर चौंककर उठ पड़ती है।**) दादा, कोई जोर से चिल्ला रहा है। कसम जो नहीं चिल्ला रहा। दादा, ओ दादा, यह चीख कैसी है?

मंगल—अरी, मैं कहता हूँ, ओढ़ के सो जा, जो सुनना है।

(**चन्दन आता है, पीछे-पीछे कुसलो।**)

चन्दन—हाय, मेरा यह क्या किया। मुझे यह क्या बना डाला?

कुसलो—एक घूँट पी के देखो बीरन, एक घूँट। बात क्या है? (**शराब लाती है और बोतल सामने रख देती है।**)

चन्दन—तो लाओ, यहाँ दो। शायद इससे कुछ चले।

कुसलो—देखना, वे सोये नहीं हैं। यह लो थोड़ी पी लो।

चन्दन—तुम्हारा मतलब क्या था? यह तुमने सोचा क्या? उसे कहीं ले ही जा सकती थीं।

कुसलो—(**हौली आवाज में**) थोड़ा जरा चित्त सँभालो, होश

करो। लो, थोड़ी और पीओ। बीड़ी क्यों नहीं सुलगा लेते? इससे मन ठिकाने आयगा।

चन्दन—माँ, लगता है, मेरा वक्त आ गया है। वह कैसे कुनमुन-कुलबुल करता था। और नन्ही-नन्ही हड्डी-पसलियाँ कैसी आवाज़ करके टूटीं कर्‌र्‌र्-कर्‌र्‌र्…मैं तो अब हो लिया, माँ। मेरी जान का अब भरोसा नहीं।

कुसलो—बकते नहीं हैं, बीरन। छोड़ बातें मूरखपने की। ऐसी रात को न डर हो तो डर लग आता है, बेटे! तड़का होने दो। एक के बाद फिर दूसरा दिन निकलता जायगा और सब भूल जायगा।

(चन्दन के पास जाती है और हाथ उसके कन्धे पर रखती है।)

चन्दन—चली जाओ मेरे पास से। दूर हटो। मुझे तुमने यह क्या बना डाला?

कुसलो—चेत करो, बीरन, चेत करो। कुछ बात भी हो भला। क्या बात है, कुछ नहीं। **(उसका हाथ अपने हाथ में लेती है।)**

चन्दन—हट जाओ मेरे पास से। नही तो मैं मार बैठूँगा। अब मुझे क्या है। जान से मार डालूँगा।

कुसलो—ओह, कैसी दहल अन्दर बैठ गई है? चलो, थोड़ी नींद तो लो, बेटा।

चन्दन—नहीं, मैं नहीं जाता। मुझे नहीं जाना। मैं तो डूब गया, मिट गया।

कुसलो—**(सिर हिला कर)** ओह, चलूँ, उसका बिस्तर ठीक-ठाक कर दूँ। लेट के थोड़ी देर आराम करेगा, तो सब दुरुस्त हो जायगा।

(चन्दन हाथों में अपना चेहरा लेकर बैठा है। मंगल और नन्दी सोते पड़े मालूम होते हैं।)

चन्दन—वह कुलबुला रहा है! कुनमुन-कुलबुल! वह देखो, साफ

दीखता है। माँ ज़ा के गाड़ देगी, जरूर गाड़ देगी। (**दौड़कर दरवाजे पर जाता है**) ओ, माँ, गाड़ना नहीं।

(**वह जाने को होता है। कुसलो आती है।**)

कुसलो—(**हौली आवाज में**) क्या है, बीरन, क्या है ? भगवान् भला करे, तुम जरा आराम क्यों नहीं कर लेते ? वह जी कैसे सकता है। हड्डियाँ तक तो पिच-पिचाके चूरा हुईं।

चन्दन—तो लाओ शराब, भर लाओ। और भरो।

कुसलो—अब जाओ, बीरन, गहरी नींद एक सो लो; जाओ।

चन्दन—(**सुनता हुआ खड़ा रहता है**), अब भी जीता है,···वह देखो, कुनमुन-कुलबुल। कुनमुन उसकी सुनती नहीं ? पर वह देखो।

कुसलो—(**हौले से**) कहती तो हूँ कुछ नहीं है। जाओ, चल के नींद लो।

चन्दन—माँ, ओ माँ, मैं तो खो गया। बीत गया। यह मेरे साथ तुमने क्या किया ? कहाँ मैं जाऊँ ? (**घर से निकलकर बाहर भाग जाता है। कुसलो पीछा करती है।**)

नन्दी—दादा, ओ दादा, उन्होंने उसे घोंटकर मार डाला।

मंगल—(**गुस्से से**) तू सो, पड़। ओ भगवान् दयानिधान। सुना नहीं ? पिटेगी क्या ?—कहता हूँ, सो। मुँह ढाँप के सो जा।

नन्दी—दादा, मेरा छोटा मुन्ना···ओ, कोई मुझे पकड़ रहा है। पंजे गाड़ के पकड़ रहा है। दादा, ओ दादा, मुझे अपने पास ले लो। भगवान् के लिए दादा, ले लो। पकड़ रहा है···पंजों से पकड़ रहा है। (**चौतरे पर भाग कर आती है।**)

मंगल—ओह, हमारी मुन्नी को कैसा डरा दिया ? कैसे-कैसे गीध आदमी हैं। राक्षस नहीं तो। नरक के कीड़े, नरक में जायँगे। आ, आ बेटी, चढ़ आ।

नन्दी—(चौतरे पर चढ़ आती है) तुम जाना कहीं नहीं। कहीं मत जाना।

मंगल—मैं कहाँ जाऊँगा। चढ़ आ, चढ़ आ। आ जा, यहाँ रजाई में। ओ भगवान्, मेरी बेटी को कैसा डरा दिया? (उसे ओढ़ा लेता है) मेरी नन्हीं चिड़िया बिटिया, कैसा उसे डरा दिया है! राक्षस हैं, चंडाल नरक में पड़े, हाँ तो।

अंक ५

दृश्य १

[सामने भुस का ढेर है, बाईं तरफ खलिहान की धरती, दाईं तरफ कोठा जिसमें नाज भरा जाता है। उसके दरवाजे खुले हैं। रास्ते में भुस फैला है, पीछे रहने का घर दीखता है, जहाँ से गाने-बजाने की आवाजें आ रही हैं। दो लड़कियाँ खलिहान के पास से निकलके घर की तरफ जा रही हैं !]

पहली लड़की—देखा, पैर भी न भीगे और हम निकल आये। मैं कहती न थी। गली में तो इतनी कीच है कि राम, राम (वे रुकती हैं, और भूसे पर पैर पोंछकर साफ करती हैं। पहली लड़की को भूसे के ढेर की तरफ देखते हुए कुछ दीखता है।)

दूसरी—(गौर से देखती है तो कोई दिखाई देता है) अरे, यह तो मंगल है, मंगल। कैसा नशे में बेहोश पड़ा है ?

पहली—अरी, ले, मैंने तो सुना था वह शराब छूता तक नहीं है।

दूसरी—नहीं मिलती तो नहीं छूता। और जब मिल ही गई······

पहली—यह खूब कही। वह भूसा लेने आया होगा। देखो न, हाथ में अब तक रस्सी है। उसे लिए-लिए सो गया है।

दूसरी—(सुनकर) अब तक गाना-बजाना चल रहा है ! बरात शायद अभी विदा नहीं हुई। सुना है मेमा तो रोई भी नहीं।

पहली—हमारी बुआ कहती थीं कि उसकी मरजी नहीं है, ब्याह की।

वह दूसरा बाप है न उसका, वही जबरदस्ती करवा रहा है। नहीं तो वह कभी न करती। सुना तो होगा तुमने कि लोग इस ब्याह पर क्या-क्या कह रहे हैं।

रजनी—(**बढ़कर लड़कियों तक आती है।**) जै रामजी की, बहनो, राज़ी-खुशी हो?

लड़कियाँ—हाँ, तुम भी खुशी-राजी?

पहली—ब्याह में जा रही होगी?

रजनी—वह तो हो-हुआ चुका। हम तो आखरी नज़र झाँकने आ गई हैं।

रजनी—वहाँ से मेरे आदमी को तुम बुला दोगी, बहन? अजबपुर के किसन को कदाच तुम जानती हो कि न हो।

पहली—लो, जानती क्यों नहीं! दूल्हे के नाते में कुछ लगते हैं न?

रजनी—हाँ, चाचा लगते हैं।

दूसरी—तो तुम्हीं क्यों नहीं चली जातीं? यह लो, ब्याह के घर में जाने से बचती हो?

रजनी—मेरा मन नहीं है और—बखत भी नहीं है। घर जाना है, सो अबेर बहुत हो गई है। इस ब्याह में आने की हमारी कोई मंशा नहीं थी। हम तो ज्वार की गाड़ी भर के कस्बे की तरफ जा रहे थे। यहाँ आके पानी-सानी को बैल जो खोले कि लोग मेरे आदमी को जोर करके ब्याह में ले गए।

पहली—तो तुम रुकी कहाँ हो? राधे परचुनी के?

रजनी—हाँ, वहीं रुकी हूँ। अच्छा, तो लो बहना, उन्हें बुला दो, मैं इतने यहीं खड़ी हूँ। जाकर कहना—समझ गई न! कैसी दयावान् हो? कहना, तुम्हारी रजनी ने कहा है कि चलने का बखत हो गया है सो फौरन आ जावें।

पहली लड़की—तुम खुद भीतर जाती ही नहीं तो अच्छा कहे आती हूँ। (**लड़कियाँ पगडण्डी से मकान की तरफ बढ़ जाती हैं वहाँ से गीतों की और ढोलक की आवाज़ आ रही है।**)

रजनी—(**अकेली सोचती खड़ी है।**) जा तो मैं सकती थी, पर जी नहीं होता। एक मुद्दत हो गई कि मैंने उसे देखा नहीं है। तभी आखरी बार देखा था, जब उन्ने मुझे त्यागा था। साल से ऊपर हो गया। मन में तो होती थी कि चलूँ, झाँक तो आऊँ कि सोना के साथ उसकी कैसी निभ रही है। कहते हैं, दोनों में पटती नहीं है। वह ऐसी ही औरत है, और अपनी मर्जी चलाती है। हो न हो, ऐसे में चन्दन को मेरी याद तो जब-तब आई ही होगी? उसे धन का आराम चहिए था, सो उसके कारन मुझे छोड़ दिया। नहीं, राम भला करे, मैं किसी के बुरे में नहीं हूँ। लेकिन तब जी को कैसी चोट लगी थी? कितना दर्द था? चलो वह सब अब बीत-बिसर गया है। तो भी वह कहीं एक निगाह दीख जाते तो क्या बुराई थी। (**मकान की तरफ देखती है और चन्दन दिखाई देता है।**) यह लो, वह तो वह आ रहे हैं। लड़कियों ने कहीं उन्हें ही तो नहीं कह दिया? और बरातियों को छोड़ के वह चले कैसे आ रहे हैं! लो, मैं जाऊँ। (**चन्दन पास आता है, सिर उसका छाती पर झुक आया है, बाँहें हिल रही हैं और मुँह से कुछ बड़बड़ा रहा है।**) कैसे दीखते हैं, जैसे झुँझलाए, परेशान हों।

चन्दन—(**देखकर रजनी को पहचानता है**) रजनी, ओह मेरी रजनी, तुम आईं! कैसे आईं?

रजनी—अपने आदमी को पूछने आई थी।

चन्दन—ब्याह पे तुम क्यों नहीं आईं? आके घर का हाल देखतीं, और मुझ पे हँस लेतीं।

रजनी—मैं क्यों किसी पर हँसूँगी? मैं तो अपने पति के लिए

वह दूसरा बाप है न उसका, वही जबरदस्ती करवा रहा है। नहीं तो वह कभी न करती। सुना तो होगा तुमने कि लोग इस ब्याह पर क्या-क्या कह रहे हैं।

रजनी—(बढ़कर लड़कियों तक आती है।) जै रामजी की, बहनो, राजी-खुशी हो?

लड़कियाँ—हाँ, तुम भी खुशी-राजी?

पहली—ब्याह में जा रही होगी?

रजनी—वह तो हो-हुआ चुका। हम तो आखरी नजर झाँकने आ गई हैं।

रजनी—वहाँ से मेरे आदमी को तुम बुला दोगी, बहन? अजबपुर के किसन को कदाच तुम जानती हो कि न हो।

पहली—लो, जानती क्यों नहीं! दूल्हे के नाते में कुछ लगते हैं न?

रजनी—हाँ, चाचा लगते हैं।

दूसरी—तो तुम्हीं क्यों नहीं चली जातीं? यह लो, ब्याह के घर में जाने से बचती हो?

रजनी—मेरा मन नहीं है और—बखत भी नहीं है। घर जाना है, सो अबेर बहुत हो गई है। इस ब्याह में आने की हमारी कोई मंशा नहीं थी। हम तो ज्वार की गाड़ी भर के कस्बे की तरफ जा रहे थे। यहाँ आके पानी-सानी को बैल जो खोले कि लोग मेरे आदमी को जोर करके ब्याह में ले गए।

पहली—तो तुम रुकी कहाँ हो? राधे परचुनी के?

रजनी—हाँ, वहीं रुकी हूँ। अच्छा, तो लो बहना, उन्हें बुला दो, मैं इतने यहीं खड़ी हूँ। जाकर कहना—समझ गई न! कैसी दयावान् हो? कहना, तुम्हारी रजनी ने कहा है कि चलने का बखत हो गया है सो फौरन आ जावें।

पहली लड़की—तुम खुद भीतर जाती ही नहीं तो अच्छा कहे आती हूँ। (लड़कियाँ पगडण्डी से मकान की तरफ बढ़ जाती हैं वहाँ से गीतों की और ढोलक की आवाज़ आ रही है।)

रजनी—(अकेली सोचती खड़ी है।) जा तो मैं सकती थी, पर जी नहीं होता। एक मुद्दत हो गई कि मैंने उसे देखा नहीं है। तभी आखरी बार देखा था, जब उन्ने मुझे त्यागा था। साल से ऊपर हो गया। मन में तो होती थी कि चलूँ, झाँक तो आऊँ कि सोना के साथ उसकी कैसी निभ रही है। कहते हैं, दोनों में पटती नहीं है। वह ऐसी ही औरत है, और अपनी मर्जी चलाती है। हो न हो, ऐसे में चन्दन को मेरी याद तो जब तब आई ही होगी ? उसे धन का आराम चहिए था, सो उसके कारन मुझे छोड़ दिया। नहीं, राम भला करे, मैं किसी के बुरे में नहीं हूँ। लेकिन तब जी को कैसी चोट लगी थी ? कितना दर्द था ? चलो वह सब अब बीत-बिसर गया है। तो भी वह कहीं एक निगाह दीख जाते तो क्या बुराई थी। (मकान की तरफ देखती है और चन्दन दिखाई देता है।) वह लो, वह तो वह आ रहे हैं। लड़कियों ने कहीं उन्हें ही तो नहीं कह दिया ? और बरातियों को छोड़ के वह चले कैसे आ रहे हैं ! लो, मैं जाऊँ। (चन्दन पास आता है, सिर उसका छाती पर झुक आया है, बाँहें हिल रही हैं और मुँह से कुछ बड़बड़ा रहा है।) कैसे दीखते हैं, जैसे झुँझलाए, परेशान हों।

चन्दन—(देखकर रजनी को पहचानता है) रजनी, ओह मेरी रजनी, तुम आईं ! कैसे आईं ?

रजनी—अपने आदमी को पूछने आई थी।

चन्दन—ब्याह पे तुम क्यों नहीं आईं ? आके घर का हाल देखतीं, और मुझ पे हँस लेतीं।

रजनी—मैं क्यों किसी पर हँसूँगी ? मैं तो अपने पति के लिए

आई हूँ।

चन्दन—ओह, रजनी मेरी, **(उसे आलिंगन में लेना चाहता है।)**

रजनी—**(गुस्से में अलग हटकर)** इस तरह की बात अब जाने दो। जो था बीत गया। मैं अब उन्हें पूछने आई हूँ। वह हैं ?

चन्दन—सो बीते को याद न करूँ ? क्यों रजनी, उसे याद भी न करने दोगी ?

रजनी—बीते की याद से क्या फायदा ? जो था खतम हुआ।

चन्दन—अब फिर कर वह कभी नहीं आ सकता, यह तुम कहती हो ?

रजनी—हाँ, कभी फिर कर नहीं आ सकता। लेकिन तुम उठके चले क्यों आए हो ? तुम घर के मालिक और विदा के वखत तुम्हीं मेहमानों को छोड़कर चले आए ?

चन्दन—**(वहीं भुस पर बैठकर)** मैं क्यों चला आया ? ओ रजनी, ओ, कहीं तुम जानती···मेरा जी ऐसा खराब, ऐसा उचाट हो रहा है, रजनी, कि चाहता हूँ आँखें मेरी कुछ न देखें ! इससे उठा और उन्हें छोड़ चला आया, कि सब से मैं दूर हो जाऊँ। ओह, जो मुझे दीखना बन्द हो जाता—

रजनी—**(उसके पास आकर)** क्यों, क्या बात है ?

चन्दन—बात ! बात बताऊँ ? खाता हूँ तो वह सामने आता जाता है, पीता हूँ तो वह, सोता हूँ तो वही ? मैं तो घबरा गया हूँ। मेरी जान पे आ बनी है। और बात यह, रजनी, कि मैं अकेला हूँ। दुःख बँटाने वाला मेरा कोई नहीं है।

रजनी—दुःख-चिन्ता छोड़ के चन्दन, क्या अपना जीना नहीं जी सकते ? मैं तो रो-धो के अपना सब दुःख बहा चुकी हूँ।

चन्दन—मेरा घाव तुम नहीं जानतीं, मेरी रजनी। तुम तो आँसुओं से सब बहा चुकी हो। पर मेरे प्राण यहाँ कण्ठ में आन अटके हैं। **(अपना**

हाथ गले पर रख के बताता है।)

रजनी—क्यों, ऐसी क्या बात है ?

चन्दन—क्या बात है ? मैं अपने से तंग हूँ। जीने से ही उकता गया हूँ। आह रजनी, तुमने क्यों नहीं मुझे सँभाल लिया ? मुझे तुमने कहीं का न छोड़ा और अपने को भी बरबाद कर लिया। अब देखो, मेरा यह जीना भी क्या कोई जीना है ?

रजनी—(रो आती है, लेकिन फिर अपने को थामती है) मुझे अपनी जिन्दगी से कोई शिकायत नहीं है, चन्दन ! भगवान् सब को मेरे जैसा भाग्य दे। मैं शिकायत नहीं करती हूँ। मैंने तो सब बात अपने पति से खोल के कह दीं और उन्होंने मुझे माफ कर दिया। वह मेरी निन्दा नहीं करते। मुझे अपने जीवन से असन्तोष नहीं है। मेरे मालिक धीर-वान् हैं, मुझे चाहते हैं और मैं उनके बच्चों को अच्छी तरह न्हिला-धुला के रखती हूँ। वह सच मुझे चाहते हैं। फिर मुझे कलख काहे की हो। विधाता की ऐसी ही मरजी होगी। पर तुम्हारे साथ क्या बात है ? तुम्हारे पास धन है—

चन्दन—मेरे साथ ? मेरी जिन्दगी ?···अभी विदा नहीं हुई है और औसर बिगाड़ना मैं नहीं चाहता हूँ, नहीं तो यह रस्सी लेता (भुसे पर पड़ी रस्सी को उठाता है) उस बल्ली पे लटकाता और फन्दा दे उसमें गरदन डाल झूल जाता। सुनती हो, मेरा और मेरी जिन्दगी का हाल।

रजनी—ओह, भगवान् !

चन्दन—समझती होगी मैं हँस रहा हूँ। समझती होगी मैं पिये हुए हूँ। नहीं, पिये नहीं हूँ। और आज तो कितनी भी पीने का कुछ असर नही होने वाला है। रजनी, कोई मुझे भीतर से खा रहा है। मेरा कन-कन, हड्डी-हड्डी खाए जा रहा है। मैं बेजार हूँ। ऐसा कि मुझे किसी चीज की परवा नहीं है। ओ रजनी मेरी, तुम्हारे साथ के जो दिन थे,

वही मेरे दिन थे। याद है, उस रेती के तीर पै चाँद की चाँदनी में हम रातें-की-रातें कैसे साथ बिताते रहे हैं !

रजनी—उन यादों को न कुरेदो, चन्दन ! क्यों छाल छीलते हो ? मैं अब ब्याहता हूँ और तुम भी। मुझे अब अपने पाप से माफी मिल गई है। पुरानी बातें न छेड़ो, चन्दन !

चन्दन—रजनी, दिल का मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? बताओ, कहाँ जाऊँ ?

रजनी—जाने की क्या बात है ? तुम्हारे क्या है। औरों को क्यों देखते हो ? अपने में सन्तोष मानो। सोना से तो तुम प्रेम करते थे, वैसे ही प्रेम करते रहो।

चन्दन—आह, वह नाम न लो। उससे मुझे नफरत है। वह डाकिन है, डायन ! लेकिन वही मेरे पैरों में जकड़ डाल के ऐसी लिपटी है कि क्या बताऊँ ?

रजनी—कुछ हो, फिर भी तुम्हारी ब्याहता है, चन्दन !···और बहुत बात से क्या होता है ? जाओ मेहमानों को देखो और मेरे आदमी को भेज देना।

चन्दन—ओ रजनी, जो कहीं तुम पूरा हाल जानतीं। पर सच है, बहुत बात से क्या फायदा ? **(रजनी का पति आता है। वह बदहोश हो रहा है, नन्दी भी आती है।)**

रजनी का पति—रजनी, प्यारी, तुम कहाँ हो ?

चन्दन—वह तुम्हारा पति बुला रहा है। जाओ !

रजनी—और तुम—

चन्दन—मैं ? मैं यहीं कुछ देर लेटूंगा **(भुस पर लेट जाता है।)**

पति—एँ, कहाँ है, रजनी ?

नन्दी—वह तो है खलिहान के पास।

पति—वहाँ क्यों खड़ी है ? अरे जाफ़त में आओ न ! लोग तो याद करते हैं, बुलाते हैं तुम्हें, आओ आओ, रौनक रहेगी। बरात रवाना हुई कि बस, हम भी चले—

रजनी—(पति की तरफ जाते हुए) मैं अन्दर नहीं जाना चाहती थी।

पति—अरे, चलो भी। मैं कहता जो हूँ। अपने भतीजे के ब्याह पर जरा कुछ मन बहलाओगी कि नहीं ? नहीं तो लोग बुरा मनाएँगे। ओह, काम को बहुतेरा बखत पड़ा है। (**रजनी का पति अपनी बाँह रजनी के गले में डालता है, और लड़खड़ाता हुआ साथ बाहर जाता है।**)

चन्दन—(**उठता और फिर भुस के ढेर पर वहीं गिर जाता है**) आह, उसे देखकर तो जिन्दगी मुझे और भारी और बेकार हुई जाती है। उसके साथ के ये, वही दिन थे। वही जिन्दगी थी। आह, मैंने अपने ा बरबाद किया। अपना नाश कर डाला ! (**लेट जाता है**) कहाँ जो धरती माता फट जाती और मुझे निगल लेती।

दी—(**चन्दन को देखती और भागकर उसके पास आती है।**) ो बापा, सब तुम्हें पूछ रहे हैं। सब टीका कर चुके हैं और बिदा ा है। सच कहती हूँ टीका हो गया है, और सब लोग बिगड़ रहे ....

न्दन—(**अपने में**) मैं कहाँ जाऊँ ? कहाँ चला जाऊँ ?

न्दी—क्या बापा, क्या कह रहे हो ?

न्दन—नहीं, कुछ नहीं, कोई बात नहीं।

न्दी—बापा, आओ न ! (**चन्दन चुप है। नन्दी बाँह पकड़ कर ंचती है।**) चलो बापा, चल के बिदा करा आओ। सच जानो, ा वहाँ बिगड़ रहे और उल्टा-सीधा कह रहे हैं।

चन्दन—(अपना हाथ खींच लेता है ।) हटो, मुझे छोड़ो।

नन्दी—यह क्या ?

चन्दन—(रस्सी उठाकर धमकाता है जैसे मार उठेगा ।) चल, जा यहाँ से । नहीं तो—

नन्दी—जा के मैं माँ को भेजती हूँ । (दौड़ जाती है ।)

चन्दन—(उठकर) मैं कैसे जाऊँ ? कैसे कहीं हाथ लगाऊँ ? रोली उसे कैसे दूँ ? उसकी आँखों में देखूँ तो कैसे ? (फिर वहीं गिर कर लेट रहता है ।) आह, जो कहीं धरती फट जाती तो मैं वहीं समा जाता। किसी की आँख मुझ पे न पड़ती, और न किसी को मैं ही देखता । (फिर उठता है ।) नहीं, मैं नहीं जाता ।······सब पड़ें भाड़ में । मैं नहीं जाऊँगा । (रस्सी का फन्दा बनाता है, फिर अपनी माँ को देखता, गरदन से रस्सी निकाल कर अलग करता, और फिर वहीं लेट जाता है ।)

कुसलो—(जल्दी में आती है) चन्दन, ओ बेटा, सुनते हो ? लो, वह तो बोलता ही नहीं है । चन्दन क्या बात है ? क्या ज्यादा पी गए हो ? ओ, चन्दन भैया, आओ । कैसे बीरन हो ? लोग बाट देखते उकता रहे हैं ।

चन्दन—ओ माँ, यह तुमने मेरा क्या कर डाला ? मैं तो कहीं का न रहा ।

कुसलो—अरे तो क्या बात है ? आओ बीरन, चलो । चलके बिदा करा दो कि सब काम इज्जत के साथ निबट जाय । समझे, बीरन चलो, लोग राह देख रहे हैं ।

चन्दन—बिदा में मैं असीस दूँ ! कैसे असीस दूँ ?

कुसलो—और कैसे ? जैसे दी जाती है, वैसे दो । सब तो जानते हो ।

चन्दन—जानता हूँ । पर किसको असीस दूँ ? लड़की को ? मैंने उसके

साथ क्या करके रखा है ?

कुसलो—क्या किया है ? और लो, कहाँ की बात ले के बैठते हो। अरे तो उस बाबत कोई पूछ भी रहा है ? कोई क्या जानता है ? परिन्दा तक तो जानता नहीं। और लड़की अपनी राजी से जा रही है।

चन्दन—हाँ, राज़ी से !

कुसलो—थोड़े लिहाज-मिजाज से भी तो क्या हुआ ? जा तो आप रही है न। फिर अब किया भी क्या जाय ? उसे सोचना था तो पहले सोच के रखना था। अब आ के तो इन्कार नहीं कर सकती। लड़के वालों को कहने की जगह कहाँ है। दो बार उन्होंने लड़की को देखा भाला। ऊपर से दहेज का पूरा रुपया संभालवा लिया। सो अब सब काम सही चौकस निबट-निबटा गया है, भय्या।

चन्दन—और उस कोठरी में—वहाँ क्या है ?

कुसलो—(हँसकर) क्यों कोठरी में वहाँ गोभी है, आलू है, अरई है। मैं समझूँ यही चीज है, और क्या ? अरे बीती को क्यों मन में लाता है ?

चन्दन—मैं तो बहुतेरा चाहूँ, मन पे न आय। पर क्या मेरा बस चलता है। जरा खाली होता हूँ तो कानों में सुनता लगने हूँ उसकी वह कररर-कररर···। आह, यह मेरा तुमने क्या कर डाला ?

कुसलो—यह क्या तमाशा बना रहे हो, चन्दन !

चन्दन—(मुँह औंधा डाल लेता है) माँ, मुझे न सताओ। मेरे प्राण यहाँ कण्ठ तक आ रहे हैं। **(गले पर अपना हाथ रखकर बताता है।)**

कुसल—फिर भी काम तो करना ही है। लोग अभी वहाँ दस बातें सुनाने लग रहे हैं। कह रहे हैं, लड़की का बाप कहाँ चला गया है, आता क्यों नहीं ? विदा करने की मंशा नहीं है क्या ? ऐसी बातें शुरू हो गई है, तुम जानो, ऐसे में लोग दो और दो चार करके अनुमान न लगाएँगे तो लगाएँगे। देखा कि तुम्हारे चेहरे पे हवाइयाँ हैं तो उनके ख्याल भी दौड़े।

सिर सीधा रक्खो और चाल सतर, तो मजाल है कि सक पैदा हो। सुना बीरन, चूल्हे से निकल के भट्टी में पड़ने की बात है। मैं क्या समझती नहीं, पर ऐसी ही वक्त तुम जानो, मन कसके रखना चाहिए। ऊपर कुछ न दीखे। हिम्मत न हारो, बीरन, नहीं तो वह और भेद सूँघेंगे।

चन्दन—ओ माँ, तुमने मुझे यह कैसे फँदे में फाँसा है।

कुसलो—बस, बिलखो मत। आओ चलो, और इज्जत-आबरू के साथ जैसे होता है विदा करा दो। फिर झगड़ा साफ।

चन्दन—(मुँह औंधा कर पड़ जाता है) नहीं, मैं नहीं।

कुसलो—(अपने में) यह इसे क्या हो गया है? अभी तो ठीक था। कि अभी एकदम जाने इस पर कौन आ गया है? मालूम होता है नजर लगी है। चन्दन, ओ चन्दन उठो, वह देखो, सोना आ रही है बिचारी मेहमानों को अकेली छोड़ के हैरान चली आ रही है।

(सोना आती है। बढ़िया पोशाक पहने है, नशे से चेहरा सुर्ख है, मस्त और खुश दीखती है।)

सोना—ओ माँ, ठाट-बाट के साथ सब काम पार हो गया। सब इज्जत-आबरू के साथ। क्या रौनक, क्या जश्न। सब खुश हैं। वह कहाँ हैं?

कुसलो—यह है बहू, यहाँ भुस पर पड़ा है। और कहती हूँ आता ही नहीं है।

चन्दन—**(अपनी स्त्री की तरफ देखकर)** एक यह है पी के मस्त हो रही है। देख के मेरे जी में तो उल्टी आती है। ऐसी के साथ भी कोई रह सकता है? **(अपना मुँह फेर लेता है।)** किसी रोज इसे मैं जान से ही न मार बैठूँ कि और बुरी हो।

सोना—लो देखो इन्हें। आके भुस पे लेटे पड़े हैं। कहीं शराब ही तो नहीं है। **(हँसती है)** कोई बात नहीं, आ के मैं भी वहीं तुम्हारे बगल

में लेट जाती, पर अभी वक्त कहाँ है। आओ प्यारे, मैं लिए चलती हूँ। घर पर यह जश्न है कि देखा करो। देख के आँखें तर हो जायँ। आओ तो। वहाँ एक-से-एक बढ़के ऐसी गाने वाली आई कि क्या कभी देखी होगी। वह बाँकी छबि और भरजोर जोबन...सब बड़े आदमियों वाली शान...

चन्दन—क्या ? शा-आ-न !

सोना—शादी एक शान की रही। इज्जत इन्तजाम एक खूबसूरती से पूरा हुआ। लोग कहते हैं कि ऐसी रौनक किसी शादी में तो इस तरफ हुई ही नहीं। यह सजधज कि···आओ प्यारे दोनों साथ चलें। मैंने भी जरा पीली है। पर कोई बात नहीं। अभी हाथ देने लायक हूँ। (उसका हाथ पकड़ती है।)

चन्दन—(हाथ जुगुप्सा से पीछे खींच लेता है।) हट, तू अकेली जा। मैं आ जाऊँगा।

सोना—अब काहे का झींकना है ! मामला निबट गया। हमारे बीच वही थी, उससे पिंड छूटा। अब आगे हम तुम हैं और मौज-मजा है। आड़ हट गई और शादी का काम इज्जत-कायदे से पूरा हो गया। मुझे कैसी खुशी है ! बस क्या कहूँ ? ऐसा लगता है कि मेरा ही तुम से दूसरा ब्याह हो रहा है। वे लोग भी बेहद खुश हैं। तारीफ कर रहे हैं, और मेहमान सब चुनीदा आला दरजे के लोग हैं। लाला बसन्तलाल हैं, और खुद तहसीलदार साहब हैं, और इन्सपेक्टर सब तारीफ कर रहे हैं।

चन्दन—तो तू वहीं उन्हीं के साथ रहती। चली क्यों आई ?

सोना—ठीक है, मुझे वापिस जाना चाहिए। नहीं तो बड़ी बेअदबी की बात है। घर के तो दोनों जने चले आवें, और मेहमान अकेले वहाँ रह जावें। तिस पे मेहमान कौन, कि हाकिम-हुक्काम दरजे के···!

चन्दन—(उठता है और कपड़ों पर से तिनके बीन के साफ करता

है।) तुम चलो, मैं अभी आ रहा हूँ।

कुसलो—देखा न, बूढ़ी उमर हुई सो मेरी कौन सुनता है? आ जाय निकल के जवान कोई तो झट चल देंगे। (**कुसलो और सोना चलने को मुड़ते है।**) क्यों, आ रहे हो न?

चन्दन—अभी आ रहा हूँ। चलो तो। पीछे-ही-पीछे आया। आकर मैं असीस दिये देता हूँ। (**औरतें रुक जाती हैं।**) चलो, चलो, मैं अभी आ रहा हूँ। चलो तो! (**औरतें बढ़ जाती हैं। वह बैठ जाता है और पैरों से जूते उतार देता है।**) भला मैं गया। जैसे जाने को ही बैठा हूँ। मुझे·देखना है तो आकर रस्सी मे देखना झूलता हुआ। फन्दा डाल के मैं तो रस्सी से लटके जाता हूँ। पीछे आ के देखती रहना। रस्सी यह है ही। (**सोचता है।**) कुछ और होता, कोई और दुःख होता तो मैं दबा भी लेता। पर यह तो कलेजे को चबाए जा रहा है। यह मुझसे नहीं दबता। (**बाहर की तरफ चौंककर देखता है**) एँ, लौटकर तो नहीं आ रहीं? नहीं, नहीं आ रही हैं। (**सोना की नकल करता है**) 'जी होता है, आ के वहीं तुम्हारी बगल में आ लेटूँ।' आ लेटे, ऐसी-की-तैसी आ लेटे। हरजाई कहीं की। तो बस, यही रही। रस्सी से झूलती लाश को उतार के कर लेना उससे जितना लाड़ तुमसे करते बने। बस यही रास्ता है। (**रस्सी लेता और उसे खींचता है।**)

मंगल—(**नशे में है, उठकर बैठ जाता है और रस्सी नहीं छोड़ता**) नहीं छोड़ूँगा मैं, किसी को नहीं दूँगा। मैं खुद ले जाऊँगा, खुद। मैंने ही कहा था न,—लाया मैं भूसा। सो मैं खुद ले जाऊँगा। ओ, चन्दन, क्या तुम हो? (**हँसता है।**) बाप की कसम, भूसा लेने तुम आये हो?

चन्दन—रस्सी छोड़।

मंगल—कह दिया मैं नहीं छोड़ूँगा। ओ चन्दन तुम ऐसे मूरख हो कि सूअर। (**हँसता है।**) पर तुम्हें प्यार करता हूँ। अरे, तुम हो एक बेव-

कूफ; देखते हो, मैं पिये हुए हूँ।···बाप की कसम मुझे तुम्हारी क्या जरूरत है? क्या देखते हो, मैं हूँ वह···कसम से याद नहीं रहता —हाँ, मलका विक्टोरिया की अव्वल नम्बर सफरमैना पल्टन का आला सिपाही। मैंने मुल्क और कौम और नेता की खिदमत की है। तसदीक यह···। पर मैं हूँ कौन? तुम समझते हो मैं बहादुर हूँ। नहीं, बहादुर एकदम नहीं। मैं पोच, निकम्मा, बेकार आदमी हूँ। आवारा हूँ जिसका ठौर न ठिकाना। मैंने कसम खाई थी कि नहीं पिऊँगा। पर तमाकू का धूँआ सिर में चढ़ा और महक···अजी, छोड़ो, हटाओ। तुम क्या सोचते हो जी? मैं तुमसे डरता हूँ? मैं किसी से नहीं डरता। शराब पी? हाँ, पी। और पिऊँगा। महीने-भर लगातार पिऊँगा। कस के पिऊँगा। उधार पिऊँगा, कपड़े बेच के पिऊँगा! टाँगों पे धोती है तब तक पिऊँगा। मैं किससे डरता हूँ? पल्टन में मुझे कोड़े लगे कि शराब छोड़ो। हर बार कहते, बोलो, अब छोड़ोगे? मैं कहता, नहीं। क्या उन्होंने करके नहीं देखा। पर मैं उनसे डरूँ क्यों? यह मैं हूँ। जैसा हूँ, भगवान् का बनाया हूँ। कसम मैंने शराब छोड़ दी थी। और पी भी नहीं। पर अब पी है तो फिर पिऊँगा। मैं किसी बशर से नही डरता। क्योंकि मैं झूठ कभी नहीं बोलता। अब जैसे···पर उनकी कौन सुनता है। उन जैसे कितने डोलते हैं। लेकिन मैं मैं हूँ। एक बाम्हन कहता था कि पाप में डींग की हाँकी जाती है। जो डींग मारता है, वह आदमियों से डरता है। और जो आदमियों से डरता है, नरक के दूत गरदनिया दे के उसे पकड़ ले जाते हैं! पर मैं आदमियों से नहीं डरता! अपने को क्या फिकर है? नरक के दूत की ऐसी-तैसी। वह नहीं, उसका बाप आजाय, मेरा क्या बिगाड़ सकता है? लो, मेरी जूती डरे शैतान से।

चन्दन—यह ठीक। मैं क्या करने चला था? (रस्सी नीचे डाल देता है।)

मंगल—क्या ?

चन्दन—(उठता है ।) तुमने कहा कि आदमियों का डर नहीं करना चाहिए।

मंगल—नहीं तो क्या ? आदमी सालों से क्या डरना ! नदी-न्हान पे बिन-कपड़े उन्हें देखो, सब एक मिट्टी के बने हैं । किसी का पेट छोटा, किसी का बड़ा । बस यह फर्क है । आदमी का डर क्या ? भाड़ में पड़ें जो अकड़ में रहते हैं ।

कुसलो—(आँगन में से) अरे, आ रहे हो ?

चन्दन—अच्छा तो यही सही । आता हूँ । (आँगन की तरफ बढ़ जाता है ।)

दृश्य २

[मकान का भीतरी भाग । कमरा लोगों से भरा है । कुछ मेज के चारों तरफ बैठे हैं, बाकी खड़े हैं । सामने की तरफ दुल्हन, और दूल्हा हैं । मेहमानों में रजनी, उसका पति, पुलिस अफसर, कोचवान, पुरोहित, पटवारी आदि हैं । औरतें गा रही हैं । सोना जाम भर-भरकर दे रही है । गाना रुक जाता है ।]

कोचवान—अगर जाना है तो हमें चलना चाहिए ।

पटवारी—अच्छा, पर लड़की का बाप आकर विदा तो कराए । गया कहाँ है ?

सोना—वह आते हैं । आ ही रहे हैं । इतने आप एक-एक गिलास तो और लें । नहीं, इन्कार नहीं ।

पुरोहित—इतनी देर से वह हैं कहाँ ? कब से उन्हीं का इन्तजार है ।

सोना—आ रहे हैं । अभी आये जाते हैं । मिनट भी न होगी । आप का प्याला खतम होगा कि वह आ जायँगे । लीजिए, लीजिए, (देती है) अभी आये जाते हैं । 'इतने तुम गाना जारी रक्खो, बहनो !

कोचवान—सारे गीत हो गए उनके। अब तो समधी को बुलाओ। (औरतें गाना शुरू करती हैं। गाने के बीच में चन्दन और रिसाल आते हैं।)

चन्दन—(अपने बाप की बाँह पकड़े हुए है, और उसे आगे करके खुद पीछे होता है) चलो, पिता, चलो। तुम्हारे बिना मुझसे न होगा।

रिसाल—मुझे, क्या नाम, नहीं पसन्द वह····क्या नाम···

चन्दन—(औरतों से) बस हुआ। अब खामोश हो जाओ। (कमरे में निगाह घुमाकर देखता है) रजनी, तुम मौजूद हो ?

पुरोहित—लो, चावल-रोली लो। आसीस पूरी करो।

चन्दन—ठहरो, (निगाह घुमाकर फिर देखता है) मेमा, तुम भी हो न।

पुरोहित—यह सब के नाम क्या बुला रहे हो ? दुलहिन न होगी तो कौन होगा ? क्या अजब ढंग है !

सोना—राम, राम, इनका तो सिर भी नंगा है।

चन्दन—पिता, तुम भी यहाँ हो ? अब मेरे धरम के भाइयो, आप मुझे देखें। आप सब यहाँ हैं। मैं भी हूँ। मैं (घुटनों गिरता है।)

सोना—चन्दन, ओ चन्दन ! यह तुम्हें हो क्या गया है ? ओह, मेरा सिर, मेरा सिर।

पुरोहित—यह अच्छा तमाशा है।

कुसलो—मैं कहती न थी कि शराब जरा ज्यादे हो गई है। होश सम्भालो, चन्दन। कर क्या रहे हो ? (उसे उठाने की कोशिश करते हैं। पर वह किसी की सुध नहीं करता और सब को टक बाँध देखता रहता है।)

चन्दन—मेरे धर्मी भाइयो, मैंने पाप किये हैं और मैं दिल की सफाई

करना चाहता हूँ।

कुसलो—(**उसे कन्धों से झकझोरती है**) पागल तो नहीं हो गए हो? भाइयो, इसका दिमाग खराब हो गया है। इसे यहाँ से ले जाना चाहिए।

चन्दन—(**उसे परे हटाकर**) हटो, मुझे छोड़ो। और मेरे पिता, सुनो, और रजनी, तुम भी सुनो, (**रजनी के आगे धरती तक झुककर नमस्कार करता और फिर उठता है**) मैं तुम्हारा कसूरवार हूँ। मैंने तुम्हें ब्याह का वचन दिया, तुम्हें बहकाया, इज्जत ली, और फिर दगा दे के छोड़ दिया। भगवान् के नाम पर मुझे माफ करना, रजनी। (**फिर उसके आगे धरती पर माथा टेकता है।**)

सोना—पर आखिर क्या पागलपन कर रहे हो? भला कुछ ठीक लगता है! कौन तुमसे पूछ रहा है? उठो, खड़े हो। यह—यह तुम्हारी बेअदबी नहीं है तो क्या है!

कुसलो—ओह, उसके सिर कोई प्रेत चढ़ गया है। किसी ने टोटका किया है। उठो, क्या बके जा रहे हो? (**उसे पकड़ के खींचती है।**)

चन्दन—(**सिर हिलाकर**) मुझे न छेड़ो। रजनी, तुम्हारी तरफ जो मैंने पाप किया, उसे माफ करना। भगवान् के नाम पर माफ कर देना, रजनी! (**रजनी चेहरे को अपने हाथों से ढँक लेती है, और चुप रहती है।**)

सोना—उठो, मैं कहती हूँ। बेहूदगी न करो। यह हो क्या रहा है? बीती बातें पूछ कौन रहा है? बस हुआ तमाशा। शरम करो। ओ, मेरा सिर!—यह क्या इनपे सनक सवार हुई है?

चन्दन—(**अपनी स्त्री को हाथ से अलग करता और मेमा की तरफ मुड़ता है**) मेमा, अब तुम सुनो! मेरे धरमी भाइयो, आप सब लोग भी सुनो। मेमा, मैं अधम, पापी, राक्षस हूँ। मैंने तुम्हारी तरफ पाप

किया है। तुम्हारे बाप अपने-आप नहीं मरे। जहर देकर मारे गये।

सोना—(चीखती है) ओह मेरा माथा, मेरा सिर! यह हो क्या रहा है?

कुसलो—इस आदमी का सिर फिर गया है। उसे बाहर ले जाओ (लोग आते और उसे पकड़ ले जाना चाहते हैं।)

रिसाल—(अपनी बाँहों से उन्हें अलग रहने को कहता है) ठहरो, जवानो, क्या नाम, ठहरो—

चन्दन—मेमा जहर मैंने दिया। भगवान् के नाम पर मुझे माफ करो।

मेमा—(उछल कर पड़ती है) यह झूठ है, साफ झूठ। मैं जानती हूँ, किसने जहर दिया।

पुरोहित—यह तुम क्या कहती हो! चुप सीधे होकर बैठो।

रिसाल—ओ भगवान्, कैसे पाप, घोर पाप!

पुलिस अफसर—इसे गिरफ्तार कर लो। और मजिस्ट्रेट को बुलाओ। हमें रिपोर्ट लिखनी होगी। और गवाह चाहिएँगे। सुना? खड़े हो, इधर चलो।

रिसाल—(पुलिस अफसर से) अजी, क्या नाम, ओ चमकीले बटन! हाँ, आप क्या नाम, ठहरो, जरा ठहरो। क्या नाम, उसे बोलने दो।

पुसिल अफसर—सुनो बूढ़े, बीच में दखल नहीं देते। कानूनन मुझे रिपोर्ट तैयार करनी होगी।

रिसाल—जाने, क्या नाम, कैसे आदमी हो जी तुम। कहता हूँ, ठहरो, बोलो मत। क्या नाम, रपट-वपट कर रहे हो? भगवान् की मरजी में विघन····आदमी क्या नाम, भगवान् के आगे गुनाह कबूल कर रहा है, और तुम क्या नाम, रपट कानून करे जाते हो!

पुलिस अफसर—मैजिस्ट्रेट को बुलाओ।

रिसाल—पहले भगवान् का काम, फिर, क्या नाम, तुम्हारा मजिस्ट्रेट और रपट।

चन्दन—और मेमा, तुम्हारा मैं भारी गुनाहगार हूँ। तुम्हें फुसलाया, छला। ईश्वर के नाम पर मुझे माफ कर देना। (**उसके आगे धरती पर माथा टेकता है।**)

मेमा—(**मेज से उठकर जाती है**) मुझे जाने दो। मैं ब्याह नहीं करूँगी। इन्होंने ब्याह को कहा था। पर अब नहीं करूँगी।

पुलिस अफसर—अभी कहा, वह फिर तो कहो।

चन्दन—टहरें हजूर, मुझे खतम कर लेने दें।

रिसाल—(**बेहद खुशी से**) कहो, मेरे बेटे, सब कह डालो। चित्त निर्मल होगा। भगवन् के आगे, क्या नाम, सब खोल दो। आदमी को न डरो। एक भगवान् ही है। वही है। वही सब है।

चन्दन—मुझ नरक के कीड़े ने बाप को जहर दिया, और बेटी का-का धरम लिया। वह मेरे कबजे मे थी, सो मैंने उसे बिगाड़ के बरबाद कर दिया। और उसका बच्चा—

मेमा—बच्चा! हाँ सच है।

चन्दन—बच्चे को मैंने कोठरी में डाल, ऊपर तख्ता रख उसपे बैठ के उसे कुचल दिया। अपने नीचे बच्चे की हड्डियाँ कर्रर्र-कर्र्र् करके टूटतीं मैंने सुनी (**रो आता है**) फिर मैंने उसे गड्ढे में गाड़ दिया। एक अकेले मैंने ही यह सब किया।

मेमा—झूठी बात है, मैंने कहा था।

चन्दन—मुझे बचाने की न सोचो, मेमा। अब मुझे किसी का डर नहीं है। ए मेरे सज्जन भाइयो, आप सब लोग मुझे माफ करना। (**सबके आगे धरती पर माथा टेकता है। कुछ देर शान्ति रहती है।**)

पुलिस अफसर—उसे बाँध लो। शादी अब खत्म है।

[लोग जो जिसे मिला लेकर उसे बाँधने बढ़ते हैं।]

चन्दन—ठहरो भाइयो, वक्त बहुत है। (अपने पिता के आगे जमीन पर माथा झुकाता है) पिता, ओ पिता, मुझ कुकर्मी, पापी बेटे को माफ करो। मैं बदी की राह पड़ा, तभी तुमने मुझे कहा था! कहा था कि वह फिसलन है। और एक पर फसा नहीं कि फिर परिन्दे की जान की खैर नहीं है। पर तब मैंने कुछ नहीं सुना। कुत्ते की तरह लत से बाज न आया। अब तुम्हारा कहा सामने आ गया है। भगवान् के नाम पे, पिता मुझे माफ करना।

रिसाल—(हर्षातिरेक) भगवान् तुम्हें माफ करेगा, मेरे बहादुर बेटे, (उसे आलिंगन में लेता है) तुमने अपने पे दया नहीं की सो ईश्वर तुम पर दया करेगा। ईश्वर, क्या नाम, एक वही। सब वही है।

(मजिस्ट्रेट आता है)

मजिस्ट्रेट—गवाह तो यहाँ काफी हैं।

पुलिस अफसर—मुजरिम का बयान फौरन ही ले लिया जाय।

(चन्दन बाँध लिया जाता है)

मेमा—(जाती और चन्दन की बगलमें लग कर खड़ी हो जाती है) मैं सब सच कहूँगी। मुझसे पूछो, मुझसे।

चन्दन—(बँधे-बँधे) पूछने को कुछ नहीं है। सब-कुछ मैंने किया। इरादा मेरा था, काम भी मेरा है। सब जुर्म मेरा है। पूरा मुजरिम मैं हूँ। अब जो मेरा करो, जहाँ मुझे ले जाओ, सब ठीक है। और मुझे नहीं कहना।